पद्यानुवाद पंजाब सरकार द्वारा पुरस्कृत

जपुजी तथा सुखमनी साहब
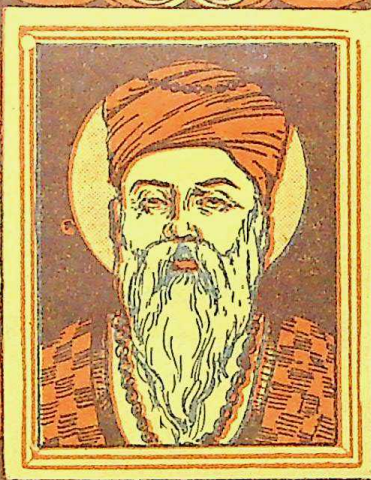
उर्दू-नज़्मकार

ख़ानबहादुर ख़्वाजः दिलमुहम्मद एम० ए०

सब-रजिस्ट्रार एवं रिटायर्ड प्रिंसिपल, इस्लामिया कालेज, लाहौर

(गीता के सफल उर्दूपद्यानुवादक)

लिप्यन्तरणकार

नन्दकुमार अवस्थी

प्रकाशक

भुवन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ—२२६००३

द्वितीय संस्करण १९८० ई०

मूल्य १०.०० मात्र

मुद्रक :—

वाणी प्रेस,

भुवन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ—२२६००३

विषय-सूची

निवेदन

प्रत्येक क्षेत्र प्रत्येक सन्त की बानी ।

सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी ।।

हिन्दी, उर्दू (अरबी-फ़ारसी सहित), संस्कृत, बँगला, असमी, ओड़िआ, कश्मीरी, मराठी, गुरुमुखी, गुजराती, तमिळ, तॅलुगु, कन्नड, मलयाळम, सिन्धी, नेपाली, राजस्थानी आदि भाषाओं तथा अनेक बोलियों के सत्साहित्य को, देवनागरी लिपि में धारावाहिक सानुवाद लिप्यन्तरण द्वारा, भारत के जन-जन तक पहुँचाना, अधिकाधिक भाषाओं का शिक्षण, प्रसारण और ज्ञान प्राप्त कराते हुए इनको एक सूत्र में पिरोहना —यही 'भुवन वाणी ट्रस्ट' संस्था का पावन उद्देश्य है। इससे न केवल हिन्दी-अहिन्दी, प्रत्युत प्रत्येक भाषा का प्रचार-प्रसार राष्ट्र के कोने-कोने में व्याप्त होगा।

इसी कार्यक्रम के अधीन, गुरुमुखी में नित्य पठनीय, श्री गुरु नानकदेव महाराज की अमर वाणी "श्री जपुजी" तथा श्री गुरु अर्जुनदेव महाराज की भक्ति और ज्ञान से ओत-प्रोत अद्वितीय रचना "सुखमनी साहिब" का देवनागरी लिपि में लिप्यन्तरण मर्मज्ञ पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है। गुरुमुखी मूल पाठ को हिन्दी अक्षरों में देते हुए श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के सफल उर्दू पद्यानुवादक खानबहादुर ख्वाज: दिलमुहम्मद साहब, एम० ए०, सब रजिस्ट्रार लाहौर, फ़ेलो पंजाब यूनीवर्सिटी, ट्रस्टी लाहौर इ० ट्रस्ट तथा रिटायर्ड प्रिंसिपल, इस्लामिया कालेज, लाहौर द्वारा रचित प्रमाणिक और सुमधुर उर्दू काव्य को भी हिन्दी में लिप्यन्तरित किया गया है। अंग्रेज़ी शासनकाल में पंजाब सरकार ने इन उर्दू अनुवादों को सम्मानित और पुरस्कृत किया था। पंजाब में जनता मुग्ध होकर ख्वाज: साहब के इस अनुवाद का नित्य झूम-झूमकर पाठ करती है। आज वह अमर वाणी देवनागरी लिपि के माध्यम से सारे राष्ट्र के समक्ष प्रस्तुत हो रही है। इन अमूल्य जप-स्तोत्रों के सम्बन्ध में ख्वाज: साहब की लेखनी से ही प्रवाहित पावन विचारधारा का आनन्द लीजिए:—

जपुजी

"जपुजी वह मुक़द्दस[1] इर्फ़ानी[2] और रूहानी[3] पाक कलाम है, जिसे लाखों इंसान सुबह के सुहाने वक़्त में अपने खालिक़[4] के हुज़ूर में तवज्जुह[5] और शौक़ से पढ़ते हैं और उसके सामने अपने अज्ज़[6] का इज़हार करके अब्द[7] और माबूद[8] का रिश्तः उस्तुवार[9] करते हैं। यह मुनाजात[10] पंजाब के मुस्लेह आज़म[11] खुदारसीदा[12] बुज़र्ग बाबा गुरु नानक साहब की मुबारक ज़बान से निकली है। उनके अक़ीदतमन्द[13] इस मुक़द्दस[1] नज़्म के एक-एक लफ़्ज़ को हिर्ज़ेजा[14] समझते हैं और उस दुआए सहरी[15] दुरूद[16] को हर दो जहान में अपने लिए मूजिब नजात[7] मानते हैं।"

"मैंने इस पाक कलाम को आसान ज़बान और मुतरन्निम-बहर[18] में नज़्म करके असल और तर्जुमा साथ-साथ दर्ज कर दिये हैं, ताकि पढ़ते वक़्त सुहूलियत हो और मतलब फ़ौरन ज़ेह्न-नशीन[19] हो जाये। ग़रज़ यह है कि इस मुक़द्दस नज़्म और प्यारे कलाम को सिख साहबान के अलावः दीगर उर्दू-दाँ हज़रात हिन्दू-मुस्लिम-ईसाई वग़ैर. भी पढ़ें, और इससे मुस्तफ़ीद[20] हों। इंसान का सबसे पहला फ़र्ज़ खुदाए तआला को सच्चा यानी अज़ली[21] अबदी[22] हस्ती बरहक़[23] मानना, उसको माबूद और खुद को उसका बन्दा समझना है। बाबा गुरु नानकजी के इर्शादात[24] का तर्जुमः मुलाहज़ः हो।"

सुखमनी साहिब

"सुखमनी साहिब वह मुक़द्दस[1] नज़्म है, जिसे सिख मत के पाँचवें रहनुमा[25] श्री गुरु अर्जुनदेव साहब ने तस्नीफ़ किया। यह नज़्म श्री गुरूग्रन्थ साहिब में शामिल है। गुरु अर्जुनदेव सन् १५६३ ई० में पैदा हुए और सन् १६०६ ई० में वासिल-बहक़[26] हुए। यह नज़्म एक खामोश जंगल

---

१ पवित्र २ ब्रह्मज्ञान-सम्बन्धी ३ आत्मिक ४ सिरजनहार ५ ध्यान, लगन ६ नम्रता ७ भक्त ८ भजनीय (परमात्मा) ९ दृढ़,स्थायी १० स्तोत्र ११ सुधारकों में शिरोमणि १२ ईश्वरप्राप्त १३ अनुयायी १४ जीवनकवच १५ भजनप्रभाती १६ ईश्वर-प्रार्थना १७ मुक्तिद्वार १८ संगीतलहरी १९ याद, स्मरण २० लाभान्वित २१ अनादि २२ नित्य २३ वास्तविक, सत्यस्वरूप २४ आदेशों २५ पथप्रदर्शक २६ ब्रह्मलीन।

में 'रामसर' तालाब के पास लिखी। यह तालाब अमृसर के जुनूब[१] में वाक़िअ् है। हज़ारों सिख और ग़ैरसिख साहबान इस मुक़द्दस नज़्म को सुबह के वक़्त तिलावत (पाठ) करके अपनी लगन ख़ुदा से लगाकर दिल का सुख और रूह का आनन्द हासिल करते हैं।"

"सुखमनी साहिब के अल्फ़ाज़ एक ऐसे आरिफ़-हक़ीक़ी[२] के जज़्बात[३] का मरक़्क़अ[४] हैं, जिसे हर तरफ़ ख़ुदा ही की ज़ात और उसी का जमाल[५] और जलाल[६] नज़र आता है। यह ऐसे दिल की आवाज़ है, जो भक्ति और ज्ञान से भरपूर, प्रेम और मुहब्बत में सरशार,[७] अपने मालिक अपने महबूब[८] की याद में सरमस्त[९] है, और जिसे ख़ुदा के सिवा कोई और लगन नहीं।"

"सुखमनी साहिब वह मन (मणि) यानी हीरा है, जिसकी बरक़त से सुख हासिल होता है। यह वह नज़्म है, जो मन को सुख देती है। इसको पढ़ने से इंसान ख़ुदा से लौ लगाता और दुनिया के मक्र व फ़रेब और फ़िक्र व तरद्दुद से नजात हासिल करता है।"

"तर्जुमा आसान उर्दू यानी हिन्दुस्तानी ज़बान में नज़्म किया गया है। ताकि तमाम ख़ुदापरस्त हिन्दुस्तान के बाशिन्दे ख्वाह वह किसी मज़हब के पैरो हों, इसका मफ़हूम[१०] समझकर इसकी तिलावत (पाठ) कर सकें।"

एक मुस्लिम मोमिन, एक सचमुच धर्मपरायण विद्वान् की लेखनी से "श्री जपुजी" और "सुखमनी साहिब" के सम्बन्ध में उपर्युक्त इस महिमा-गान के बाद अब पाठकों को कुछ लिखने-बताने के लिए शेष नहीं रहता। आशा है, मनुष्य-रचित इन साम्प्रदायिक दीवारों को लाँघकर राष्ट्र के सभी भाषाभाषी जन गुरु नानकदेव जैसे महान् पथप्रदर्शक के पुण्य-कथनों को पढ़कर जीवन-पथ सफल करेंगे।

—लिप्यन्तरणकार

---

१ दक्षिण २ ब्रह्मवेत्ता ३ भावनाओं ४ संग्रह ५ छबि, सौन्दर्य ६ तेज ७ परिपूर्ण ८ प्रियतम (परमात्मा) ९ मगन, विभोर १० आशय।

जपुजी (सटीक)

(ख़्वाजा दिल मुहम्मद द्वारा मधुर अनुवाद सहित)

मंगलाचरण

मंत्र

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

१ एक ओंकार[1] ख़ुदा है वाहिद, सच्चा जिसका नाम ।
कर्ता-धर्ता दुनिया का, बेडर बे-लाग मुदाम[2] ॥
मौत से बाला, पाक जनम से, क़ायम अपने आप ।
अपने गुरु की रहमत से, तू नाम उसी का जाप ॥

जपु

आदि सचु जुगादि सचु ।
है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥ १ ॥

सच्चा रोज़ अज़ल[3] से पहले, सच्चा रोज़ अज़ल भी वह ।
सच्चा है वह आज भी 'नानक', सच्चा होगा कल भी वह ॥

पौड़ी १

सोचै सोचि न होवई जे सोची लखवार ।
चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिवतार ।
भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ।

---

१ (सत्यस्वरूप एक ओंकार अनादि, अनन्त और भूत-भविष्य-वर्तमान, हमेशा स्थित है) २ हमेशा ३ रचनाकाल ।

सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ।
किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ।
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ।। १ ।।

सोच किए कब सोच में आए सोच जो लाखों बार करें
चुप रहने से मन कब चुप हो चुपके ध्यान हज़ार करें
भूखे रहकर भूख न जाए बाँध के गो, कुल दुनिया लाएँ
लाख-हज़ार करें चतुराई एक भी साथ न लेकर जाएँ
झूठ का पर्दा चाक हो क्योंकर सच वाले बन जाएँ हम
हुक्म रज़ा[1] पर चलना 'नानक' साथ यह लिक्खा लाएँ हम ।।१।।

पौड़ी २

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ।
हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ।
हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ।
इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ।
हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ।
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ।। २ ।।

हुक्म से बन-बन जाएँ शकलें हुक्म के भेद न खोले जाएँ
हुक्म से तन में रूहें आएँ हुक्म से शान बड़ाई पाएँ
हुक्म से इज़्ज़त हुक्म से दौलत हुक्म का लिक्खा सुख-दुख पाएँ
हुक्म से इक पर बख्शिश हो इक हुक्म से चक्कर खाते जाएँ
हुक्म खुदा में दुनिया सारी हुक्म से बाहर कोई न जाए
हुक्म खुदा जो समझे 'नानक' अपनी "हूँ, मैं"[2] आप मिटाए ।।२।।

पौड़ी ३

गावै को ताणु होवै किसै ताणु । गावै को दाति जाणै नीसाणु ।।
गावै को गुण वडिआईआ चार । गावै को विदिआ विखमु वीचारु ।।
गावै को साजि करे तनु खेह । गावै को जीअ लै फिरि देह ।।
गावै को जापै दिसै दूरि । गावै को वेखै हादरा हदूरि ।।

---

१ परमेश्वर की प्रसन्नता २ अहंकार भाव ।

कथना कथी न आवै तोटि । कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ।।
देदा दे लैदे थकि पाहि । जुगा जुगंतरि खाही खाहि ।।
हुकमी हुकमु चलाए राहु । नानक विगसै बेपरवाहु ।।३।।

गाए कौन ख़ुदा की क़ुदरत ताब ये किस इंसान में है
गाए कौन ख़ुदा की रहमत माहिर कौन निशान[1] में है
गाए कौन ख़ुदा की अज़मत[2] आलीशान वक़ार[3] उसका
गाए कौन ख़ुदा की हिकमत मुश्किल सोच-विचार उसका
गाए कौन उसे जो तन को ज़ीनत[4] देकर ख़ाक बनाए
गाए कौन उसे जो पैदा करके मारे और जिलाए
गाए कौन उसे जो हमसे पास भी है और दूर भी है
गाए कौन उसे जो हाज़िर[5] नाज़िर[6] पाक हुज़ूर भी है
ख़त्म न होंगी उसकी बातें सारा हाल बयान न हो
वस्फ़[7] करोड़ों गायें करोड़ों पूरी लेकिन शान न हो
लेने वाले थक जाते हैं दाता देता जाता है
जुग जुग में हर खानेवाला उसकी निअ़मत खाता है
हुक्म से अपने हाकिम ने दुनिया को राह दिखाई है
ख़ुद आनन्द रहे वह 'नानक' कैसी बेपरवाई है ।।३।।

पौड़ी ४

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ।
आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ।
फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ।
मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ।
अंम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ।
करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ।
नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ।। ४ ।।

सच्चा है वह मालिक सच्चा सच्चा प्यारा नाम उसका
बेहद उल्फ़त बोली उसकी बेहद प्रेम कलाम उसका

---

१ चिह्न २ महिमा, बुज़ुर्गी ३ प्रतिष्ठा ४ शोभा, रौनक़ ५ सब जगह मौजूद ६ सर्वद्रष्टा ७ गुण, सिफ़त ।

दुनिया माँगे दाता बख़्शे　　जो माँगे हर बार मिले
पेश करें दरबार में क्या, तोहफ़ा　　जिससे दीदार[1] मिले
मुँह से बात कहे क्या बन्दा　　जिससे मालिक प्यार करे
नूर के तड़के सच्चे नाम और　　शान पे सोच विचार करे
खिलअत पायें कर्मों से[2]　　रहमत से मुक्ती द्वार आएँ[3]
सब कुछ आप वह सच्चा रब है　　'नानक' मन में ऐसा पाएँ ।।४।।

पौड़ी ५

थापिआ न जाइ कीता न होइ ।
आपे आपि निरंजनु सोइ ।
जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ।
नानक गावीऐ गुणी निधानु ।
गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ।
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ।
गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ।
गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ।
जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ।
गुरा इक देहि बुझाई ।
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ।। ५ ।।

कौन करे बुत क़ायम[4] उसका　　कौन बनाने वाला है
आप से आप निरंजन[5] है वह　　इस माया से बाला है
जो पूजे हो मान* उसी का　　पूजा मान का ज़ीना है
हम्द[6] कर उसकी 'नानक' जो　　सब वस्फ़ों का गंजीना[7] है
हम्द भी कर तू हम्द भी सुन　　जब मन में प्रेम बसाएगा
सब तेरे दुख दूर हटाकर　　सुख के घर ले जाएगा

---

१ दर्शन　२ कर्मों से मनुष्य-शरीर मिलता है　३ ईश्वर-कृपा से मुक्ति प्राप्त होती है　४ स्थापना करे　५ निर्विकार, निर्मल　६ स्तुति　७ गुणों का ख़ज़ाना ।

* जिसने सेवा की उसी को उस ब्रह्म का 'मान', उसकी पहचान होती है । 'मान' के अर्थ 'इज़्ज़त' भी हैं ।

गुरु की बातें नाव समझ ले — गुरु की बातें वेद समझ
गुरुमुख में वह आप समाया — गुरुमुख का यह भेद समझ
ईश्वर - विष्णू - ब्रह्मा तीनों§ — मज़हर[1] गुरु की क़ुदरत के
सरस्वती-लक्ष्मी-पार्वती सब — नाम हैं गुरु की क़ूवत[2] के
जानूँ भी गर उसकी बातें — क्योंकर खोल सुनाऊँ मैं
क्योंकर बात सुनाऊँ उसकी — लफ़्ज़ कहाँ से लाऊँ मैं
ऐ गुरु मुझको ज्ञान अता कर — एक अहद[3] को पाऊँ मैं
सब दुनिया का एक ही दाता — उसको भूल न जाऊँ मैं ।।५।।

पौड़ी ६

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ।
जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ।
मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ।
गुरा इक देहि बुझाई ।
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ।। ६ ।।

तीरथ का स्नान यही है — अपने रब को भाऊँ मैं
रब को आप न भाऊँ मैं — तो तीरथ ख़ाक नहाऊँ मैं
जो जो मख़लूक़ात[4] हुई — सब मैंने देखी भाली है
अच्छे करम न हों जब पल्ले — हाथ जज़ा[5] से ख़ाली है
हीरे लाल जवाहर सब — दानिश[6] में अपनी पाये तू
गुरु की एक हिदायत सुनकर — काम में जब ले आये तू*
ऐ गुरु मुझको ज्ञान अता कर — एक अहद को पाऊँ मैं
सब दुनिया का एक ही दाता — उसको भूल न जाऊँ मैं ।।६।।

पौड़ी ७

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ।
नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ।
चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ।

---

१ द्योतक २ शक्तियों के ३ एकमेव ईश्वर ४ सृष्टि ५ पुण्यफल ६ बुद्धि ।

§ यहाँ ईश्वर से मतलब 'शंकर' है । गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवोमहेश्वरः ।

* बुद्धि से संसारी पदार्थ मिलते हैं, किन्तु गुरु के पथ-प्रदर्शन से ज्ञान जागता है; और तभी सब पदार्थों का मिलना सार्थक होता है ।

जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ।
कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ।
नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ।
तेहा कोइ न सुझई जि.तिसु गुणु कोइ करे ।। ७ ।।

चार जुगों के अरसे जितनी　　उम्र जो पाये दुनिया में
उससे भी वह चन्द[1] अगर जो　　जीता जाये दुनिया में
हरसू नौ अक़लीमों[2] पर　　दुनिया में उसका नाम चले
आप चले तू अर्दल[3] में　　साथ उसके खल्क़[4] तमाम चले
उसका नाम भी ऊँचा हो　　और शोहरत भी हरजाई[5] हो
नामवरी के साथ ही उसने　　शोभा सब में पाई हो
जिस पर रब की मेहर न हो　　जो चश्म करम से दूर रहे
बात न उसकी पूछे कोई　　राँद:[6] हो मक़हूर[7] रहे
कीड़ों में इक कीड़े जैसा　　उसको लोग बनायेंगे
जो खुद पापी दोषी हैं　　वह उसपर दोष लगायेंगे
'नानक' वह रब ऐसा है　　जो निर्गुण[8] को गुण देता है
गुणवाला इंसान हमेशा　　उससे सब गुण लेता है
कोई न सूझे ऐसा　　पूरे जो उसके इहसान करे
कोई न सूझे ऐसा　　जो उस दाता को गुणवान करे ।।७।।

पौड़ी ८

सुणिऐ सिध पीर सुरिनाथ । सुणिऐ धरति धवल आकास ।।
सुणिऐ दीप लोअ पाताल । सुणिऐ पोहि न सकै कालु ।।
नानक भगता सदा विगासु । सुणिऐ दूख पाप का नासु ।।८।।

नाम सुने से सिद्धों　　पीरों सुरनाथों की शान मिले
नाम सुने से धरती　　धूल अकाश की भी पहचान मिले
नाम सुने से जानें ख़ित्तों[9]　　दुनियाओं पातालों को
नाम सुने से दूर करें हम　　मौत के सब जंजालों को
'नानक' भक्ती वाले दायम[10]　　खुशियाँ खूब मनाते हैं
नाम प्रभू का सुनने से　　दुख पाप सभी कट जाते हैं ।।८।।

---

१ श्रेष्ठ　२ भूखण्डों　३ अधीन　४ सृष्टि　५ चौतरफ़ः　६ त्यागा हुआ　७ प्रकोप में पड़ा　८ गुणहीनों को　९ प्रदेशों　१० चिरस्थायी, सर्वकालिक ।

पौड़ी ९

सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु । सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ।।
सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद । सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद ।।
नानक भगता सदा विगासु । सुणिऐ दूख पाप का नासु ।।९।।

नाम सुने से ईश्वर ब्रह्मा इन्दर जैसा रुतबा पायें
नाम सुने से नीच कमीने सब में ख़ूब सराहे जायें[1]
नाम सुने से रस्ता पाएँ योग और तन के भेदों का
राज़ खुले सब स्मृतियों का शास्तरों का वेदों का
'नानक' भक्ती वाले दायम ख़ुशियाँ ख़ूब मनाते हैं
नाम प्रभू का सुनने से दुख पाप सभी कट जाते हैं ।।९।।

पौड़ी १०

सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु । सुणिऐ अठसठि का इसनानु ।।
सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु । सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ।।
नानक भगता सदा विगासु । सुणिऐ दूख पाप का नासु ।।१०।।

नाम प्रभू का सुन-सुनकर सच पाएँ सब्र और ज्ञान मिले
नाम प्रभू का सुनकर अड़सठ तीरथ[2] का स्नान मिले
नाम प्रभू का पढ़ सुनकर इंसान की इज़्ज़त शान भी हो
नाम प्रभू का सुनकर हासिल आसानी से ध्यान भी हो
नानक भक्ती वाले दायम ख़ुशियाँ ख़ूब मनाते हैं
नाम प्रभू का सुनने से दुख पाप सभी कट जाते हैं ।।१०।।

पौड़ी ११

सुणिऐ सरा गुणा के गाह । सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ।।
सुणिऐ अंधे पावहि राहु । सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ।।
नानक भगता सदा विगासु । सुणिऐ दूख पाप का नासु ।।११।।

नाम को सुनकर नेकी के दरयाओं में पैदल राह मिले
नाम को सुनकर शेख़ बने और पीर बने और शाह बने

---

१ मंद अर्थात् गिरे हुए प्राणी भी नाम-श्रवण से प्रशंसा के पात्र बन जाते हैं
२ भारत में ६८ तीर्थ माने जाते हैं, उन सबके स्नान का फल केवल नाम-स्मरण से प्राप्त होता है ।

नाम प्रभू का सुनने से अन्धे को उसकी राह मिले
नाम प्रभू का सुनने से बेथाह की हमको थाह मिले[1]
'नानक' भक्ती वाले दायम ख़ुशियाँ ख़ूब मनाते हैं
नाम प्रभू का सुनने से दुख पाप सभी कट जाते हैं ।।११।।

पौड़ी १२

मंने की गति कही न जाइ । जे को कहै पिछै पछुताइ ।।
कागदि कलम न लिखणहारु । मंने का बहि करनि वीचारु ।।
ऐसा नामु निरंजनु होइ । जे को मंनि जाणै मनि कोइ ।।१२।।

मन से जो मानेगा रब को उसकी हालत कौन बताए
जो कहना भी चाहे उसको वह भी आख़िर को पछताए
कैसा काग़ज़ और क़लम से कौन-सा लिखने वाला है
मन से जो मानेगा रब को तारीफ़ों से बाला है
ऐसा नाम निरंजन का है कोई जो मन से जानेगा
कोई कोई जानेगा और कोई कोई मानेगा[2] ।।१२।।

पौड़ी १३

मंनै सुरति होवै मनि बुधि । मंनै सगल भवण की सुधि ।।
मंनै मुहि चोटा न खाइ । मंनै जम कै साथि न जाइ ।।
ऐसा नामु निरंजनु होइ । जे को मंनि जाणै मनि कोइ ।।१३।।

मन से जो मानेगा उसकी सोच समझ बेदार[3] रहे
मन से जो मानेगा[4] उस पर रौशन सब संसार रहे
मन से उसको जो माने वह मुँह पर चोट न खायेगा
मन से उसको जो मानेगा जम[5] के साथ न जायेगा
ऐसा नाम निरंजन का है कोइ जो मन से जानेगा
कोई कोई जानेगा और कोई कोई मानेगा ।।१३।।

---

१ संसार-सागर की थाह २ निरञ्जन अकालपुरुष की अपार महिमा का लिखना या बखान करना बन्दे के वश का नहीं । कोई ही भक्त ऐसा भाग्यवान् होता है जो मनन करता और उसे पहचान पाता है ३ जाग्रत ४ तन्मय होकर जो मानेगा ५ यमराज–मृत्यु से छुटकारा पायेगा ।

पौड़ी १४

मंनै मारगि ठाक न पाइ । मंनै पति सिउ परगटु जाइ ।।
मंनै मगु न चलै पंथु । मंनै धरम सेती सनबंधु ।।
ऐसा नामु निरंजनु होइ । जे को मंनि जाणै मनि कोइ ।।१४।।

मन से जो मानेगा उसके रस्ते में कुछ रोक न आए
मन से जो मानेगा ऊँची शान और इज़्ज़त लेकर जाए
मन से उसको जो मानेगा वह गुमराही से बचता जाए
मन से उसको जो मानेगा वह धर्म से पक्का नाता पाए
ऐसा नाम निरंजन का है कोई जो मन से जानेगा
कोई कोई जानेगा और कोई कोई मानेगा ।।१४।।

पौड़ी १५

मंनै पावहि मोखु दुआरु । मंनै परवारै साधारु ।।
मंनै तरै तारे गुरु सिख । मंनै नानक भवहि न भिख ।।
ऐसा नामु निरंजनु होइ । जे को मंनि जाणै मनि कोइ ।।१५।।

मन से जो मानेगा उस पर दर मुक्ती[1] के खुलते जाएँ
मन से जो मानेगा उसके बच्चे बाले मुक्ती पाएँ
माने से गुरु पार लगे सब चेलों को भी पार लगाए
मन से जो माने सो 'नानक' भीक[2] के चक्कर से बच जाए
ऐसा नाम निरंजन का है कोइ जो मन से जानेगा
कोई कोई जानेगा और कोई कोई मानेगा ।।१५।।

पौड़ी १६

पंच परवाण पंच परधानु । पंचे पावहि दरगहि मानु ।।
पंचे सोहहि दरि राजानु । पंचा का गुरु एकु धिआनु ।।
जे को कहै करै वीचारु । करते कै करणै नाही सुमारु ।।
धौलु धरमु दइआ का पूतु । संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति।।
जे को बुझै होवै सचिआरु । धवलै उपरि केता भारु ।।
धरती होरु परै होरु होरु । तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ।।
जीअ जाति रंगा के नाव । सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ।।

---

१ मुक्तिद्वार २ दुनिया की भीख से अर्थात् आवागमन से छूट जायगा ।

एहु लेखा लिखि जाणै कोइ । लेखा लिखिआ केता होइ ।।
केता ताणु सुआलिहु रूपु । केती दाति जाणै कौणु कूतु ।।
कीता पसाउ एको कवाउ । तिस ते होए लख दरीआउ ।।
कुदरति कवण कहा वीचारु । वारिआ न जावा एक वार ।।
जो तुधु भावै साई भली कार । तू सदा सलामति निरंकार ।।१६।।

जो मक़बूल ख़ुदा[1] के हैं	परवान भी हैं परधान भी हैं
जो मक़बूल ख़ुदा के हैं	दरगाह में पाते शान भी हैं
जो मक़बूल ख़ुदा के हैं	वह राजसभा की शान बढ़ाएँ*
जो मक़बूल ख़ुदा के हैं	इक गुरु पर अपना ध्यान जमाएँ
लाख कहे इंसान मगर	क़ुदरत की थाह न पायेगा
ख़ालिक़[2] की ख़िलक़त[3] का उसको	अंत शुमार न आयेगा
जिसके सींगों पर है धरती	धर्म-दया का पूत है यह§
सब्र से क़ायम रहती है	एक तौल है यह एक सूत[4] है यह
जो इस बात को समझा है	वह समझा है वह ज्ञानी है
बैल उठाए सींग पे इतना	बोझ अजब हैरानी है
दूर ज़मीं से और ज़मीनें	उनसे आगे और जहाँ[5]
उनके नीचे ज़ोर है किसका	क़ायम हैं किस तौर वहाँ
गूना-गूनी[6] खिलक़त सारी	रंगा-रंग इक़साम[7] सभी
लिक्खे लिखने वालों ने	बेरोक क़लम से नाम सभी
कौन भला लिख सकता है	यह गिनती हो मरक़ूम[8] कहाँ
इस गिनती की गिनती	गिनती वालों को मालूम कहाँ
कितनी तेरी ताक़त है	क्या सुन्दर रूप सुहाना है
कितनी दाद और रोज़ी बख़्शी	किसने उसको जाना है
हरफ़[9] कहा जब एक ही तूने	फैले आलम सारे हैं
हरफ़ कहा जब एक ही तूने	फूटे लाखों तारे हैं

---

१ परमेश्वर को प्रिय २ सिरजनहार ३ सृष्टि ४ व्यवस्था ५ लोक ६ भाँति-भाँति की ७ अलग-अलग ८ कहाँ लिखी जा सकती है ९ शब्द (शब्द से संसार उत्पन्न हुआ—शब्दप्रसवा सृष्टि) ।

* परमेश्वर का प्रिय बंदा ही सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक प्रतिष्ठा पायेगा ।

§ दया रूपी गाय का धर्म रूपी पुत्र बैल संतोष के बल पर संसार-चक्र को चला रहा है । श्री सत् अकाल (सत्यस्वरूप) की दया से उत्पन्न धर्म ने सृष्टि को परस्पर संतोष देकर चलाया । इसको समझकर सारे संसार को एक रूप समझने व व्यवहार करनेवाला ही ज्ञानी (आलिम) है ।

मुझमें कब यह क़ुदरत है मैं तेरा सोच विचार करूँ
मैं इस लायक़ कब हूँ तुझपर जान फ़िदा एक बार करूँ
कार वही अच्छा है जिनको समझे अच्छा कार तू ही
तेरी ज़ात सलामत दायम[1] पाक है निरंकार तू ही ॥१६॥

पौड़ी १७

असंख जप असंख भाउ। असंख पूजा असंख तप ताउ ॥
असंख गरंथ मुखि वेद पाठ। असंख जोग मनि रहहि उदास॥
असंख भगत गुण गिआन वीचार। असंख सती असंख दातार ॥
असंख सूर मुह भख सार। असंख मोनि लिव लाइ तार ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु। वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार। तू सदा सलामति निरंकार॥१७॥

संखों ही जप करते हैं और संखों इश्क़ मुहब्बत भी
संखों पूजा करते हैं और संखों लोग रिआज़त[2] भी
संखों लोग गिरंथों और वेदों का पाठ सुनाते हैं
संखों जिनके मन में उदासी बन में योग कमाते हैं
संखों ही गुन तेरे सोचें भक्त व ज्ञानी होते हैं
संखों सतगुन वाले हैं और संखों दानी होते हैं
संखों शेर बहादुर हैं तलवार जो मुँह पर खाते हैं
संखों गुप चुप रह-रह कर बस तुझ में ध्यान लगाते हैं
कब मुझमें यह क़ुदरत है मैं तेरा सोच विचार करूँ
मैं इस लायक़ कब हूँ तुझपर जान फ़िदा एक बार करूँ
कार वही अच्छा है जिसको समझे अच्छा कार तू ही
तेरी ज़ात सलामत दायम पाक है निरंकार तू ही ॥१७॥

पौड़ी १८

असंख मूरख अंध घोर।
असंख चोर हरामखोर।
असंख अमर करि जाहि जोर।
असंख गलवढ हतिआ कमाहि।
असंख पापी पापु करि जाहि।

---

१ सदैव रहनेवाला, स्थायी २ तपस्या।

असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ।
असंख मलेछ मलु भखि खाहि ।
असंख निंदक सिरि करहि भारु ।
नानकु नीचु कहै वीचारु ।
वारिआ न जावा एक वार ।
जो तुधु भावै साई भली कार ।
तू सदा सलामति निरंकार ।। १८ ।।

संखों मन के अंधे हैं और मूरख मन के ख़ाम बहुत
संखों चोरी करते हैं और खायें माल हराम बहुत
संखों जाबिर[1] ज़ोर के बल पर अपना हुक्म चलाते हैं
संखों गर्दन काटे मूज़ी ज़ालिम ख़ून बहाते हैं
संखों ऐसे पापी हैं जो पाप कमाते जाते हैं
संखों ऐसे झूठे हैं जो झूठी बात लगाते हैं
संखों हैं नापाक नजिस जो गंदी चीज़ें खाते हैं
संखों ग़ैबत[2] करते हैं गर्दन पर बोझ उठाते हैं§
'नानक', आजिज़ कहता है जितना भी सोच विचार करूँ
मैं इस लायक़ कब हूँ तुझ पर जान फ़िदा एक बार करूँ
कार वही अच्छा है जिसको समझे अच्छा कार तू ही
तेरी ज़ात सलामत दायम पाक है निरंकार तू ही ।।१८।।

पौड़ी १९

असंख नाव असंख थाव ।
अगंम अगंम असंख लोअ ।
असंख कहहि सिरि भारु होइ ।
अखरी नामु अखरी सालाह ।
अखरी गिआनु गीत गुण गाह ।

---

१ जबरन शासन करनेवाला २ परोक्ष-निन्दा ।

§ इस पौड़ी में उन बदनाम अपराधियों ही नहीं बल्कि संसार के नामवर सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक नेताओं या आडम्बरी सामान्यजनों की ओर भी इशारा है ।

अखरी लिखणु बोलणु बाणि ।
अखरा सिरि संजोगु वखाणि ।
जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ।
जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ।
जेता कीता तेता नाउ ।
विणु नावै नाही को थाउ ।
कुदरति कवण कहा वीचारु ।
वारिआ न जावा एक वार ।
जो तुधु भावै साई भली कार ।
तू सदा सलामति निरंकार ।। १९ ।।

संखों तेरे नाम भी हैं और संखों ही स्थान भी हैं
जिन तक जाना नामुमकिन है संखों और जहान भी हैं
संखों कहना यह भी अपने सरपर बोझ उठाना है
हरफ़ों से ही नाम बना हरफ़ों से हम्द[1] सुनाना है
हरफ़ों ही से ज्ञान बताएँ गीत गुनों के गाते हैं
हरफ़ों ही से बोल बने जो लिक्खे बोले जाते हैं
हरफ़ों ही से माथे पर संजोग ही पहले लिक्खा है
लेकिन लिखने वाले के माथे पर किसने लिक्खा है
वैसा वैसा मिलता है वह जैसा जैसा कहता है
मिलता है जो कहता है जो कहता है मिल रहता है
जितनी मख़लूक़ात[2] हुई ख़ालिक़[3] का उतना नाम हुआ
नाम जहाँ मौजूद नहीं वह बोलो कौन मुक़ाम हुआ
कौन सी मुझमें क़ुदरत है मैं तेरा सोच विचार करूँ
मैं इस लायक़ कब हूँ तुझ पर जान फ़िदा एक बार करूँ
कार वही अच्छा है जिसको समझे अच्छा कार तू ही
तेरी ज़ात सलामत दायम पाक है निरंकार तू ही ।।१९।।

पौड़ी २०

भरीऐ हथु पैरु तनु देह । पाणी धोतै उतरसु खेह ।।
मूत पलीती कपड़ु होइ । दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ।।

---

१ स्तुति २ सृष्टि ३ स्रष्टा ।

भरीऐ मति पापा कै संगि । ओहु धोपै नावै कै रंगि ।।
पुंनी पापी आखणु नाहि । करि करि करणा लिखि लै जाहु ।।
आपे बीजि आपे ही खाहु । नानक हुकमी आवहु जाहु ।।२०।।

हाथ भरें या पैर भरें या तन से चिमटे ख़ाक कभी
पानी से जब धो डालें हो ख़ाक से फ़ौरन साफ़ सभी
मैल नजासत[१] लगने से नापाक जो कपड़ा होता है
दूर पलीदी[१] हो जाये तू साबुन से जब धोता है
ऐसे ही जब मन हो मैला पाप की गन्दी बातों से
नाम ख़ुदा की उल्फ़त[२] से वह पाप सभी धुल जाएँगे
कहने से हो नेक कहाँ कहने से हो बदकार कहाँ
काम तू जो जो करता है सब जाए लिक्खा साथ वहाँ
आप ही बोये आप ही काटे बोता है सो खाता है
हुक्म प्रभू से आए 'नानक' हुक्म प्रभू से जाता है ।।२०।।

पौड़ी २१

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ।
जे को पावै तिल का मानु ।
सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ।
अंतरगति तीरथि मलि नाउ ।
सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ।
विणु गुण कीते भगति न होइ ।
सुअसति आथि बाणी बरमाउ ।
सति सुहाणु सदा मनि चाउ ।
कवणु सु वेला वखतु कवणु । कवण थिति कवणु वारु ।।
कवणि सि रुती माहु कवणु । जितु होआ आकारु ।।
वेल न पाईआ पंडती । जि होवै लेखु पुराणु ।।
वखतु न पाइओ कादीआ । जि लिखनि लेखु कुराणु ।।
थिति वारु ना जोगी जाणै । रुति माहु ना कोई ।।
जा करता सिरठी कउ साजे । आपे जाणै सोई ।।

---

१ गन्दगी २ ईश्वर-प्रेम ।

किव करि आखा किव सालाही। किउ वरनी किव जाणा ।।
नानक आखणि सभु को आखै । इकदू इकु सिआणा ।।
वडा साहिबु वडी नाई । कीता जा का होवै ।।
नानक जे को आपौ जाणै । अगै गइआ न सोहै ।।२१।।

तीरथ जाए जुहद[1] कमाए ख़ूब दया पुन दान करे
लेकिन फल तिल जितना पाये जिसपर मान गुमान करे
बन्दा सुन सुन कर जो माने प्रेम से दिल में ध्यान करे
अपने मन के तीरथ में वह मल मल कर स्नान करे
तू वस्फ़ों का वाली[2] मालिक गुन का मुझ में नाम नहीं
जब तक वस्फ़ न हों कुछ पल्ले भक्ती से कुछ काम नहीं
माया शब्द और ब्रह्माओं का ख़ालिक़ ख़ैर अंदेश ख़ुदा
तू सत् चित् आनन्द है सुन्दर तुझको हो परनाम सदा
कौन सा था वह वक़्त जमा या कौन सा दिन तारीख़ वह थी
मौसम और महीना क्या था नींव रखी जब दुनिया की
पण्डित वक़्त लगन गर पाते लिखते साफ़ पुराणों में वह
क़ाज़ी जानते साइत तो लिख देते सब क़ुर्आन में वह
दिन तारीख़ महीना मौसम जोगी को मालूम कहाँ
जाने तो वह ख़ालिक़ जाने जिससे है आबाद जहाँ§
क्योंकर बोलूँ हम्द करूँ या शरह करूँ या जानूँ मैं
'नानक' कहने को सब कहदें सब बढ़ चढ़ कर स्याने हैं
नाम बड़ा और शान बड़ी जो चाहे सो हो जाता है
'नानक' जो हंकारी[3] हो कब आगे इज़्ज़त पाता है ।।२१।।

पौड़ी २२

पाताला पाताल लख आगासा आगास ।।
ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ।।

---

१ तप २ गुणों के स्वामी, सारे गुण तेरे ही प्रकाश हैं ३ अहंकारी ।

§ सृष्टि कब कैसे बनी, इस पर कहनेवाला कोई नहीं । वही सृष्टिकर्ता ही जानता है । क़ुरान, पुरान, वेद, स्मृति, जोगी, जती, संन्यासी— सब यह कहने में असमर्थ हैं । इसलिए सृष्टि की चिन्ता छोड़कर सिरजनहार की चिन्तना में लगना चाहिए ।

सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ।।
लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ।।
नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ।।२२।।

लाखों हैं पाताल यहाँ पातालों के पाताल भी हैं
फैले लाखों आकाशों पर आकाशों के जाल भी हैं
अंत न पाया ढूंढ थके हम वेद यही एक बात बताएँ
सब अठारह हज़ार किताबें असल इक तेरी ज़ात बताएँ
लिखने वाले मिट जाते हैं शरह न लिक्खी जाए कभी
'नानक' कह रब सबसे आली जाने अपनी शान वही ।।२२।।

पौड़ी २३

सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ।।
नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ।।
समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ।।
कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ।।२३।।

करते हैं तौसीफ़[1] ख़ुदा की लेकिन हैं आगाह[2] कहाँ
नदियाँ नाले जाएँ समुन्दर लेकिन पाएँ थाह कहाँ
पर्वत जितनी दौलत हो और हो सुल्तान समुन्दर का
उस चिउँटी का तोल नहीं हो जिसके मन में याद ख़ुदा ।।२३।।

पौड़ी २४

अंतु न सिफती कहणि न अंतु । अंतु न करणै देणि न अंतु ।।
अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु । अंतु न जापै किआ मनि मंतु ।।
अंतु न जापै कीता आकारु । अंतु न जापै पारावारु ।।
अंत कारणि केते बिललाहि । ता के अंत न पाए जाहि ।।
एहु अंतु न जाणै कोइ । बहुता कहीऐ बहुता होइ ।।
वडा साहिबु ऊचा थाउ । ऊचे उपरि ऊचा नाउ ।।
एवडु ऊचा होवै कोइ । तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ।।
जेवडु आपि जाणै आपि आपि । नानक नदरी करमी दाति ।।२४।।

---

१ प्रशंसा २ होश ।

अन्त नहीं कुछ वस्फ़ों का कुछ तेरी सना[1] का अन्त नहीं
अन्त नहीं कुछ क़ुदरत का कुछ तेरी अता[2] का अन्त नहीं
अन्त नहीं आवाज़ों का नज़्ज़ारों का कुछ अन्त नहीं
अन्त नहीं कुछ भेदों का इसरारों[3] का कुछ अन्त नहीं
अन्त नहीं कुछ ख़िलक़त का संसार का तेरे अन्त नहीं
पार का तेरे अन्त नहीं और वार का तेरे अन्त नहीं
तेरा अन्त समझने का बे अन्त पड़े चिल्लाते हैं
लाख जतन करते हैं लेकिन अन्त न तेरा पाते हैं
तेरा अन्त न जाने कोई तेरी थाह न पाई है
जितना जितना कहते जाएँ उतनी और बड़ाई है
जाने कौन बड़ाई तेरी ऊँचा पाक मुक़ाम तेरा
ऊँचों के भी ऊँचों से है ऊँचा या रब नाम तेरा
इतना ऊँचा कौन भला जो उस ऊँचे को जानेगा
सब ऊँचों से ऊँचा हो जब ऊँचे को पहचानेगा
जाने आप बड़ाई अपनी समझे अपनी अज़मत[4] को
उसकी चश्म करम से 'नानक' बख़्शिश हो और रहमत हो ।।२४।।

पौड़ी २५

बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ।
वडा दाता तिलु न तमाइ ।
केते मंगहि जोध अपार ।
केतिआ गणत नही वीचारु ।
केते खपि तुटहि वेकार ।

केते लै लै मुकरु पाहि केते मूरख खाही खाहि ।
केतिआ दूख भूख सद मार एहि भि दाति तेरी दातार ।
बंदिखलासी भाणै होइ होरु आखि न सकै कोइ ।
जे को खाइकु आखणि पाइ ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ।
आपे जाणै आपे देइ आखहि सि भि केई केइ ।
जिसनो बखसे सिफति सालाह नानक पातिसाही पातिसाहु ।।२५।।

---

१ तारीफ़ २ देन ३ रहस्यों ४ महत्व ।

कितनी उसकी बख्शिश है यह किससे लिक्खी जाती है
आली है वह दाता उसको हिर्स[1] तमा[2] कब आती है
कितने हैं बलवान बहादुर भीख जो उससे पाते हैं
जो भिखमंगे उसके दर से गिनती में कब आते हैं
कितने वह बदक़िस्मत हैं जो पापी हैं बदकार भी हैं
घुल घुलकर वह बदियों में इस जीने से बेज़ार भी हैं
कितने उससे लेने वाले साफ़ मुकरते जाते हैं
कितने मूरख पेटू हैं जो अल्लम-ग़ल्लम खाते हैं
कितने दायम[3] भूखे मर मर कर दुख से जान गवाँते हैं
दाता यह भी दाद[4] है तेरी सब कुछ तुझ से पाते हैं
बन्दिश[5] तेरी मरज़ी है आज़ादी[6] तेरी मरज़ी है
किसकी ताक़त कौन कहे यह मरज़ी मेरी मरज़ी है
मूरख तेरी बातों में जो कोई नुक़्स बताता है
जब वह मुँह की खाता है तब होश उसे आ जाता है
आप ही सब कुछ जाने दाता आप ही देता रहता है
बात यह अपने मन से लेकिन कोई कोई कहता है
जिसके बख़्शे हम्द[7] की ताक़त वह बन्दा ज़ीजाह[8] हुआ
'नानक' वह राजों का राजा वह शाहों का शाह हुआ ॥२५॥

पौड़ी २६

अमुल गुण अमुल वापार अमुल वापारीए अमुल भंडार।
अमुल आवहि अमुल लै जाहि अमुल भाइ अमुला समाहि ।
अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ।
अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ।
अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ आखि आखि रहे लिव लाइ ।
आखहि वेद पाठ पुराण आखहि पड़े करहि वखिआण ।
आखहि बरमे आखहि इंद आखहि गोपी तै गोविंद ।
आखहि ईसर आखहि सिध आखहि केते कीते बुध ।
आखहि दानव आखहि देव आखहि सुरि नर मुनि जन सेव।

---

१ लोभ २ लालसा ३ हमेशा ४ बख़्शिश ५ बन्धन ६ मुक्ति ७ ईश्वर की स्तुति ८ महान् पद वाला ।

केते आखहि आखणि पाहि केते कहि कहि उठि उठि जाहि।
एते कीते होरि करेहि ता आखि न सकहि केई केइ ।
जेवडु भावै तेवडु होइ नानक जाणै साचा सोइ ।
जे को आखै बोलुविगाड़ु ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु।।२६।।

गुण भी हैं अनमोल तेरे
अनमोल तेरा व्यापार भी है
व्यापारी अनमोल तेरे
अनमोल तेरा भंडार भी है
आते हैं अनमोल यहाँ
ले जाते हैं अनमोल यहाँ
भाव भी है अनमोल समाँ[१] भी
पाते हैं अनमोल यहाँ
धर्म भी है अनमोल तेरा
अनमोल तेरा दीवान[२] भी है
बाँट भी हैं अनमोल तेरे
अनमोल तेरी मीज़ान[३] भी है
बख़्शीश भी है अनमोल तेरी
अनमोल है मुहर निशान तेरा
रहम करम अनमोल तेरे
अनमोल सदा इरफ़ान[४] तेरा
तू कितना अनमोल है या रब
तेरी बातें कौन बताए
तेरी बातें कहकहकर सबदुनिया
तुझ पर ध्यान लगाए
कहते हैं तेरी ही बातें
वेदों और पुराणों में
ज़िक्र है तेरी शानों का
वाज़ों[५] में और बयानों[६] में
हम्द करें ब्रह्मा भी तेरी
इन्दर भी तारीफ़ करें
गुण गाए हर गोपी भी
गोविन्द तेरी तौसीफ़[७] करें
हम्द कहे ईश्वर[८] भी तेरी
सिद्ध[९] भी तेरी शान बताएँ
जितने बोध[१०] बनाए तू ने
सारे तेरी महिमा गाएँ
देव तेरे गुण गाते हैं
जिन्नात[११] भी तेरी शान बताएँ
सेवक भक्त मुनी सब पूजें
तेरी हम्द मिलयाक गाएँ
तेरी महिमा करने वाले
कितने कितने आते हैं
कितने लोग सनाख़्वाँ[१२] हैं
जो कह कह कर उठ जाते हैं
तेरी जितनी दुनिया में हैं
उतने हों गर और जहाँ[१३]
वस्फ़[१४] तेरे सब मिल मिलकर
गिन सकती है मख़लूक़[१५] कहाँ

---

१ दृश्य २ ग्रंथ ३ जोड़ ४ ज्ञान (ब्रह्मज्ञान) ५ उपदेशों ६ कथनों ७ स्तुति ८ शंकर ९ सिद्ध जन (जैन मुनि) १० बुद्ध ११ दानव १२ गुणगान करनेवाले १३ संसार १४ गुण १५ सृष्टि ।

नोट—शैव, जैन, बौद्ध, देव, दानव, सुर, नर, मुनि, यहाँ तक कि साधारण मनुष्य और सारी सृष्टि उस अकाल पुरुष का ही गुण गाती है ।

जितनी चाहे शान बड़ाई　　उतनी शान बड़ाई हो
'नानक' साहब सच्चा जाने　　अपनी आप बड़ाई को
शान में उसकी गुस्ताख़ी　　यह काम तो है बदकारों का
ऐसा शख़्श गँवार नहीं　　वह है सरदार गँवारों का ।।२६।।

पौड़ी २७

सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ।
वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ।
केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ।
गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ।
गावहि चितुगुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ।
गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ।
गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ।
गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ।
गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ।
गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ।
गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ।
गावहि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ।
गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ।
गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ।
सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ।
होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ।
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ।
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ।
रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ।
करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ।
जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ।
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ।।२७।।

वह दर कैसा वह घर कैसा　　जिसमें बैठा काम चलाए
संखों नाद और बाजे उसमें　　कितनी दुनिया साज़ बजाए

कितने राग और रागिनियाँ हैं कितने रागी राग सुनाएँ
गाएँ पानी आग हवा और धर्मी राजा दर पर गाएँ
चित्र और गुप्त भी गाएँ जिनका लिक्खा धर्म बिचारे आप
गाएँ ईश्वर ब्रह्मा देवी जिनका रूप सँवारे आप
गाएँ तख़्त पे बैठे इन्दर दर पर देव तुम्हारे गाएँ
गाएँ सिद्ध समाधी में और सोच में साधू सारे गाएँ
गाएँ जत सत वाले साबर ताक़त वाले वीर भी गाएँ
गाएँ पण्डित गाएँ ऋषि जुग जुग के वेद जो पढ़ते जाएँ
चर्ख़[1] ज़मीं पातालों में सब गाएँ हूरें मनमोहन
गाएँ अढ़सठ तीरथ भी और तेरे हीरे लाल रतन
गाएँ जंगी बीर बहादुर चारो कानें[2] गाती हैं
तेरे माथे ख़ित्ते मण्डल और दुनियाएँ गाती हैं
गाएँ भक्त प्रेमी सब जो तेरे मन को भाते हैं
गाएँ कितने और भी 'नानक' याद कहाँ सब आते हैं
सच्चा हरदम साहब सच्चा नाम उसका सच्चाई है
है और हो भी, जाय न गुम हो, रचना जिसने रचाई है
गूनागूनी[3] जिसकी माया रंगा रंग सजाई है
आप बनाए आप ही देखे कितनी शान बड़ाई है
जो चाहे सो करता है कुछ चलता किसका कहना है
शाहों के उस शाह की 'नानक' ख़ास रज़ा पर रहना है ।।२७।।

पौड़ी २८

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ।
खिथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ।
आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ।
आदेसु तिसै आदेसु ।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ।।२८।।

मुँदरे[4] सरम[5] क़नाअत[6] के हूँ पत[7] की तेरी झोली हो
राख भभूत के बदले तन पर ध्यान की ख़ाली चोली हो

---

१ आकाश २ चार प्रकार की उत्पत्तियाँ (उद्भिज, स्वेदज, अण्डज, पिण्डज) ३ चित्र-विचित्र ४ योगमुद्राएँ अथवा कुण्डल जैसे योगियों द्वारा धारण करनेवाले बाहरी चिह्न के बदले क़नाअत अर्थात संतोष ही हमारा भूषण है ५ परिश्रम ६ संतोष ७ प्रतिष्ठा (प्रतिष्ठा का परिश्रम ही हमारी झोली है न कि योगियों जैसी कपड़े की झोली)।

तन हो पाक कुँआरी जैसा   मौत की कफ़नी डाले तू
लेकर सिद्क़ यक़ीन[1] का डण्डा   शक को मार निकाले तू
सब फ़िरक़ों को एक समझ ले   'आई' पंथी रीत है यह[2]
मन को तूने जीत लिया   तो सारे जग की जीत है यह
उसको है आदेश सदा   आदेश सदा आदेश सदा
अव्वल पाक अनादी[3] अब्दी[4]   जुग जुग में इक भेस सदा ॥२८॥

पौड़ी २९

भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद ।
आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद ।
संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग ।
आदेसु तिसै आदेसु ।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२९॥

ज्ञान को अपना भोजन कर ले   रहम तेरा भंडारी हो
हर मन में जो नाद बजे   वह नाद तेरी किलकारी हो
नाथे हैं सब नाथ में जिसकी   नाथ वही हो नाथ तेरा
दौलत ज़ोर करामत उनके   साथी से क्या साथ तेरा
वस्ल[5] और हिज्र[6] यही दोनों   दुनिया का काम चलाते हैं
क़िस्मत में जो लिक्खे हैं   वह भाग हमें मिल जाते हैं
उसको है आदेश सदा   आदेश सदा आदेश सदा
अव्वल पाक अनादी अब्दी   जुग जुग में इक भेस सदा ॥२९॥

पौड़ी ३०

एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ।
इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ।
जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ।
ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ।
आदेसु तिसै आदेसु ।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥

---

१ सत्य-स्वरूप पर श्रद्धा (रूपी डण्ड) २ एक ही सच्चा पथ है। जो चाहे 'आये' दाख़िल हो ३ अनादि ४ अखण्ड (आदि से सर्वदा एकरूप) ५ संयोग ६ वियोग ।

कहते हैं जब माया माई[1] पास ख़ुदा के आई है
देवता उसने तीन जने तीनों के हाथ ख़ुदाई है
इक संसार बनाता है और इक रोज़ी पहुँचाता है
इक जाँचे आमाल जहाँ के वह दीवान लगाता है
लेकिन सच पूछो तो दुनिया हुक्म ख़ुदा से चलती है[2]
जैसे जैसे हुक्म करे यह वैसे वैसे चलती है
वह उन सब को देखे भाले सबका हरदम ध्यान करे
आप रहे आँखों से ओझल आक़िल को हैरान करे[3]
उसको है आदेश सदा आदेश सदा आदेश सदा
अव्वल पाक अनादी अब्दी जुग जुग में एक भेस सदा ।।३०।।

पौड़ी ३१

आसणु लोइ लोइ भंडार, जो किछु पाइआ सु एका वार ।
करि करि वेखै सिरजणहारु, नानक सचे की साची कार ।
आदेसु तिसै आदेसु ।
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ।।३१।।

हर आलम में तख़्त उसी का हर जुग में भंडार भरे
जब भी वह भंडार भरे भंडार तमाम एक बार भरे
आप बनाए आप ही देखे सबका सिरजनहार है वह
'नानक' सच्चे काम सब उसके हाँ सच्ची सरकार है वह
उसको है आदेश सदा आदेश सदा आदेश सदा
अव्वल पाक अनादी अब्दी जुग जुग में एक भेस सदा ।।३१।।

पौड़ी ३२

इकदू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ।
लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस ।
एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस ।
सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ।
नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ।।३२।।

---

१ माया रूपी इस दुनिया की माता २ उस माया से ब्रह्मा, विष्णु, महेश उत्पन्न होकर उत्पत्ति, पालन और संहार (न्याय) करते हैं । यह तीनों भी उस एक अनादि शक्ति की ही प्रेरणा हैं ३ वह सबको देखता है, उसको कोई नहीं ।

एक के बदले लाख ज़बानें मुँह में मेरे आएँ अगर
इक इक की फिर बीस बनें यों बीस गुनी हो जाएँ अगर
लाखों बार उन लाखों पर जब नाम प्रभू का लाऊँ मैं
इस रस्ते यह ज़ीना चढ़कर वस्ल प्रभू से पाऊँ मैं
'नानक' सुनकर अर्श की बातें कीड़ों को भी आए रीस
रहमत से खुद मिलता है वह बक्की झूटे बिस्वे बीस[1] ॥३२॥

पौड़ी ३३

आखणि जोरु चुपै नह जोरु । जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥
जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ।जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥
जोरु न सुरती गिआनि वीचारि । जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥
जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ । नानक उतमु नीचु न कोइ ॥३३॥

कहने पर कब ज़ोर चले चुप रहने पर कब ज़ोर चले
देने पर कब ज़ोर चले लहने[2] पर भी कब ज़ोर चले
जीने पर कब ज़ोर चले मर जाने पर कब ज़ोर चले
ज़र[3] मंशूर[4] और राज हुकूमत पाने पर कब ज़ोर चले
सुर्ती[5] पर क्या दावये ज्ञान और ध्यान पे किसका ज़ोर चले
दुनिया से छुटकारा हो अरफ़ान पे किसका ज़ोर चले
ज़ोर हो जिसकी बाज़ू में वह देखे अपना ज़ोर लगा
ज़ोर से उत्तम कौन है 'नानक' ज़ोर[6] से नीचा कौन भला ॥३३॥

पौड़ी ३४

राती रुती थिती वार ।
पवण पाणी अगनी पाताल ।
तिसु विचि धरती थापि रखी धरमसाल ।
तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ।
तिन के नाम अनेक अनंत ।

---

१ सोलहो आने (उसकी कृपा से ही वह हमको मिलता है, बाक़ी सारी बातें बकवास हैं।) २ भाग्य ३ दौलत ४ शाही फ़र्मान ५ श्रुति-स्मृति (अथवा तन्मयता) ६ ज़ोर याने अहंकार का कहीं भी वश नहीं है, न उसके बल पर कोई ऊँचा-नीचा है। सब एक प्रभु के ज़ोर के ही ताबे हैं।

करमी करमी होइ वीचारु।
सचा आपि सचा दरबारु।
तिथै सोहनि पंच परवाणु।
नदरी करमि पवै नीसाणु।
कच पकाई ओथै पाइ।
नानक गइआ जापै जाइ ॥ ३४ ॥

उस मालिक ने रात बताई
चाँद की तिथि तारीख़ बताई
आग, हवा है, पानी है
धर्म सरा[2] इन सब के अन्दर
ख़ल्क़[3] है गूनागूनी[4] उसके
रंगों का कुछ अन्त नहीं
जैसे करम कमाएँगे
रब सच्चा दरबार भी सच्चा§
सजते हैं मक़बूल[6] वहाँ
रहमत की हो जिन पे नज़र
कच्चे पक्के परखे जाएँ
'नानक' रब के पास पहुँचकर

मौसम भी तैयार किये
पैदा दिन और वार किए[1]
पाताल ज़मीं के अन्दर है
यह धरती का मन्दिर है
कामों का कुछ अन्त नहीं
और नामों का कुछ अन्त नहीं
सब वैसे ही फल पाएँगे
अजर[5] वहाँ मिल जाएँगे
उन सबको इज़्ज़त शान मिले
उन सबको ख़ास निशान मिले
जब दरगाह[7] में आएँगे
सब पहचाने जाएँगे ॥३४॥

पौड़ी ३५

धरम खंड का एहो धरमु।
गिआन खंड का आखहु करमु।
केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस।
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस।
केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस।
केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस।
केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस।

---

१ तिथि २ धर्मशाला (हर मुसाफ़िर के ठहरने के लिए नहीं, बल्कि धर्म पर अमल करनेवाले यात्री के लिए) ३ सृष्टि ४ रंग-बिरंगी ५ प्रतिफल ६ (ईश्वर को) स्वीकृत, भक्त ७ भगवान का दरबार।

§ हमारी पाँच कर्म-इन्द्रियाँ रूपी पंच ही हमारे कर्मों की गवाही देंगे।

केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ।
केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ।
केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ।।३५।।

मंज़िल यह थी धर्म की मंज़िल जिसका धर्म बताया है
हाल अब ज्ञान की मंज़िल का कुछ आगे खोल सुनाया है
पानी आग हवाएँ कितनी कितने कितने कृष्ण महेश
कितने कितने ब्रह्मा हैं जो ढालें शक्लें रंगत भेस
कितनी ही आमाल की दुनिया मेरु[1] धुरू[2] उपदेश यहाँ
कितने इन्दर चाँद और सूरज कितने मण्डल देस जहाँ[3]
कितने देवी भेस के अन्दर कितने सिध बुध नाथ गुनी
कितने सागर लाल जवाहर कितने दानव देव मुनी
कितनी कानें और ज़बानें कितने गुज़रे शाह ज़मीं
कितने ज्ञानी सेवक 'नानक' जिनका अन्त शुमार नहीं ।।३५।।

पौड़ी ३६

गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ।
तिथै नाद विनोद कोड अनंदु ।
सरम खंड की बाणी रूपु ।
तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ।
ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ।
जे को कहै पिछै पछुताइ ।
तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ।
तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ।। ३६ ।।

यह थी ज्ञान की मंज़िल जो नूरानी[4] है इरफ़ानी[5] है
ज्ञान के उसमें नग़में[6] हैं सौ लाख ख़ुशी रूहानी[7] है
श्रम[8] की मंज़िल वह मंज़िल है जिसमें सुन्दर रूप मिले
जो शै इसमें गढ़ते[9] हैं उस शै को रूप अनूप मिले

---

१ मेरु (धरती का मध्य) २ ध्रुव (प्रदेश), या ध्रुव जैसे न जाने कितनों को यहाँ उपदेश दिये गये हैं ३ संसार ४ प्रकाशमय ५ ज्ञानमय ६ गीत ७ आध्यात्मिक ८ विनम्र परिश्रम ९ अपने को गढ़ते (ढालते) हैं ।

जो कुछ उसमें होता है वह कहने में कब आता है
जो भी उसको कहता है वह आख़िर को पछताता है
होश, समझ, मन, बुद्धी उनकी शक्ल सुधारी जाती है
वलियों[1] और फ़िरिश्तों की भी अक़्ल सवाँरी जाती है ॥३६॥

पौड़ी ३७

करम खंड की बाणी जोरु । तिथै होरु न कोई होरु ॥
तिथै जोध महा बल सूर । तिन महि रामु रहिआ भरपूर॥
तिथै सीतो सीता महिमा माहि। ताके रूप न कथने जाहि ॥
ना ओहि मरहि न ठागे जाहि । जिन कै रामु वसै मन माहि ॥
तिथै भगत वसहि के लोअ । करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥
सच खंडि वसै निरंकारु । करि करि वेखै नदरि निहाल ॥
तिथै खंड मंडल वरभंड । जे को कथै त अंत न अंत ॥
तिथै लोअ लोअ आकार । जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार॥
वेखै विगसै करि वीचारु । नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥

करम की मंज़िल वह मंज़िल है ज़ोर की है हर बात जहाँ
उसमें और न पहुँचे कोई ग़ैर का उसमें दख़ल कहाँ
उस मंज़िल में पहुँचेंगे शै ज़ोर बली मंसूर[2] है जो
राम की जिसमें क़ूवत है इस क़ूवत से भरपूर हैं जो
भक्त यहाँ मन सीते हैं सीताओं रूपी अज़मत[3] से
जिनका रूप बयान न हो है जेब जिन्हें हर ज़ीनत[4] से
मौत न उनको मार सके और ठग कर भी ले जाए कौन
जिनके मन में राम बसे फिर दुख उनको पहुँचाए कौन
इस मंज़िल में सब दुनिया के नेक भक्त ख़ुरसन्द[5] रहें
सच्चे रब से प्रेम लगाकर शाद[6] रहें आनन्द रहें
सच की मंज़िल वह मंज़िल है जिसमें निरंकार बसे
आप बनाकर आप ही देखे रहमत से ख़ुशहाल करे
सच की मंज़िल में हैं लाखों हिस्से मंज़िल और जहाँ
क्योंकर सबका ज़िक्र करें हम उनका अन्त शुमार कहाँ

---

१ ईश्वर-भक्तों २ विजयी ३ महिमा ४ शोभा ५ ख़ुशख़ुर्रम ६ प्रसन्न ।

शक्ले हैं बे अन्त यहाँ — संसारों पर संसार भी हैं
जैसे जैसे हुक्म मिले — सब करते वैसे कार भी हैं
जो देखे आनन्द करे — उस ध्यान से लुत्फ़ उठाता है
'नानक' जो इज़हार करे — लोहे के चाब चबाता है[1] ॥३७॥

पौड़ी ३८

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ।
अहरणि मति वेदु हथीआरु ।
भउ खला अगनि तपताउ ।
भांडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि ।
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ।
जिन कउ नदरि करमु तिन कार ।
नानक नदरी नदरि निहाल ॥ ३८ ॥

भट्ठी लेकर तक़वे[2] की — तू इस्तिक़लाल[3] सुनार बना
अक़्ल को अपनी करले ईंधन — ज्ञान को तू औज़ार बना
खाल[4] ख़ुदा के ख़ौफ़ की लेकर — तप का ताव बनाता जा
रखकर प्रेम कढ़ाली मन की — आँच ज़रा भड़काता जा
लाफ़ानी[5] है असल हक़ीक़त[6] — उसको लेकर ढाल यहाँ
गढ़ ले सच्चे नाम की मुहरें[7] — रख सच्ची टकसाल यहाँ
मेहर की जिस पर ख़ास नज़र हो — क़ायम यह टकसाल करे
मेहर की जिस पर ख़ास नज़र हो — 'नानक' आप निहाल करे ॥३८॥

---

१ उसका वर्णन करना बड़ा कठिन है २ संयम ३ धैर्य, धीरज ४ धौंकनी
५ अविनाशी ६ सत्यस्वरूप ७ सच्चे नाम की पूँजी, सिक्के ।

सलोकु

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ।
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ।
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ।
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ।
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ।
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ।। १ ।।

श्लोक

पानी बाप, हवा है मुर्शिद[1], आली धरती माँ
दाई रात खिलावा दिन है खेले खेल जहाँ
नेक़ और बद आमाल को जाँचे धरमी राज हज़ूर
सब अपने आमाल से पायें रुतबे पास और दूर
नाम पे जो जो ध्यान लगायें मेहनत ख़ूब कमायें
'नानक' मुँह पे नूर हो उनके साथी मुक्ती पायें

---

१ गुरु ।

वाह गुरू

पंजाब के जागे भाग मिला जब नानक सा आगाह गुरू
ऐ वाह गुरू आगाह गुरू दिलख्वाह गुरू जीजाह[1] गुरू
जब लेकर हक़ की राह गुरू बोल उठे 'इश्क़ अल्लाह' गुरू
आकाश पे ज़ाहिर नूर हुआ और चमके बनकर माह[2] गुरू
इरफ़ान[3] की किरनें नूरानी[4] फैलाते नानकशाह गुरू
सब शीश नवा अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरू

एक माथे टीका वहदत[3] का नीचे मस्ताना चोला है
फिर ज़ुल्फ़ों ने एक मस्ती का बाज़ार ख़ुतन[5] में खोला है
जो बात कही सो क़न्द[6] भरी हर क़ौल में अमृत घोला है
क्या रूप अनूप मुज़य्यन[7] है मुँह कैसा भोला भोला है
इस प्यारे मुँह से दाता के गुण गाते नानकशाह गुरू
सब शीश नवा अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरू

इसशमा[8]सेहोजिसदिलकोलगन उस दिल में नूर उजाला हो
जो चाँद के गिर्दा गिर्द फिरे दिल उसका रौशन हाला हो
इन सच्ची सच्ची बातों को जो ख़ूब समझने वाला हो
गर चेला हो मर्दाना हो और बोल भी उसका बाला हो
थे उनके धन धन भाग जिन्हें मिल जाते नानकशाह गुरू
सब शीश नवा अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरू

फ़रमाते आप बिरहमन को हर आगे शीश झुका बाबा
क्यों हाथ बनाई मूरत को तू पूजे है बतला बाबा
क्या सूतक सातक छूत जनेऊ क्या मण्डल होम कथा बाबा
वह पूछें कर्मों धर्मों को जाती की नहीं परवा बाबा
सब झूठे झूठे कामों को छुड़वाते नानकशाह गुरू
सब शीश झुका अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरू

चल मिहरो-वफ़ा की मस्जिद में यह मुस्लिम को समझाते थे
मिहराब बना वज्हुल्लाह[9] का और इश्क़ इमाम बनाते थे
फिर लोभ-तकब्बुर-झूठ-ख़ुदी सब ऐब उससे छुड़वाते थे
तौहीद[10] ही के गुण गाते थे और सीधी राह दिखाते थे
क्या सच्ची सच्ची बातों को समझाते नानकशाह गुरू
सब शीश नवा अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरू

---

१ प्रतिष्ठित २ चन्द्रमा ३ ब्रह्मज्ञान ४ प्रकाशमय ५ चीन का एक नगर जहाँ की कस्तूरी प्रसिद्ध है ६ मिस्री ७ सजीला ८ मोमबत्ती ६ ईश्वरस्वरूप १० एकोब्रह्म ।

दिलसाफ़होजिसका दैरो-हरम[१] की दुबिधा को वह छेड़े क्यों
हो जिसकी मंज़िल दूर अभी ले बैठे यह उलझेड़े क्यों
जब रस्ता साफ़ नुमायाँ[२] हो मझधार में डाले बेड़े क्यों
ख़ुद आप चुका दे झगड़ों को यह आकर मौत निबेड़े क्यों
क्या अच्छी अच्छी बातें सब फ़रमाते नानकशाह गुरू
सब शीश नवा अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरू

क्या हिन्दू है क्या मुस्लिम है सब खालिक़ के गुण गाते हैं
फिर शेख़ व ब्राह्मण आ-आकर क्यों झगड़े मुफ़्त बढ़ाते हैं
हम नाम उसी का लेते हैं हम उसको शीश झुकाते हैं
सत नाम है वह निर्वैर है वह हम उससे प्रीत लगाते हैं
थे राह उसी जगदाता की दिखलाते नानकशाह गुरू
सब शीश नवा अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरू

हैं जितने हक़-आगाह[३] गुरू सब नानक के मतवाले हैं
उन सबको समझो पाक वली वह दुनिया के उजियाले हैं
हर नाम की सुमरन करते हैं और सारे अल्लाह वाले हैं
जो मस्त हैं प्रीतम दर्शन में और पीते प्रेम-पियाले हैं
यह प्रेम पियाले उन सबको पिलवाते नानकशाह गुरू
सब शीश नवा अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरू

दस शमएँ[४] हों एक महफ़िल हो वह जोत झलक तो एक ही है
दस गुंचे[५] रंग बिरंग खिलें आवाज़ चटक तो एक ही है
दस गौहर[६] हों एक माला में गौहर की दमक तो एक ही है
दस संत मिलें दस रूपों में सीने की फड़क तो एक ही है
हर रंग में मिलने वालों को मिल जाते नानकशाह गुरू
सब शीश नवा अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरू

ए दिल हैं जितने पाक वली और सन्त गुरू अवतार हुए
सब नाम उसी का लेते थे हर ध्यान में वह सरशार[७] हुए
उन सबके मनका चैन और सुख वह आप ही एक ओंकार हुए
इस वास्ते उनकी किरपा से लाखों के बेड़े पार हुए
हैं खेवनहारे वलिओं में हक़माते[८] नानकशाह गुरू
सब शीश नवा अरदास करो और हरदम बोलो वाह गुरू

---

१ मन्दिर-काबः २ ज़ाहिर, स्पष्ट ३ सत्य को पहचाननेवाले ४ मोमबत्तियाँ ५ कलियाँ ६ मोती ७ मस्त, लबरेज़ ८ सत्य पर मतवाले।

सदाए इश्क़

(एक पंजाबी नज़्म)

ख़्वाजा दिल मुहम्मद साहब एम० ए० विरचित

जिस दे नूर मुनव्वर[1] कीता चन सूरज दे सीने नूँ
ओसे अपना रूप विखाया 'नानक' दे आईने नूँ
जिसने कप्पलवस्ता[2] अन्दर राज छुड़ाया गौतम दा
नानक दे मन सुट चिनग्यारी फूक जलाया सीने नूँ
मत्थे टिक्का वहदत वाला गल चोला मस्ताना ए
दिल ते अलिफ़ अलख दा लिख्या खोदन जिवें नगीने नूँ
हर विच जलवा वेखन उसदा अख जिनहाँ दी रोशन ए
सीने अन्दर मूल न रक्खन वैर हरम दे कीने नूँ
ओ हो देवा इश्क़े वाला रौशन उप्पर तूर हुया
ओ से नूर मुनव्वर[1] कीता मक्के नाल मदीने नूँ
चित्त जिन्हाँ दिल यार दे कीता मूँह उन्हाँ दा मुड़ना की
मकनातिसना[3] क़ुतबूँ फिर दा फेरो लक्ख नगीने नूँ
चन चकोर न वेखे जे कर नैना ताईं चैन न आए
आशिक़ नूँ जद दीद न होवे साड़ घते इस जीने नूँ
नानक वांगूँ ढूंडे जेड़ा इश्क़े दे गंजीने नूँ
दिल दे टुकड़े भोजन उसनूँ ख़ून जिगर दा पीने नूँ
औंखी घाटी इश्क़े वाली सब्र बिनाँ कुझ चारा ना
हल फिरन जै सै सै सिरते जुंबिश ना ज़मीने नूँ
राज़ इलाही दिल विच डूँघा लभना ए पर ऊखा ए
नाग-तमा[4] दा दिल विच बैठा कुण्डल मार दफ़ीने नूँ
तालिब बनना मुश्किल डाढा एथे लोड़ सफ़ाई दी
पट सुटें ऐ यार दिले थीं पहले खोट कमीने नूँ
ऐ दिल सानूं इश्क़े वाली गल सो ख़ाली विस्से नाँ
घुम्मन घेरियाँ अन्दर चलिया कडें ओ यार सफ़ीने नूँ

---

१ प्रकाशमान २ कपिलवस्तु ३ मकनातीस ४ हिर्स-लोलुपता रूपी सर्प ।

सुखमनी साहिब

गउड़ी सुखमनी महला ५

सलोकु

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आदि गुरए नमह ॥
जुगादि गुरए नमह ॥
सति गुरए नमह ॥
स्री गुर देवए नमह ॥ १ ॥

अव्वल गुरु को बन्दगी जुग गुरु को परनाम
सत गुरु को आदाब है श्री गुरुदेव सलाम

असटपदी १

सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥
कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥
सिमरउ जासु बिसुंभर एकै ॥
नामु जपत अगनत अनेकै ॥
बेद पुरान सिंम्रिति सुधाख्यर ॥
कीने रामनाम इक आख्यर ॥
किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥
ता की महिमा गनी न आवै ॥
कांखी एकै दरस तुहारो ॥
नानक उन संगि मोहि उधारो ॥ १ ॥

सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु ॥
भगत जना कै मनि बिस्राम ॥ रहाउ ॥

रब[1] की याद किए जा बन्दे याद किये सुख पाएगा
याद किए जा— तन मन के सब झगड़े रोग मिटाएगा
रब वाहिद[2] को याद किये जा सबका जो रखवाला है
जपते हैं अनगिनत उसे अनगिनती नामों वाला है
'वेदों', 'पुराणों', 'स्मृतियों' को पढ़कर ख़ूब बिचारा है
सब का अन्त एक हर्फ़ मिला जो नाम ख़ुदा को प्यारा है
पल भर भी जो अपने मन में प्यारे रब का नाम बसाए
ऐसा रुतबा पाएगा वह जिसकी शान कही ना जाए
जो तेरे दीदार के आशिक़ शौक है जिनको दर्शन का
दाता उनकी संगत में नानक का बेड़ा पार लगा ॥१॥

सुख का अमरित सुखमनी सुख अमरित रब नाम
भक्तों के मन पाएँगे नाम लिये आराम ॥रहाउ॥

प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥
प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै ॥
प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥
प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥
प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥
प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै ॥
प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥
प्रभ कै सिमरनि दुखु न संतापै ॥
प्रभ का सिमरनु साध कै संगि ॥
सरब निधान नानक हरि रंगि ॥ २ ॥

रब की याद किए जा बन्दे फिर न जनम का चक्कर[3] खाए
रब की याद किए जा बन्दे मौत का सारा दुख मिट जाए
रब की याद किए जा बन्दे मरने की हो उलझन दूर
रब की याद किए जा बन्दे रद्द बलाएँ, दुश्मन दूर
रब की याद किए जा बन्दे ग़ाएब हर दुश्वारी[4] हो
रब की याद किए जा बन्दे रात और दिन बेदारी[5] हो

---

१ प्रभु २ एकमेव ईश्वर ३ आवागमन ४ कठिनाई ५ जाग्रति ।

रब की याद किए जा बन्दे खौफ़ न तुझ पर छाएगा
रब की याद किए जा बन्दे दुख सारा मिट जाएगा
रब की याद जभी हो नानक जब साधुओं का संग मिले
सच्चा हो जब प्रेम खुदा से फिर दौलत हर रंग मिले ।।२।।

प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि ।।
प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ।।
प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ।।
प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा ।।
प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी ।।
प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ।।
प्रभ कै सिमरनि होइ सु भला ।।
प्रभ कै सिमरनि सुफल फला ।।
से सिमरहि जिन आपि सिमराए ।।
नानक ता कै लागउ पाए ।। ३ ।।

रब की याद किए जा बन्दे माल कमाल[1] खज़ाने पाए
रब की याद किए जा बन्दे दानिश[2],ज्ञानऔरध्यानभीआए
रब की याद किए जा बन्दे जप तप पूजा पाठ है यह
रब की याद किए जा बन्दे खास 'दोई'[3] की काट है यह
रब की याद किए जा बन्दे तीरथ का स्नान है यह
रब की याद किए जा बन्दे रब के घर में मान है यह
रब की याद किए जा बन्दे शाकिर[4] तू हो जाएगा
रब की याद किए जा बन्दे जीने का फल पाएगा
रब की याद करेंगे वह तो फ़ैज़[5] जो रब से पाते हैं
'नानक' रब के प्यारों के हम क़दमों से लग जाते हैं ।।३।।

प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ।।
प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ।।

---

१ सिद्धि २ बुद्धि ३ द्वैत भाव (अपना-विराना) ४ ईश्वर-कृतज्ञ ५ लाभ ।

प्रभ कै सिमरनि त्रिसना बुझै ।।
प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ।।
प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ।।
प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ।।
प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ।।
अंम्रित नामु रिद माहि समाइ ।।
प्रभ जी बसहि साध की रसना ।।
नानक जन का दासनि दसना ।। ४ ।।

रब की याद किए जा बन्दे कार है ऊँचा कार यही
रब की याद किए जा बन्दे कर दे बेड़ा पार यही
रब की याद किए जा बन्दे दूर हो मन की प्यास सभी
रब की याद किए जा बन्दे सूझे दूर और पास सभी
रब की याद किए जा बन्दे मौत का डर मिट जाएगा
रब की याद किए जा बन्दे खूब मुरादें[1] पाएगा
रब की याद किए जा बन्दे मैल हो मन का दूर तमाम
रब का नाम है अमरित जिससे सीना[2] हो भरपूर तमाम
जिन संतों की पाक ज़ुबाँ पर नाम खुदा का रहता है
अदना[3] चाकर उनके दर का नानक खुद को कहता है ।।४।।

प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते ।।
प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते ।।
प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ।।
प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान ।।
प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे ।।
प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे ।।
प्रभ कउ सिमरहि से सुख वासी ।।
प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी ।।
सिमरन ते लागे जिन आपि दइआला ।।
नानक जन की मंगै रवाला ।। ५ ।।

---

१ अभिलाषाएं २ हृदय ३ साधारण ।

रब की याद करें जो बन्दे माल ख़ज़ानों वाले हैं
रब की याद करें जो बन्दे इज़्ज़त शानों वाले हैं
रब की याद करें जो बन्दे दुनिया में परवान[1] हैं वह
रब की याद करें जो बन्दे पत वाले परधान हैं वह
रब की याद करें जो बन्दे वह फिर कब मुहताज रहें
रब की याद करें जो बन्दे सब पर उनके राज रहें
रब की याद करें जो बन्दे सुख में दायम[2] रहते हैं
रब की याद करें जो बन्दे दायम क़ायम रहते हैं
वह करते हैं याद ख़ुदा की जिन पर उसकी रहमत है
ख़ाक उनके क़दमों की माँगे नानक को यह निअ़मत है ।।५।।

प्रभ कउ सिमरहि से पर उपकारी ।।
प्रभ कउ सिमरहि तिन सद बलिहारी ।।
प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे ।।
प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै ।।
प्रभ कउ सिमरहि तिन आतमु जीता ।।
प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल रीता ।।
प्रभ कउ सिमरहि तिन अनद घनेरे ।।
प्रभ कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे ।।
संत क्रिपा ते अनदिनु जागि ।।
नानक सिमरनु पूरै भागि ।। ६ ।।

रब की याद करें जो बन्दे काम उनका ग़मख्वारी[3] है
रब की याद करें जो बन्दे जान उनके बलिहारी है
रब की याद करें जो बन्दे रुख़[4] उनका पुरनूर[5] रहे
रब की याद करें जो बन्दे चैन से मन भरपूर रहे[6]
रब की याद करें जो बन्दे मन पर उनकी जीत रहे[7]
रब की याद करें जो बन्दे पाक उनकी हर रीत रहे
रब की याद करें जो बन्दे सुख पाएँ आनँद पाएँ
रब की याद करें जो बन्दे वह रब से नज़दीकी पाएँ[8]

---

१ भक्त २ हमेशा ३ सब पर सहानुभूति रखना ४ आकृति ५ प्रकाशमान ६ आत्मतृप्ति ७ संयम ८ प्रभु-सामीप्य ।

सन्तों की किरपा से उनमें रात और दिन बेदारी[1] है
ख़ुशक़िस्मत हैं 'नानक' जिनको याद ख़ुदा की प्यारी है ।।६।।

प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ।।
प्रभ कै सिमरनि कबहु न झूरे ।।
प्रभ कै सिमरनि हरि गुन बानी ।।
प्रभ कै सिमरनि सहजि समानी ।।
प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु ।।
प्रभ कै सिमरनि कमल बिगासनु ।।
प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार ।।
सुखु प्रभ सिमरन का अंतु न पार ।।
सिमरहि से जन जिन कउ प्रभ मइआ ।।
नानक तिन जन सरनी पइआ ।। ७ ।।

रब की याद किए जा बन्दे पूरे हों सब काम तेरे
रब की याद किए जा बन्दे चिन्ता से आराम मिले
रब की याद किए जा बन्दे दाता के गुन गाए तू
रब की याद किए जा बन्दे रब में सहज समाए तू[2]
रब की याद किए जा बन्दे पक्का आसन पाएगा
रब की याद किए जा बन्दे दिल का कमल खिल जाएगा
रब की याद किए जा बन्दे ग़ैब[3] से तू झन्कार सुने
रब की याद किए जा बन्दे तुझको सुख बेअन्त मिले
रब की याद करें वह बन्दे जिन पर रब की रहमत है
नानक माँगे उनका साया उनका साया निअ़मत है ।।७।।

हरि सिमरनु करि भगत प्रगटाए ।।
हरि सिमरनि लगि बेद उपाए ।।
हरि सिमरनि भए सिध जती दाते ।।
हरि सिमरनि नीच चहु कुंट जाते ।।
हरि सिमरनि धारी सभ धरना ।।
सिमरि सिमरि हरि कारन करना ।।

---

१ जागृति २ तल्लीन हो ३ अदृष्ट ।

हरि सिमरनि कीओ सगल अकारा ॥
हरि सिमरन महि आपि निरंकारा ॥
करि किरपा जिसु आपि बुझाइआ ॥
नानक गुरसुखि हरि सिमरनु तिनि पाइआ ॥ ८ ॥

रब की याद किए से कुल सन्तों का नूर ज़हूर[1] हुआ
रब की याद किए से हाज़िर सब वेदों का नूर[2] हुआ
रब की याद किए से बन्दे दाता, सिद्ध, जती कहलाएँ
रब की याद किए से हरसू[3] नीच भी जग में शोहरत[4] पाएँ
रब की याद किए से धरती क़ायम दायम रहती है
याद कर उसकी जिसको दुनिया सबका कारन कहती है
नाम प्रभू का लेने को यह सारी मख़लूक़ात[5] हुई
याद में रब की हाज़िर नाज़िर[6] आप ख़ुदा की ज़ात[7] हुई
जिन पर लुत्फ़ ख़ुदा का नानक जिन पर उसकी रहमत है
गुरु से पाएँ नाम ख़ुदा का नाम ख़ुदा का निअ़मत है ॥८॥

सलोकु

दीन दरद दुख भंजना
घटि घटि नाथ अनाथ ॥
सरणि तुमारी आइओ
नानक के प्रभ साथ ॥ १ ॥

तू आजिज़[8] मिस्कीन[9] का सब दुख दरद मिटाय
तू हर दिल में ख़ुद बसे सब में आप समाय
सब नाथों का नाथ तू तेरा कोई न नाथ
या रब तेरा आसरा दे नानक का साथ

१ प्रकट २ प्रकाश ३ हर तरफ़ ४ प्रसिद्धि ५ सृष्टि ६ प्रत्यक्ष ७ स्वयं ईश्वर रूप ८ असहाय ९ दीन ।

असटपदी २

जह मात पिता सुत मीत न भाई मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई ।
जह महा भइआन दूत जम दलै तह केवल नामु संगि तेरै चलै ।
जह मुसकल होवै अति भारी हरि को नामु खिन माहि उधारी ।
अनिक पुनह चरन करत नही तरै हरि को नामु कोटि पाप परहरै ।
गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे नानक पावहु सूख घनेरे ।। १ ।।

जब मा बाप न बेटा भाई संगी यार न नाती हो
काम का उस दिन साथी हो तो नाम ख़ुदा का साथी हो
मौत का जब ख़ूँख्वार फ़िरिश्ता तेरे तन को दलता है
साथ तेरे फिर चलता है तो नाम ख़ुदा का चलता है
भारी कोई मुश्किल आकर जब तुझको हैरान करे
पल में नाम ख़ुदा का तेरी हर मुश्किल आसान करे
लाख करे तू मूरत पूजा कौन तुझे मंज़ूर करे[1]
पल में नाम ख़ुदा का तेरे पाप करोड़ों दूर करे
ऐ दिल गुरु के मुँह से सुनकर नाम ख़ुदा का लेता जा
नाम ख़ुदा का लेकर 'नानक' राहत[2] दिल को देता जा ।।१।।

सगल स्रिसटि को राजा दुखीआ हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ।
लाख करोरी बंधुन परै हरि का नामु जपत निसतरै ।
अनिक माइआ रंग तिख न बुझावै हरि का नामु जपत आघावै ।
जिह मारगि इहु जात इकेला तह हरि नामु संगि होत सुहेला ।
ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ नानक गुरमुखि परम गति पाईऐ ।।२।।

दुनिया भर का राजा भी दुख पाता है दुख सहता है
नाम प्रभू का लेने वाला सुख के अन्दर रहता है
लाखों और करोड़ों बन्धन जकड़ें और फँसाएँगे
नाम प्रभू का लेने से वह सब के सब खुल जाएँगे
इस माया के रंगारंगी[3] ऐश[4] बुझाएँ प्यास कहाँ
नाम प्रभू का लेने से रहती है प्यास[5] तरास[6] कहाँ

---

१ अपनाए २ शान्ति ३ रंग-बिरंगे, लुभावने ४ (सांसारिक) सुख के सामान ५ तृष्णा ६ त्रास (दुःख) ।

जिस रस्ते पर आख़िर को तू आप अकेला जाता है
नाम प्रभू का साथ चले जो मन तेरा बहलाता है
नाम प्रभू का ऐसा है तू उस पर ध्यान जमाए जा
सुनकर बात गुरू की 'नानक' आला मंज़िल[1] पाए जा ॥२॥

छूटत नही कोटि लख बाही नामु जपत तह पारि पराही ।
अनिक बिघन जह आइ संघारै हरि का नामु ततकाल उधारै ।
अनिक जोनि जनमै मरि जाम नामु जपत पावै बिस्राम ।
हउ मैला मलु कबहु न धोवै हरि का नामु कोटि पाप खोवै ।
ऐसा नामु जपहु मन रंगि नानक पाईऐ साध कै संगि ॥ ३ ॥

लाखों बाज़ू[2] होने पर भी कब तेरा छुटकारा है
नाम लिये जा नाम लिये जा उससे पार उतारा है
सौ सौ मुश्किल भारी भी गर तेरी राह में आएगी
याद ख़ुदा की फ़ौरन तेरा बेड़ा पार लगाएगी
सौ सौ जोनी भोगे बन्दा जाता है फिर आता है
जपता है जब नाम ख़ुदा का चैन-सकूँ[3] वो पाता है
मैल ख़ुदी[4] का दूर हो क्योंकर मल-मलकर तन धोने से
पाप करोड़ों दूर हों तेरे याद ख़ुदा की होने से
ऐसा नाम जपे जा ऐ दिल रब से प्रेम लगाए जा
संतों की संगत में 'नानक' नाम ख़ुदा का पाए जा ॥३॥

जिह मारग के गने जाहि न कोसा हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ।
जिह पैडै महा अंध गुबारा हरि का नामु संगि उजीआरा ।
जहा पंथि तेरा को न सिञानू हरि का नामु तह नालि पछानू ।
जह महा भइआन तपति बहु घाम तह हरि के नाम की तुम ऊपरि छाम ।
जहा त्रिखा मन तुझु आकरखै तह नानक हरि हरि अंम्रितु बरखै ॥४॥

रस्ता, दूर का रस्ता, जिस पर कोस नहीं और मील नहीं
रब का नाम हो तो शह उसमें जाती साथ एक खील नहीं
रस्ता, दूर का रस्ता, जिस पर धुन्ध - गुबार - अँधेरा हो
हाथ में हो गर नाम की मशाल रौशन रस्ता तेरा हो

---

१ उत्तम गति २ हाथ, साधन-सहारा ३ सुख-शान्ति ४ अहंभाव ।

रस्ता, दूर का रस्ता, जिस पर कोई न तुझको जानेगा
जानेगा तो नाम प्रभू का जानेगा पहचानेगा
रस्ता, दूर का रस्ता, जिस पर तेज़ तपिश दुख देती है
छाँव प्रभू के नाम की तुझको साए में अपने लेती है
रस्ता, दूर का रस्ता, जिस पर 'नानक' प्यास सताती है
एक प्रभू के नाम की बदली वाँ अंम्रित बरसाती है ।।४।।

भगत जना की बरतनि नामु संत जना कै मनि बिस्रामु ।
हरि का नामु दास की ओट हरि कै नामि उधरे जन कोटि ।
हरि जसु करत संत दिनु राति हरि हरि अउखधु साध कमाति ।
हरि जन कै हरि नामु निधानु पारब्रहमि जन कीनो दान ।
मन तन रंगि रते रंग एकै नानक जन कै बिरति बिबेकै ।।५।।

भक्त वही हैं नाम खुदा का जपने से है काम जिन्हें
सन्त वही हैं नाम खुदा का देता है आराम जिन्हें
रब के जितने दास हैं उनको रब का नाम सहारा है
नाम ने लाखों बन्दों को दुनिया में पार उतारा है
रात हो दिन हो सन्त हमेशा दाता के गुण गाते हैं
नाम की दारू[1] देकर साधू सारे रोग गँवाते हैं
रब वालों को नाम ही रब का दौलत है गंजीना[2] है
पाक ख़ुदा ने उनको बख़्शा अपना ख़ास ख़जीना[2] है
जिसके तन मन वहदत[3] का एक रंग में रंगे जाते हैं
वह रूहानी-इल्म[4] की 'नानक' हक़[5] से निअमत पाते हैं ।।५।।

हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति हरि कै नामि जन कउ त्रिपति भुगति।
हरि का नामु जन का रूप रंगु हरि नामु जपत कब परै न भंगु ।
हरि का नामु जन की वडिआई हरि कै नामि जन सोभा पाई ।
हरि का नामु जन कउ भोग जोग हरि नामु जपत कछु नाहि बिओगु ।
जनु राता हरि नाम की सेवा नानक पूजै हरि हरि देवा ।।६।।

---

१ भगवन्नाम रूपी मदिरा २ ख़ज़ाना ३ एकमेव ईश्वरत्व ४ आत्मज्ञान
५ सत्य (सत्यस्वरूप ईश्वर से)।

नाम प्रभू का बन्दों को मुक्ती की राह दिखाता है
नाम प्रभू का लेने ही से सब्र-सकूँ[1] मिल जाता है
रब वालों का नाम से बेहतर रूप नहीं और रंग नहीं
नाम प्रभू का जपने से फिर रंग में होगी भंग नहीं
नाम प्रभू का जपने से साधों की शान बड़ाई है
नाम प्रभू का जपने से सन्तों ने शोभा पाई है
नाम प्रभू का भोग भी है और नाम ख़ुदा का योग भी है
नाम प्रभू का जपने से सब जाता रोग बियोग भी है
रंगे हैं जो नाम में रब के नाम की सेवा करते हैं
रब के बन्दे एक ख़ुदा की 'नानक' पूजा करते हैं ।।६।।

हरि हरि जन कै मालु खजीना हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना ।
हरि हरि जन कै ओट सताणी हरि प्रतापि जन अवर न जाणी ।
ओति पोति जन हरि रसि राते सुंन समाधि नाम रस माते ।
आठ पहर जनु हरि हरि जपै हरि का भगतु प्रगट नही छपै ।
हरि की भगति मुकति बहु करे नानक जन संगि केते तरे ।।७।।

नाम ख़ुदा का रब वालों को दौलत माल ख़जीना[2] है
आप ख़ुदा ने बख़्शा उनको नाम का यह गंजीना[2] है
नाम ही वह गढ़ कोट[3] है जिसमें रब वाले सब रहते हैं
शान न हो जो शान ख़ुदा की शान उसे कब कहते हैं
रब के प्यारे बन्दों के रंगीले ताने बाने हैं
ध्यान के माते नाम के रस को पी पी कर मस्ताने हैं
रब के बन्दे आठ पहर बस नाम उसी का लेते हैं
भक्तों के गुन रौशन हैं कब उनको छिपने देते हैं
रब की भक्ती मुक्ती कर दे लाखों और हज़ारों की
'नानक' कितने पार लगाए संगत हक़[4] के प्यारों की ।।७।।

पारजातु इहु हरि को नाम कामधेन हरि हरि गुण गाम ।
सभ ते ऊतम हरि की कथा नामु सुनत दरद दुख लथा ।
नाम की महिमा संत रिद वसै संत प्रतापि दुरतु सभु नसै ।

---

१ संतोष-शांति २ ख़ज़ाना ३ क़िला, दुर्ग ४ सत्य ।

संत का संगु वडभागी पाईऐ संत की सेवा नामु धिआईऐ ।
नाम तुलि कछु अवरु न होइ नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ॥८॥

पेड़ बिहिश्ती[1] पाया है गर नाम ख़ुदा का पाया है
कामधेनु की न्यामत है गर नाम ख़ुदा का गाया है
करते जाओ बात ख़ुदा की इससे अच्छी बात कहाँ
नाम ख़ुदा का सुनने से दुख दर्द कहाँ आफ़ात[2] कहाँ
नाम की इज़्ज़त नाम की शौक़त सन्त के मन में बसती है
जलवा हो जब सन्तों का फिर पापों की क्या हस्ती है
संगत जिसको सन्तों की ख़ुशक़िस्मत वह इंसान रहे
सेवा जब हो सन्तों की तब नाम में हरदम ध्यान रहे
तौल ख़ुदा के नाम की जग में कौन सी न्यामत मिलती है
किसी-किसी को गुरु से 'नानक' नाम की दौलत मिलती है ॥८॥

सलोकु

बहु सासत्र बहु सिम्रिती
पेखे सरब ढढोलि ॥
पूजसि नाही हरि हरे
नानक नाम अमोल ॥ १ ॥

सब स्मृतियाँ शास्तर नानक लिये टटोल
तौल न उसके आ सकें नाम उसका अनमोल

असटपदी ३

जाप ताप गिआन सभि धिआन ॥
खट सासत्र सिम्रिति वखिआन ॥
जोग अभिआस करम ध्रम किरिआ ॥
सगल तिआगि बन मधे फिरिआ ॥

---

१ स्वर्गीय २ विपत्तियाँ ।

अनिक प्रकार कीए बहु जतना ॥
पुंन दान होमे बहु रतना ॥
सरीरु कटाइ होमै करि राती ॥
वरत नेम करै बहु भाती ॥
नही तुलि राम नाम बीचार ॥
नानक गुरमुखि नामु जपीऐ इक बार ॥ १ ॥

जप भी करले तप भी करले ज्ञान और ध्यान कमाए जा
स्मृतियों छः शास्त्रों की बानी खोल सुनाए जा
योग कर्म और क्रिया करले धर्म भी पूरा तेरा हो
त्याग दे सब कुछ दुनिया का जंगल में तेरा फेरा हो
रंगा रंगी ढंग किए जा करता जा दिन रात जतन
काम भी कर पुन दान हवन के देता जा ख़ैरात रतन
काट के अपने तन के टुकड़े दान हवन भी करता जा
बरत किए जा नेम किए जा भरने सारे भरता जा
तौल ख़ुदा के नाम न होगा फिर भी तेरा कार कभी
गुरु के मुँह से सुनकर 'नानक' जप लें नाम एक बार कभी ॥१॥

नउ खंड प्रिथमी फिरै चिरु जीवै ॥
महा उदासु तपीसरु थीवै ॥
अगनि माहि होमत परान ॥
कनिक अस्व हैवर भूमि दान ॥
निउली करम करै बहु आसन ॥
जैन मारग संजम अति साधन ॥
निमख निमख करि सरीरु कटावै ॥
तउ भी हउमै मैलु न जावै ॥
हरि के नाम समसरि कछु नाहि ॥
नानक गुरमुखि नामु जपत गति पाहि ॥ २ ॥

फिर ले नौ इक़लीमो[1] में उम्रें भी लम्बी पाए जा
आली तारक[2] और तपस्वी बन कर ज़ुह्द[3] कमाए जा

---

१ लोकों २ त्यागी ३ परहेज़गारी, संयम ।

जीते जी तू आग में जल जा	जान अपनी क़ुर्बान भी कर
सोना दे दे घोड़ा दे दे	भूमी धन का दान भी कर
नेवली[1] करम भी हासिल करके	आसन लाख बदलता जा
साधन संजम[2] करता जा और	जैनी मारग चलता जा
तन के टुकड़े टुकड़े करके	जोड़ पे जोड़ कटाए जा
फिर भी मन का मैल न उतरे	मान गुमान न जाए जा
इसके तुल[3] की चीज़ नहीं कुछ	नाम ख़ुदा का प्यारा है
गुरु से सुनकर नाम लिये जा	'नानक' तब छुटकारा है ॥२॥

मन कामना तीरथ देह छुटै ॥
गरबु गुमानु न मन ते हुटै ॥
सोच करै दिनसु अरु राति ॥
मन की मैलु न तन ते जाति ॥
इसु देही कउ बहु साधना करै ॥
मन ते कबहू न बिखिआ टरै ॥
जलि धोवै बहु देह अनीति ॥
सुध कहा होइ काची भीति ॥
मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥
नानक नामि उधरे पतित बहु मूच ॥ ३ ॥

तीरथ में भी जान जो निकले	मन की ख्वाहिश दूर न हो
तेरे मान गुमान न छूटें	मन से दूर ग़रूर न हो
करके तू दिन रात सफ़ाई	नेकी लाख कमाए जा
लाख जतन कर तन से तेरे	मन का मैल न जाएगा
अपने तन को कष्ट दिए जा	लाखों साधन करता जा
गन्दे जज़्बे[4] दूर न होंगे	मन के भरने भरता जा
फ़ानी[5] तन को मल कर धो ले	पाक मगर यह ख़ाक न हो
धोने से दीवार यह कच्ची	उजली साफ़ और पाक न हो
ऊँचा नाम ख़ुदा का ऐ दिल	जिसकी महिमा गाते हैं
नाम ख़ुदा का लेकर 'नानक'	पापी मुक्ती पाते हैं ॥३॥

---

१ नेवली आदि योग-क्रियाएँ २ संयम ३ तौल ४ भावनाएँ ५ नाशवान्।

बहुतु सिआणप जम का भउ बिआपै ॥
अनिक जतन करि त्रिसन न ध्रापै ॥
भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥
कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥
छूटसि नाही ऊभ पइआलि ॥
मोहि बिआपहि माइआ जालि ॥
अवर करतूति सगली जमु डानै ॥
गोविंद भजन बिनु तिलु नही मानै ॥
हरि का नामु जपत दुखु जाइ ॥
नानक बोलै सहजि सुभाइ ॥ ४ ॥

जितना सयाना[1] बन्दा होगा उतना मौत डराएगी
करता जाए लाख जतन, कब कोशिश प्यास बुझाएगी
मन की आग न ठण्डी होगी भेस अनेक बदलता जा
दरगह में मक़बूल[2] न होगा लाखों चालें चलता जा
जाल बिछाकर माया ने जब मोह का छापा मारा है
जन्नत[3] हो या दोज़ख़[4] हो, फिर कब मिलता छुटकारा है
मौत तेरी करतूत से तुझको कल मुजरिम[5] गरदानेगी
मौत अगर कुछ माँगेगी तो नाम ख़ुदा का माँगेगी
नाम ख़ुदा का लेने से सुख आता है दुख जाता है
'नानक' किस आसानी से यह नाम ज़ुबाँ पर आता है ॥४॥

चारि पदारथ जे को मागै ॥
साध जना की सेवा लागै ॥
जे को आपुना दूखु मिटावै ॥
हरि हरि नामु रिदै सद गावै ॥
जे को अपुनी सोभा लोरै ॥
साध संगि इह हउमै छोरै ॥
जे को जनम मरण ते डरै ॥
साध जना की सरनी परै ॥

---

१ चतुर २ ईश्वर के दरबार में स्वीकृत ३ स्वर्ग ४ नरक ५ अपराधी ।

जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा ।।
नानक ता कै बलि बलि जासा ।। ५ ।।

चार मुरादें[1] असली हैं वह चारों हों मतलूब[2] जिसे
उस बन्दे पर वाजिब[3] है साधुओं की सेवा ख़ूब करे
जिसके मन में ख़्वाहिश हो सब अपने रोग मिटाने की
चाहिए उसको फ़िक्र हमेशा नाम ख़ुदा का गाने की
दुनिया में बा-इज़्ज़त रहना जो बन्दा मंज़ूर करे
साधुओं की संगत में रहकर मान ख़ुदी[4] का दूर करे
चिन्ता जीने मरने की गर मन को रोज़ सताती है
साधुओं के साए में आकर सब चिन्ता मिट जाती है
रब के रौशन के मतवाले प्यासे जो दीदार के हैं
'नानक' ऐसे बन्दों पर क़ुर्बान हूँ मैं क़ुर्बान हूँ मैं ।।५।।

सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ।।
साध संगि जा का मिटै अभिमानु ।।
आपस कउ जो जाणै नीचा ।।
सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ।।
जा का मनु होइ सगल की रीना ।।
हरि हरिनामु तिनि घटि घटि चीना ।।
मन अपुने ते बुरा मिटाना ।।
पेखै सगल स्रिसटि साजना ।।
सूख दूख जन सम द्रिसटेता ।।
नानक पाप पुंन नही लेपा ।। ६ ।।

सब लोगों में पतवाला[5] परधान[6] वही कहलाता है
जो साधुओं की संगत पाकर मान-गुमान[7] मिटाता है
जो बन्दा हर एक से ख़ुद को नीचा गिनने वाला है
उसको सबसे ऊँचा समझो आली है वह बाला है

---

१ धर्म, अर्थ, कांम, मोक्ष (चार पुरुषार्थ) २ वाञ्छित ३ उचित ४ अहंकार
५ इज्जतवाला ६ प्रधान, श्रेष्ठ ७ अहंभाव का भरम ।

जो बन्दा ख़ुद अपने मन को सब की ख़ाक बनाता है
नाम प्रभू का अपने मन के अन्दर रौशन पाता है
जो बन्दा ख़ुद अपने मन से कर ले दूर बुराई को
सब दुनिया को साजन[1] माने समझे यार ख़ुदाई को
सुख से जो ख़ुरसन्द[2] न हो और ग़म से जो ग़मनाक[3] न हो
पाप और पुन की आलाइश[4] से 'नानक' वह क्यों पाक न हो ॥६॥

निरधन कउ धनु तेरो नाउ ॥
निथावे कउ नाउ तेरा थाउ ॥
निमाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥
सगल घटा कउ देवहु दान ॥
करन करावनहार सुआमी ॥
सगल घटा के अंतरजामी ॥
अपनी गति मिति जानहु आपे ॥
आपन संगि आपि प्रभ राते ॥
तुमरी उसतति तुम ते होइ ॥
नानक अवरु न जानसि कोइ ॥ ७ ॥

ज़र[5] से जो बेज़र[6] है उसका माल ख़ज़ाना नाम तेरा
घर से जो बेघर है उसका ठौर ठिकाना नाम तेरा
जिसका कोई मान नहीं उस बे माया[7] का मान है तू
सब दुनिया लेती है तुझसे सब को देता दान है तू
हर कारज का कारन है तू सब का आप सुवामी[8] है
सब के दिल के हाल से वाक़िफ़[9] तू ही अन्तरजामी है
अपने हाल और अपनी हद को मालिक जाने ख़ूब तू ही
अपना है मर्ग़ूब[10] तू ही और अपना है महबूब[11] तू ही
तेरा हम्द[12] तुझी से हो बन्दे का इमकान[13] नहीं
'नानक' और न जाने कोई औरों को पहचान नहीं ॥७॥

---

१ सखा २ मदमस्त ३ दुखी ४ गंदगी ५ धन ६ धनहीन ७ विना माता का ८ स्वामी ९ जानकार १० मनपसन्द ११ प्रेमपात्र १२ स्तुति १३ सामर्थ्य ।

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥
सगल क्रिआ महि ऊतम किरिआ ॥
साध संगि दुरमति मलु हिरिआ ॥
सगल उदम महि उदमु भला ॥
हरि का नामु जपहु जीअ सदा ॥
सगल बानी महि अंम्रित बानी ॥
हरि को जसु सुनि रसन बखानी ॥
सगल थान ते ओहु ऊतम थानु ॥
नानक जिह घटि वसै हरि नामु ॥ ८ ॥

नाम प्रभू का जपते रहना धर्म है आली धर्मों में
नाम ख़ुदा का जपते रहना कर्म है आली कर्मों में
काम यही है सबसे आली ख़ूब अमल में लाता जा
साधुओं की संगत में रहकर मन का मैल हटाता जा
उद्दम[1] है यह अच्छा उद्दम नाम ख़ुदा का जपता जा
नाम ख़ुदा का जप ले हरदम नाम ख़ुदा का जपता जा
हर बानी से अमरित बानी मालिक के गुन गाना है
गुरु से हम्द ख़ुदा की सुनकर नाम ज़ुबाँ पर लाना है
दुनिया के स्थानों में ज़ी-शान[2] वही स्थान रहे
जिसमें जाकर 'नानक' दिल में हरदम रब का ध्यान रहे ॥८॥

सलोकु

निरगुनीआर इआनिआ
सो प्रभु सदा समालि ॥
जिनि कीआ तिसु चीति रखु
नानक निबही नालि ॥ १ ॥

बे गुन मूरख भूल मत कौन है तेरा नाथ
'नानक' उसको याद रख ख़ालिक़[3] देगा साथ

---

१ प्रयत्न, पुरुषार्थ २ शानवाला ३ सिरजनहार ।

असटपदी ४

रमईआ के गुन चेति परानी कवन मूल ते कवन द्रिसटानी ।
जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ।
बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध भरि जोबन भोजन सुख सूध ।
बिरधि भइआ ऊपरि साक सैन मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ।
इहु गिरगुनु गुनु कछू न बूझै बखसि लेहु तउ नानक सीझै ।।१।।

फ़ानी[1] बन्दे सोच ज़रा तौसीफ़[2] तू अपने ख़ालिक़ की
देख तू क्या बन बैठा है और पहले क्या थी असल तेरी
किसने तुझको पाला पोसा रूप अनूप सजाया है
पेट में माँ के गर्मी में तन तेरा आप बचाया है
किसने तुझको बालक पन में मीठा मीठा दूध दिया
जोबन भर कर भोजन बख़्शा चैन दिया बाहोश किया
रिश्तेदार बनाए जो पीरी में[3] देखें भालेंगे
घर में बैठे तेरे मुँह में लुक़मा[4] लाकर डालेंगे
ओ निरगुन[5] इहसास[6] नहीं कुछ तुझको उन इहसानों का
'नानक' आप वह बख़्शे तो हो बेड़ा पार इंसानों का ।।१।।

जिह प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि सुत भ्रात मीत बनिता संगि हसहि ।
जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला सुखदाई पवनु पावकु अमुला ।
जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा सगल समग्री संगि साथि बसा ।
दीने हसत पाव करन नेत्र रसना तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ।
ऐसे दोख मूड़ अंध बिआपे नानक काढि लेहु प्रभ आपे ।।२।।

जिस दाता की रहमत से धरती पर सुख से रहता है
यार बिरादर बीवी बच्चे उनमें हँसता बसता है
जिस दाता की रहमत से तू ठण्डे पानी पीता है
तापे आग अनमोल यहाँ मनमस्त हवा में जीता है
जिस दाता की रहमत से सुख ऐश मिले आराम मिले
जिसकी रहमत से हर हाजत[7] सुबह मिले और शाम मिले

---

१ नाशवान २ सिफ़त ३ बुढ़ापे में ४ नेवाला, कौर ५ कृतघ्नी ६ अनुभूति, ध्यान ७ अभिलाषा, ज़रूरत ।

हाथ दिए हैं पाँव दिए हैं आँखें कान ज़बान भी दी
छोड़ के उसको क्यों भायी है तुझको उल्फ़त ग़ैरों की
मूरख और अन्धा ही ख़ुद को इन ऐबों में डालेगा
'नानक' रहमत वाला मालिक उसको आप निकालेगा ।।२।।

आदि अंति जो राखनहारु तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ।
जा की सेवा नव निधि पावै ता सिउ मूड़ा मनु नही लावै ।
जो ठाकुरु सद सदा हजूरे ता कउ अंधा जानत दूरे ।
जा की टहल पावै दरगह मानु तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ।
सदा सदा इहु भूलनहारु नानक राखनहारु अपारु ।।३।।

वाली[1] है वह अव्वल भी वह आख़िर में भी वाली है
जिसको उससे प्रीत नहीं वह सोच समझ से ख़ाली है
जिसकी सेवा करने से हम नौ गंजीने[2] पाते हैं
मूरख और नादान नहीं मन उसके साथ लगाते हैं
मालिक हाज़िर नाज़िर है वह हर दम पास हज़ूरी है[3]
अन्धा दूर जो समझे उसको हक़ से उसको दूरी है[4]
जिसकी सेवा करने से दरगाह में रब की मान मिले
मूरख उसको भूलेंगे कब जानेंगे जनजान उसे
भूल में है इंसान हमेशा ग़फ़लत करने वाला है
'नानक' वह बे-अन्त ख़ुदा ही हर एक का रखवाला है ।।३।।

रतनु तिआगि कउडी संगि रचै साचु छोडि झूठ संगि मचै ।
जो छडना सु असथिरु करि मानै जो होवनु सो दूरि परानै ।
छोडि जाइ तिसका स्रमु करै संगि सहाई तिसु परहरै ।
चंदन लेपु उतारै धोइ गरधब प्रीति भसम संगि होई ।
अंध कूप महि पतित बिकराल नानक काढि लेहु प्रभ दइआल ।।४।।

फेंक के लालों हीरों को कौड़ी पर जान गवाँता है
हक़ से भागे सच को त्यागे ख़ुश ख़ुश झूठ कमाता है

१ संरक्षक २ नौ निधि ३ ईश्वर हर समय हर स्थान पर मौजूद है ४ उसको दूर समझनेवाला सत्य से दूर है ।

छोड़ के जिसको जाना है वह दायम उसको कहता है
उसको भूले जाता है जो आख़िर होकर रहता है
कष्ट उठाए उसकी ख़ातिर छोड़ के जिसको जाना है
उस संगी को दूर हटाए जो आख़िर काम आना है
चन्दन लेप को मलमल कर धो धोकर दूर हटाता है
ख़रमस्ती[1] में मिट्टी और कीचड़ से प्रीत लगाता है
'नानक' एक तारीक़[2] को मन में उसने ख़ुद को डाला है
बाहर तू ही निकाले उसको तू रब रहमत बाला है ।।४।।

करतूति पसू की मानस जाति लोक पचारा करै दिनु राति ।
बाहरि भेख अंतरि मलु माइआ छपसि नाहि कछु करै छपाइआ ।
बाहरि गिआन धिआन इसनान अंतरि बिआपै लोभु सुआनु ।
अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह गलि पाथर कैसे तरै अथाह ।
जाकै अंतरि बसै प्रभु आपि नानक ते जन सहजि समाति ।।५।।

स्वांग भरे इंसानों की करतूत मगर हैवानों के
छलता है दिन-रात जहाँ को काम करे शैतानों के
भेस बनाए उजला उजला मन में मैली माया है
छिपते हैं करतूत कहाँ गो इसने लाख छिपाया है
ज्ञान कमाए ध्यान लगाए तीरथ का स्नान करे
लोभ का कुत्ता मन में बैठा भौंके और हलकान करे
हिर्स[3] के शोले दिल में भड़कें अंग भभूत रमाई है
गहरा सागर पार हो कब गरदन में सिल लटकाई है
जिसके मन में रब ने आकर डेरा आप जमाया है
चैन है उस बन्दे के मन में 'नानक' सहज समाया है ।।५।।

सुनि अंधा कैसे मारगु पावै करु गहि लेहु ओड़ि निबहावै ।
कहा बुझारति बूझै डोरा निसि कहीऐ तउ समझै भोरा ।
कहा बिसनपद गावै गुंग जतन करै तउ भी सुर भंग ।
कह पिंगुल परबत परभवन नही होत ऊहा उसु गवन ।
करतार करुणामै दीनु बेनती करै नानक तुमरी किरपा तरै ।।६।।

---

१ गधे की मौज २ अँधेरा ३ लोभ, हविस ।

अन्धा हो तो क्योंकर वह सुन सुन कर रस्ता पाएगा
हाथ पकड़कर ले जा उसको जब मंज़िल को जाएगा
बहरा हो जो कानों से किस तौर पहेली बूझेगा
रात की उससे बात कहो तो दिन ही उसको सूझेगा
गूँगा हो तो कब वह मुँह से रात तराने गाएगा
कोशिश भी वह लाख करे बेसुर का शोर मचाएगा
लुंजे में तौफ़ीक़[1] नहीं परबत पर सैर मनाने की
हिम्मत उसमें आए कहाँ से टीलों पर चढ़ जाने की
रहमतवाले मालिक! यह आजिज़[2] एक अर्ज़[3] सुनाता है
'नानक' पर हो रहमत तेरी पार जभी यह जाता है ।।६।।

संगि सहाई सु आवै न चीति जो बैराई ता सिउ प्रीति ।
बलूआ के ग्रिह भीतरि बसै अनद केल माइआ रंगि रसै ।
द्रिड़ु करि मानै मनहि प्रतीति कालु न आवै मूड़े चीति ।
बैर बिरोध काम क्रोध मोह झूठ बिकार महा लोभ ध्रोह ।
इआहू जुगति बिहाने कई जनम नानक राखि लेहु आपन करि करम।७।

याद नहीं अफ़सोस उसे वह साथी जो इमदाद[4] करे
उससे प्रीत लगाता है जो दुश्मन हो बेदाद[5] करे
रेत से जो तामीर[6] हुआ उस घर में उसकी बस्ती है
माया में आनन्द करे रस रंग की उसको मस्ती है
फ़ानी[7] को यह बाक़ी[8] समझे फ़ानी की पहचान नहीं
मस्त है मन की मौजों में कुछ मौत का उसको ध्यान नहीं
बैर अदावत शहवत[9] ग़ुस्सा इस दुनिया से प्यार भी है
भारी लोभ और झूठ दग़ा इन चीज़ों से व्यवहार भी है
इस सूरत से पापों ही में उसने भोगे लाख जनम
'नानक' की है अर्ज़ बचा ले या रब करके मेहर करम ।।७।।

तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि जीउ पिंडु सभु तेरी रासि ।
तुम मात पिता हम बारिक तेरे तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे ।

---

१ सामर्थ्य २ बेसहारा ३ विनय ४ सहायता ५ अनीति, अत्याचार ६ रचा गया ७ नाशवान ८ स्थायी ९ इन्द्रियों का वेग ।

कोइ न जानै तुमरा अंतु ऊचे ते ऊचा भगवंत ।
सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी तुम ते होइ सु आगिआकारी ।
तुमरी गति मिति तुम ही जानी नानक दास सदा कुरबानी ॥८॥

तू मालिक तू ख़ालिक़ मेरा तुझ पर मैं अरदास करूँ
तन मन सब कुछ तेरी माया पेश मैं सारी रास करूँ
तू माँ बाप हमारा है हम बच्चे बाले तेरे हैं
हासिल तेरी रहमत से सुख चैन हमें बहुतेरे हैं
तेरा अन्त न कोई जाने रुतबा तेरा न्यारा है
ऊँचा है तू हर ऊँचे से तू भगवान हमारा है
तार में अपने आप पिरोई तू ने जग की माला है
हुक्म जो तुझसे मिलता है वह होकर रहने वाला है
अपनी हद और अपनी हालत तुझ पर रौशन सारी है
'नानक' तेरा दास है या रब तुझ पर यह बलिहारी है ॥८॥

सलोकु

देनहारु प्रभ छोडि कै
लागहि आन सुआइ ॥
नानक कहू न सीझई
बिनु नावै पति जाइ ॥ १ ॥

दाता का दर छोड़कर ग़ैर को जो अपनाए
'नानक' कब मक़बूल[1] हो नाम तजे पत[2] जाए

असटपदी ५

दस बसतू ले पाछै पावै एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै ।
एक भी न देइ दस भी हिरि लेइ तउ मूड़ा कहु कहा करेइ ।
जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ताकउ कीजै सद नमसकारा ।
जा कै मनि लागा प्रभु मीठा सरब सूख ताहू मनि वूठा ।
जिसु जन अपना हुकमु मनाइआ सरब थोक नानक तिनि पाइआ॥ १॥

---

१ स्वीकृत २ इज़्ज़त ।

दस दस चीज़ें रब से लेकर उनके ढेर लगाता है
एक से जब इनकार हुआ फिर क्यों ईमान गवाँता है
दस चीज़ें भी छीने तुझसे एक से भी इनकारी हो
मूरख बोल करेगा क्या तू (ज़ोर नहीं तू ज़ारी[1] हो)
जिस मालिक पर ज़ोर नहीं तस्लीम उसे ताज़ीम उसे
वह मर्ज़ी का मालिक है ताज़ीम[2] उसे ताज़ीम उसे
मीठा जिसको नाम ख़ुदा का मन उसका मस्रूर[3] रहे
मन उसका मस्रूर रहे वह ख़ुशियों से भरपूर रहे
उस मालिक ने जिस बन्दे से हुक्म अपना मनवाया है
'नानक' उसको घाटा क्या है जो माँगा सो पाया है ॥१॥

अगनत साहु अपनी दे रासि खात पीत बरतै अनद उलासि ।
अपुनी अमान कछु बहुरि साहु लेइ अगिआनी मनि रोसु करेइ ।
अपनी परतीति आप ही खोवै बहुरि उस का बिस्वासु न होवै ।
जिसकी बसतु तिसु आगै राखै प्रभ की आगिआ मानै माथै ।
उस ते चउगुन करै निहालु नानक साहिबु सदा दइआलु ॥२॥

शाह से बन्दा माल और दौलत बे गिनती के पाता है
खाता है कुछ पीता है कुछ बरते[4] ऐश मनाता है
शाह अमानत[5] अपनी से कुछ वापस जब ले जाता है
मन जाहिल फिर रूठ के उससे ग़ुस्से में क्यों आता है
अपनी करतूतों से मूरख अपनी साख गवाँता है
शाह को सब उठ जाए भरोसा भेद भरम खुल जाता है
जिस मालिक की दौलत है रख उस मालिक के आगे तू
मान कहा सर आँखों पर क्यों हुक्म से उसके भागे तू
राज़ी होकर मालिक तुझको चार गुना ख़ुशहाल करे
रहमत वाला साहब हरदम 'नानक' मालामाल करे ॥२॥

अनिक भाति माइआ के हेत सरपर होवत जानु अनेत ।
बिरख की छाइआ सिउ रंगु लावै ओह बिनसै उहु मनि पछुतावै ।
जो दीसै सो चालनहारु लपटि रहिओ तह अंध अंधारु ।

---

१ लाचार २ आदर ३ प्रसन्न ४ बरतता ५ धरोहर ।

बटाऊ सिउ जो लावै नेह ता कउ हाथि न आवै केह ।
मन हरि के नाम की प्रीति सुखदाई करि किरपा नानक आपि लए लाई।। ३।।

माया रंगा रंगी न्यारी जी तेरा परचाती है
पक्की बात समझ ले बन्दे आती है यह जाती है
पेड़ का साया भाया है तू उससे प्रीत लगाता है
जब वह साया जाता है तो पीछे क्यों पछताता है
जो कुछ देख रहा है तू यह सब कुछ जाने वाला है
मन का अंधा लिपटे उनसे वह उनका मतवाला है
राही[1] से जो प्रीत लगाए वह आखिर को रोता है
ख़ाक़ न उसके हाथ लगे दिल देता है सो खोता है
प्रीत करे जो नाम से रब के मन मेरे सुख पाता है
'नानक' अपनी किरपा से वह अपने साथ मिलाता है ।।३।।

मिथिआ तनु धनु कुटंबु सबाइआ मिथिआ हउमै ममता माइआ ।
मिथिआ राज जोबन धन माल मिथिआ काम क्रोध बिकराल ।
मिथिआ रथ हसती अस्व बसत्रा मिथिआ रंग संगि माइआ पेखि हसता।
मिथिआ ध्रोह मोह अभिमानु मिथिआ आपस ऊपरि करत गुमानु ।
असथिरु भगति साध की सरन नानक जपि जपि जीवै हरि के चरन।।४।।

तन और धन और बच्चे बाले फ़ानी हैं सब फ़ानी[2] हैं
माया ख़ुदी[3] तकब्बुर[4] वाले फ़ानी हैं सब फ़ानी हैं
जोबन राज जवानी दौलत फ़ानी हैं सब फ़ानी हैं
काम क्रोध और ग़ुस्सा शहवत फ़ानी हैं सब फ़ानी हैं
रथ पोशाकें घोड़े हाथी फ़ानी हैं सब फ़ानी हैं
ज़र[5] का प्रेम और हँसते साथी फ़ानी हैं सब फ़ानी हैं
मोह फ़रेब तकब्बुर निख़्वत[3] फ़ानी हैं सब फ़ानी हैं
तेरे मान गुमान और शौक़त फ़ानी हैं सब फ़ानी हैं
साधुओं के साए में भगती क़ायम[6] है पाइन्दः[7] है
मालिक के चरनों में 'नानक' नाम को जप कर ज़िन्दः है ।।४।।

---

१ रास्ता चलनेवाले २ नाशवान ३ अहंकार ४ घमण्ड ५ धन ६ स्थायी ७ हमेशा रहनेवाला ।

मिथिआ स्रवन परनिंदा सुनहि मिथिआ हसत परदरब कउ हिरहि ।
मिथिआ नेत्र पेखत परत्रिअ रूपाद मिथिआ रसना भोजन अनस्वाद ।
मिथिआ चरन परबिकार कउ धावहि मिथिआ मन परलोभ लुभावहि ।
मिथिआ तन नही परउपकारा मिथिआ बासु लेत बिकारा ।
बिनु बूझे मिथिआ सभ भए सफल देह नानक हरि हरि नाम लए ॥५॥

कान सुने जो ग़ैर की ग़ैबत[१] फ़ानी है वह फ़ानी है
हाथ जो छीने ग़ैर की दौलत फ़ानी है वह फ़ानी है
आँख जो घूरे ग़ैर की औरत फ़ानी है वह फ़ानी है
जीभ जो ले भोजन की लज़्ज़त फ़ानी है वह फ़ानी है
पाँव जो शर को[२] भागा जाए फ़ानी है वह फ़ानी है
मन जो ग़ैर के धन पे आए फ़ानी है वह फ़ानी है
कोई न हो जिस तन से नेकी फ़ानी है वह फ़ानी है
नाक जो सूँघे बास बदी की फ़ानी है वह फ़ानी है
जब तक मन में ज्ञान न हो हर चीज़ जहाँ[३] की फ़ानी है
'नानक' रब का नाम लिये फल देना तन इंसानी है ॥५॥

बिरथी साकत की आरजा साच बिना कह होवत सूचा ।
बिरथा नाम बिना तनु अंध मुखि आवत ता कै दुरगंध ।
बिनु सिमरन दिनु रैनि ब्रिथा बिहाइ मेघ बिना जिउ खेती जाइ ।
गोबिद भजन बिनु ब्रिथे सभ काम जिउ किरपन के निरारथ दाम ।
धंनि धंनि ते जन जिह घटि बसिओ हरिनाउ,
नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥६॥

जाएँ अकारथ रब के मुनकिर[४] काफ़िर[५] कुफ़्र[६] कमाएँगे
सच से जब तक काम न लेंगे पाक कहाँ हो जाएँगे
जाएँ अकारथ नाम से जो ख़ाली हैं दिल के अन्धे हैं
उनके मुँह से आए अफ़ूनत[७] बन्दे गन्दे मन्दे हैं
जाए अकारथ जीना जिसमें नाम कहीं दिन रात न हो
सूख के जल जाएगी खेती जब उस पर बरसात न हो

१ परोक्षनिन्दा २ बुराई की ओर ३ संसार ४ ईश्वर-विमुख ५ अधर्मी ६ अधर्म ७ दुर्गन्ध ।

भाड़ में जाएँ काम जहाँ के जिनमें रब का नाम नहीं
भाड़ में जाए सूम की दौलत जिससे कुछ आराम नहीं
मन में जिनके नाम ख़ुदा का उनकी क़िस्मत न्यारी है
'नानक' दिल क़ुर्बान है उन पर जान मेरी बलिहारी है ॥६॥

रहत अवर कछु अवर कमावत मनि नही प्रीति मुखहु गंढ लावत ।
जाननहार प्रभू परबीन बाहरि भेख न काहू भीन ।
अवर उपदेसै आपि न करै आवत जावत जनमै मरै ।
जिस कै अंतरि बसै निरंकारु तिस की सीख तरै संसारु ।
जो तुम भाने तिन प्रभु जाता नानक उन जन चरन पराता ॥७॥

फ़र्ज़ हो उसका और मगर वह काम सब उल्टे करता जाए
दिल में उसके प्रेम नहीं गो उल्फ़त[1] के दम भरता जाए
जाननहार ख़ुदा के आगे जो वाक़िफ़ है ऐबों का
भेस न उसका काम आएगा भेद खुलेगा ऐबों का
और को जो उपदेश करे ख़ुद काम न वैसे करता है
आता है वह जाता है वह जीता है वह मरता है
जिसके मन में बसने वाला आप वह निरंकार हुआ
उसके पाक उपदेशों से दुनिया का बेड़ा पार हुआ
बन्दे जो मक़बूल तेरे हैं दाना[2] तुझको जानेंगे
पाँव पे उनके शीश झुकाकर 'नानक' उनको मानेंगे ॥७॥

करउ बेनती पारब्रहमु सभु जानै अपना कीआ आपहि मानै ।
आपहि आप आपि करत निबेरा किसै दूरि जनावत किसै बुझावत नेरा।
उपाव सिआनप सगल ते रहत सभु कछु जानै आतम की रहत ।
जिसु भावै तिसु लए लड़ि लाइ थान थनंतरि रहिआ समाइ ।
सो सेवकु जिसु किरपा करी निमख निमख जपि नानक हरी॥८॥

अर्ज़ गुज़ारूँ रब आली से आप ही सब कुछ जाने वह
सब का पैदा करने वाला मान हमारा माने वह
जो चाहे ख़ुद आप निबेड़े[3] ग़ैरों से वह काम न ले
एक को दूर सुझाई दे और एक को पास दिखाई दे

---

१ प्रेम २ बुद्धिस्वरूप ३ निबटाए ।

ज़ात बड़ी और पाक उसी की — सब तरकीबों चालों से
वाक़िफ़[1] है वह दिल के मख़्फ़ी[2] — हालों और ख़यालों से
अपने साथ मिला ले उसको — जो उसके मन भाया है
हाज़िर है वह नाज़िर है वह — जग में आप समाया है
उसका सेवक हो जाता है — जिस पर उसकी रहमत है
पल पल नाम लिये जा उसका — नाम ही उसका न्यामत है ॥८॥

सलोकु

काम क्रोध अरु लोभ मोह
बिनसि जाइ अहंमेव ॥
नानक प्रभ सरणागती
करि प्रसादु गुरदेव ॥ १ ॥

काम क्रोध और लोभ मोह — जाएँ मान गुमान
रहमत हो गुरु देव की — 'नानक' पाए ईमान

असटपदी ६

जिह प्रसादि छतीह अंम्रित खाहि — तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ।
जिह प्रसादि सुगंधत तनि लावहि — तिस कउ सिमरत परम गति पावहि।
जिह प्रसादि बसहि सुख मंदरि — तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि ।
जिह प्रसादि ग्रिह संगि सुख बसना — आठ पहर सिमरहु तिसु रसना ।
जिह प्रसादि रंग रस भोग — नानक सदा धिआईऐ धिआवन जोग॥१॥

जिस दाता की रहमत से — छत्तीस तू अमरित खाता है
उस मालिक को याद किए जा — भूल उसे क्यों जाता है
जिस दाता की रहमत से — तू इतर फुलेल लगाता है
नाम उसी का जपने से — मुक्ती का रस्ता पाता है
जिस दाता की रहमत से — जा रहता है सुख मन्दिर तू
उसका ध्यान किए जा मन में — नाम बसाए अन्दर तू

---

१ जानकार २ गुप्त ।

जिस दाता की रहमत से तू कुनबे[1] में आराम करे
लाज़िम है फिर आठ पहर तू याद उसी का नाम करे
जिस दाता की रहमत से तन मन का तुझको ऐश मिले
'नानक' है वह ध्यान के क़ाबिल हर दम कर ले याद उसे ॥१॥

जिह प्रसादि पाट पटंबर हढावहि तिसहि तिआगि कत अवर लुभावहि।
जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै मन आठ पहर ताका जसु गावीजै ।
जिह प्रसादि तुझु सभु कोऊ मानै मुखि ताको जसु रसन बखानै ।
जिह प्रसादि तेरो रहता धरमु मन सदा धिआइ केवल पारब्रहमु ।
प्रभ जी जपत दरगह मानु पावहि नानक पति सेती घरि जावहि ॥२॥

जिस दाता की रहमत से तू रेशम पहना करता है
छोड़ के उसकी उल्फ़त को क्यों ग़ैरों का दम भरता है
जिस दाता की रहमत से तू सोये सुख की सेजों पर
गाए जा गुन गाए जा ऐ दिल तू उसके आठ पहर
जिस दाता की रहमत से तू पाए इज़्ज़त शान सदा
मुँह से और ज़ुबाँ से अपनी कर ले उसकी हम्द[2] सना[3]
जिस दाता की रहमत से तू धर्म पे अपने क़ायम हो
खालिस ध्यान उस पाक ख़ुदा का चाहिए मन में दायम[4] हो
नाम प्रभू का जपने से दरगाह में इज़्ज़त पाएगा
'नानक' फिर बाइज़्ज़त होकर तू अपने घर जाएगा ॥२॥

जिह प्रसादि आरोग कंचन देही लिव लावहु तिसु राम सनेही ।
जिह प्रसादि तेरा ओला रहत मन सुखु पावहि हरि हरि जसु कहत।
जिह प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ता कै ।
जिह प्रसादि तुझु को न पहूचै मन सासि सासि सिमरहु प्रभ ऊचे ।
जिह प्रसादि पाई द्रुलभ देह नानक ताकी भगति करेह ॥३॥

जिस दाता की रहमत से बेरोग सुनहरी काया पाए
लाज़िम है उस प्यारे रब पर प्रेम से अपना ध्यान जमाए
जिस दाता की रहमत से पत तेरी क़ायम रहती है
उसकी हम्द सना करने से राहत दायम रहती है

---

१ परिवार २ स्तुति ३ गुणगान ४ हमेशा, स्थायी ।

जिस दाता की रहमत से हर ऐब तेरा मस्तूर[१] रहे
आ जा उसके साए में क्यों रब आली से दूर रहे
जिस दाता की रहमत से तू ख़ल्क़ में हस्ती आली है[२]
ऐ मेरे मन याद से उसकी साँस तेरा क्यों ख़ाली है
जिस दाता की रहमत से यह तन तुझको नायाब मिला
उसकी भक्ती करले 'नानक' उसकी भक्ती करता जा ।।३।।

जिह प्रसादि आभूषन पहिरीजै मन तिसु सिमरत किउ आलसु कीजै।
जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी।
जिह प्रसादि बाग मिलख धना राखु परोइ प्रभु अपुने मना ।
जिनि तेरी मन बनत बनाई ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई ।
तिसहि धिआइ जो एकु अलखै ईहा ऊहा नानक तेरी रखै ।।४।।

जिस दाता की रहमत से तू गहने पहने फिरता है
ऐ मन मेरे याद कर उसको क्यों मस्ती में घिरता है
जिस दाता की रहमत से चढ़ने को घोड़े हाथी पाए
ऐ मन मेरे लाज़िम है उस रब बारी[३] को भूल न जाए
जिस दाता की रहमत से तू दौलत बाग़ ज़मीं पाए
ऐ दिल उसका नाम पिरो कर सुन्दर मन का हार पिरोए
जो दाता ऐ मन मेरे यह तेरा ढाँचः आबाद करे
लाज़िम है जब उट्ठे बैठे हरदम उसको याद करे
एक अलख की याद किए जा जो बाला से बाला है
अब भी वह रखवाला 'नानक' आगे भी रखवाला है ।।४।।

जिह प्रसादि करहि पुंन बहु दान मन आठ पहर करि तिसका धिआन।
जिह प्रसादि तू आचार बिउहारी तिसु प्रभ कउ सासि सासि चितारी।
जिह प्रसादि तेरा सुंदर रूपु सो प्रभु सिमरहु सदा अनूपु ।
जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति ।
जिह प्रसादि तेरी पति रहै गुर प्रसादि नानक जसु कहै ।।५।।

जिस दाता की रहमत से तू कस्रत[४] से पुन दान करे
आठ पहर लाज़िम है ऐ दिल उस दाता का ध्यान करे

---

१ छिपा हुआ २ जीवोत्तम ३ स्रष्टा ४ बहुतायत ।

जिस दाता की रहमत से तू अच्छे करम कमाता है
कर ले याद उस रब को हरदम भूल उसे क्यों जाता है
जिस दाता की रहमत से यह सुन्दर रूप जवानी है
उस दाता को याद किए जा मालिक वह लासानी है
जिस दाता की रहमत से तू हासिल ऊँची ज़ात करे
लाज़िम है फिर उस दाता की याद सदा दिन रात करे
जिस दाता की रहमत से दुनिया में इज़्ज़त पाए तू
'नानक' गुरु की रहमत से उस दाता के गुन गाए तू ॥५॥

जिह प्रसादि सुनहि करन नाद जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद ।
जिह प्रसादि बोलहि अंम्रित रसना जिह प्रसादि सुखि सहजे बसना ।
जिह प्रसादि हसत कर चलहि जिह प्रसादि संपूरन फलहि ।
जिह प्रसादि परम गति पावहि जिह प्रसादि सुखि सहजि समावहि।
ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु गुर प्रसादि नानक मनि जागहु॥६॥

जिस दाता की रहमत से सुनता है नग़में[1] प्यारे तू
जिस दाता की रहमत से दिलकश देखे नज़्ज़ारे[2] तू
जिस दाता की रहमत से तू अमरित जैसी बात करे
जिस दाता की रहमत से सुख सहज यहाँ दिन रात करे
जिस दाता की रहमत से हर काम में तेरा हाथ चले
जिस दाता की रहमत से तू जग में फूले और फले
जिस दाता की रहमत से तू आली मुक्ती पाता है
जिस दाता की रहमत से तू सुख आनन्द मनाता है
छोड़ के ऐसे दाता को क्यों ग़ैर को ढूँढे बोल ज़रा
'नानक' गुरु की बख़्शिश से तू मन की आँखें खोल ज़रा ॥६॥

जिह प्रसादि तूं प्रगटु संसारि तिसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि।
जिह प्रसादि तेरा परतापु रे मन मूड़ तू ता कउ जापु ।
जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे तिसहि जानु मन सदा हजूरे ।

---

१ मनोहर गीत २ दृश्य ।

जिह प्रसादि तूं पावहि साचु रे मन मेरे तूं ता सिउ राचु ।
जिह प्रसादि सभ की गति होइ नानक जापु जपै जपु सोइ ।।७।।

जिस दाता की रहमत से संसार में इज़्ज़त पाए तू
उस दाता को याद किए जा उसको भूल न जाए तू
जिस दाता की रहमत से यह शान और शौकत मिलती है
ओ मन मूरख याद कर उसको याद से इज़्ज़त मिलती है
जिस दाता की रहमत से हर ख़्वाहिश तेरी पूरी हो
हाज़िर नाज़िर जान उसे हर लहज़ा पाक हज़ूरी हो
जिस दाता की रहमत से तू सच की दौलत पाएगा
ऐ मन मेरे रच जा उसमें प्रेम से निअमत पाएगा
जिस दाता की रहमत से दुनिया का पार उतारा है
जपता है नाम उसी का 'नानक' नाम उसी का प्यारा है ।।७।।

आपि जपाए जपै सो नाउ आपि गावाए सु हरिगुन गाउ ।
प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु प्रभू दइआ ते कमल बिगासु ।
प्रभ सु प्रसंन बसै मनि सोइ प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ ।
सरब निधान प्रभ तेरी मइआ आपहु कछू न किनहू लइआ ।
जितु जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ नानक इन कै कछू न हाथ ।।८।।

नाम प्रभू का जपता है तौफ़ीक़[1] जो उससे पाता है
जिस पर रहमत होती है वह दाता के गुन गाता है
रब की रहमत जिस पर होगी नूर[2] उसे मिल जाएगा
रब की रहमत जिस पर होगी साफ़ कमल खिल जाएगा
रब की रहमत हो तो मन में बसता है हर आन वही
रब की रहमत जिस पर होगी आक़िल है इन्सान वही
माल खज़ाने बख़्शिश तेरी तू ही सबका दाता है
दाता आप न बख़्शे जब तक कौन यहाँ कुछ पाता है
मालिक जो जो हुक्म करे वह करना काम हमारा है
'नानक' के कुछ हाथ नहीं बल ज़ोर उसी का सारा है ।।८।।

---

१ सामर्थ्य २ प्रकाश ।

सलोकु

अगम अगाधि पारब्रहमु सोइ ॥
जो जो कहै सु मुकता होइ ॥
सुनि मीता नानकु बिनवंता ॥
साध जना की अचरज कथा ॥ १ ॥

रब की आली ज़ात है जिसकी थाह न आए
जो जो उसका नाम ले नाम से मुक्ती पाए
'नानक' की यह अर्ज़ है सुन ले मेरे मीत
बात निराली साध की कर साधों से प्रीत

असटपदी ७

साध कै संगि मुख ऊजल होत साध संगि मलु सगली खोत ।
साध कै संगि मिटै अभिमानु साध कै संगि प्रगटै सुगिआनु ।
साध कै संगि बुझै प्रभु नेरा साध संगि सभु होत निबेरा ।
साध कै संगि पाए नाम रतनु साध कै संगि एक ऊपरि जतनु ।
साध की महिमा बरनै कउनु प्रानी,
नानक साध की सोभा प्रभ माहि समानी ॥ १ ॥

साध की संगत करले बन्दे चेहरा हो पुरनूर[1] तेरा
साध की संगत करले बन्दे मैल हो मन का दूर तेरा
साध की संगत करले बन्दे जाएगा सब मान ग़रूर
साध की संगत करले बन्दे ज्ञान का हो सब नूर हज़ूर
साध की संगत करले बन्दे क़ुर्ब[2] ख़ुदा का पाएगा
साध की संगत करले बन्दे सब धन्धा मिट जाएगा
साध की संगत करले बन्दे नाम ख़ुदा का हीरा पाए
साध की संगत करले बन्दे एक ख़ुदा पर जान लड़ाए
किस फ़ानी[3] को क़ुदरत है जो साधुओं की तारीफ़ करे
'नानक' रब की हम्द करे जो साधुओं की तौसीफ़[4] करे ॥१॥

---

१ प्रकाशमय २ सामीप्य ३ नाशवान् ४ गुणगान ।

साध कै संगि अगोचरु मिलै साध कै संगि सदा परफुलै ।
साध कै संगि आवहि बसि पंचा साध संगि अंम्रित रसु भुंचा ।
साध संगि होइ सभ की रेन साध कै संगि मनोहर बैन ।
साध कै संगि न कतहूं धावै साध संगि असथिति मनु पावै ।
साध कै संगि माइआ ते भिंन साध संगि नानक प्रभ सु प्रसंन ।।२।।

साध की संगत करले बन्दे अनदेखा रब पाएगा
साध की संगत करले बन्दे फूल के फलता जाएगा
साध की संगत करले बन्दे पाँचों जज़्बों[1] पर हो बस[2]
साध की संगत करले बन्दे नाम का पाए अमरित रस
साध की संगत करले बन्दे बन कर सब की ख़ाक रहे
साध की संगत करले बन्दे बातें सुन्दर पाक कहे
साध की संगत करले बन्दे मन फिर क्यों आवारा[3] हो
साध की संगत करले बन्दे क़ायम मन का पारा हो
साध की संगत करले बन्दे माया मन से दूर रहे
साध की संगत करले 'नानक' रब तुझसे मसरूर[4] रहे ।।२।।

साध संगि दुसमन सभि मीत साधू कै संगि महा पुनीत ।
साध संगि किस सिउ नही बैरु साध कै संगि न बीगा पैरु ।
साध कै संगि नाही को मंदा साध संगि जाने परमानंदा ।
साध कै संगि नाही हउ तापु साध कै संगि तजै सभु आपु ।
आपे जानै साध बडाई नानक साध प्रभू बनि आई ।।३।।

साध की संगत करले बन्दे दुश्मन भी हों यार तमाम[5]
साध की संगत करले बन्दे आला हों कर्दार[6] तमाम
साध की संगत करले बन्दे पास न आए बैर कभी
साध की संगत करले बन्दे जाएँ न टेढ़े पैर कभी
साध की संगत करले बन्दे बद न किसी को पाएगा
साध की संगत करले बन्दे अब्दी - चैन[7] मनाएगा

---

१ पाँचों इन्द्रियों २ संयम ३ भटकनेवाला ४ प्रसन्न ५ शत्रु भी मित्र हो जायें ६ आमाल, आचरण ७ भक्तों को सुलभ परमानन्द ।

साध की संगत करले बन्दे तप न ख़ुदी की[1] आएगी
साध की संगत करले बन्दे ख़ुदराई[2] सब जाएगी
आप ख़ुदा ही जाने दो सन्तों की शान बड़ाई है
'नानक' साधुओं और ख़ुदा इन दोनों की बन आई है ।।३।।

साध कै संगि न कबहू धावै साध कै संगि सदा सुखु पावै ।
साध संगि बसतु अगोचर लहै साधू कै संगि अजरु सहै ।
साध कै संगि बसै थानि ऊचै साधू कै संगि महलि पहूचै ।
साध कै संगि द्रिड़ै सभि धरम साध कै संगि केवल पारब्रहम ।
साध कै संगि पाए नाम निधान नानक साधू कै कुरबान ।।४।।

साध की संगत करले बन्दे मन की भटकन जाएगी
साध की संगत करले बन्दे हरदम राहत आएगी
साध की संगत करले बन्दे बातिन[3] का सब भेद खुले
साध की संगत करले बन्दे अनसहनी[4] आसान सहे
साध की संगत करले बन्दे आला मंज़िल[5] पाएगा
साध की संगत करले बन्दे रब के घर में जाएगा
साध की संगत करले बन्दे पुख़्ता फिर ईमान रहे
साध की संगत करले बन्दे खालिस[6] रब में ध्यान रहे
साध की संगत करले बन्दे नाम की पाए दौलत ज़र
'नानक' मैं क़ुर्बान गया इन साधुओं पर इन संतों पर ।।४।।

साध कै संगि सभ कुल उधारै साध संगि साजन मीत कुटंब निसतारै ।
साधू कै संगि सो धनु पावै ज़िसु धन ते सभु को वरसावै ।
साध संगि धरमराइ करे सेवा साध कै संगि सोभा सुरदेवा ।
साधू कै संगि पाप पलाइन साध संगि अंम्रित गुन गाइन ।
साध कै संगि स्रब थान गंमि नानक साध कै संगि सफल जनंम ।।५।।

साध की संगत करने से कुल कुनबे[7] का हो बेड़ा पार
साध की संगत करने से बच जाए क़बीला साजन यार

---

१ अहंकार की आँच २ स्वेच्छाचार ३ हृदय ४ असह्य ५ गति ६ एकमात्र ७ सारे परिवार ।

साध की संगत करने से तू ऐसी दौलत पाएगा
जिस दौलत से औरों पर भी तू रहमत बरसाएगा
साध की संगत करने से ख़ुद सेवाधर्मी राज करे
साध की संगत करने से इन्दर भी तुझको सोभावे
साध की संगत करने से सब पाप तेरे झड़ जाते हैं
साध की संगत करने से हम अमरित से गुन गाते हैं
साध की संगत करने से हर मंज़िल को जा लेता है
साध की संगत करने से 'नानक' जीना फल देता है[1] ।।५।।

साध कै संगि नही कछ घाल दरसनु भेटत होत निहाल ।
साध कै संगि कलूखत हरै साध कै संगि नरक परहरै ।
साध कै संगि ईहा ऊहा सुहेला साध संगि बिछुरत हरि मेला ।
जो इछै सोई फलु पावै साध कै संगि न बिरथा जावै ।
पारब्रहमु साध रिद बसै नानक उधरै साध सुनि रसै ।।६।।

साध की संगत करने से सब कष्ट मुसीबत दूर रहे
साध के दर्शन होने से इन्सान सदा मसरूर[2] रहे
साध की संगत करने से सब दाग़ और धब्बे धोये जाएँ
साध की संगत करने से हम दोज़ख़ से छुटकारा पाएँ
साध की संगत करने से सुख दोनों जग में[3] पाते हैं
साध की संगत करने से जो बिछुड़े हैं मिल जाते हैं
साध की संगत करने से जो चाहेगा फल पाएगा
साध की संगत करने से इंसान न ख़ाली जाएगा
साध के मन मन्दिर के अन्दर आली रब का नाम रहे
साध की मीठी बात से 'नानक' नेक तेरा अंजाम[4] रहे ।।६।।

साध कै संगि सुनउ हरि नाउ साध संगि हरि के गुन गाउ ।
साध कै संगि न मन ते बिसरै साध संगि सरपर निसतरै ।
साध कै संगि लगै प्रभु मीठा साधू कै संगि घटि घटि डीठा ।
साध संगि भए आगिआकारी साध संगि गति भई हमारी ।
साध कै संगि मिटे सभि रोग नानक साध भेटे संजोग ।।७।।

---

१ जीवन सफल होता है २ प्रसन्न ३ लोक-परलोक दोनों में ४ अन्त, परिणाम ।

साध की संगत करने से रब नाम[1] सदा सुन पाओगे
साध की संगत करने से उस दाता के गुन गाओगे
साध की संगत करने से हम नाम ख़ुदा का भूल न जाएँ
साध की संगत करने से इंसान यक़ीनन[2] मुक्ती पाएँ
साध की संगत करने से हो मीठा रब का नाम सदा
साध की संगत करने से हर दिल में देखें नूरे ख़ुदा[3]
साध की संगत करने से हम सब फ़र्माबर्दार[4] हुए
साध की संगत करने से सब बेड़े अपने पार हुए
साध की संगत करने से जो रोग भी हों मिट जाएँगे
'नानक' अच्छे भागों वाले साध की संगत पाएँगे ॥७॥

साध की महिमा बेद न जानहि जेता सुनहि तेता बखिआनहि ।
साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि साध की उपमा रही भरपूरि ।
साध की सोभा का नाही अंत साध की सोभा सदा बेअंत ।
साध की सोभा ऊच ते ऊची साध की सोभा मूच ते मूची ।
साध की सोभा साध बनि आई नानक साध प्रभ भेदु न भाई ॥८॥

शान है ऊँची साधुओं की जो वेद कहाँ बतलाते हैं
सुन पाते हैं जितना जितना उतने ही गुन गाते हैं
शान है ऊँची साधुओं की जो तीन गुनों से दूर रहे
शान है ऊँची साधुओं की जग जिससे कुल भरपूर रहे
शान है ऊँची साधुओं की जिस शान का अन्त अंजाम नहीं
शान है ऊँची साधुओं की जो होती ख़त्म तमाम नहीं
शान है ऊँची साधुओं की जो हर बाला[5] से बाला है
शान है ऊँची साधुओं की जो हर आला से आला है
शान है ऊँची साधुओं की जो साधुओं को रास आई है[6]
'नानक' रब और साधुओं में कहता है कौन जुदाई[7] है ॥८॥

---

१ प्रभु का नाम २ निश्चय ३ ईश्वर का प्रकाश ४ आज्ञाकारी ५ श्रेष्ठ
६ संतों की बड़ाई संतों को ही बन आई है ७ विभिन्नता ।

सलोकु

मनि साचा मुखि साचा सोइ ।
अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ।
नानक इह लछण ।
ब्रहमगिआनी होइ ।

जिसके मन में सच बसे सच्ची जिसकी बात
आस न रक्खे ग़ैर की जाने एक ही ज़ात
रब का उसको ज्ञान है ग़ैर न उसको भाए
'नानक' जिसके वस्फ़[1] यह ब्रह्मज्ञानी कहलाए

असटपदी ८

ब्रहमगिआनी सदा निरलेप ।।
जैसे जल महि कमल अलेप ।।
ब्रहमगिआनी सदा निरदोख ।।
जैसे सूरु सरब कउ सोख ।।
ब्रहमगिआनी कै द्रिसटि समानि ।।
जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ।।
ब्रहमगिआनी कै धीरजु एक ।।
जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप ।।
ब्रहमगिआनी का इहै गुनाउ ।।
नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ।। १ ।।

जिसके मन में ज्ञान प्रभू का दुनिया से नापाक न हो
जैसे फूल कवँल का जल में खुश्क रहे नमनाक[2] न हो
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का वह दायम[3] बेदाग़[4] रहे
जैसे सूरज सूख सुखा कर हर शह पाक और साफ़ करे
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का सब को देखे एक नज़र
यकसाँ जैसे आये हवा राजाओं और कंगालों पर

---

१ गुण २ गीला ३ हमेशा ४ निर्विकार, निर्दोष ।

जिसके मन में ज्ञान प्रभू का सब्र से हरदम काम वो ले
जैसे धरती को इक खोदे इक चन्दन का लेप करे
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का गुन वाला गुनवान है वह
आतिश[1] जैसी फ़ितरत[2] उसकी 'नानक' पाक इंसान है वह ।।१।।

ब्रहमगिआनी निरमल ते निरमला ।।
जैसे मैलु न लागै जला ।।
ब्रहमगिआनी कै मनि होइ प्रगासु ।।
जैसे धर ऊपरि आकासु ।।
ब्रहमगिआनी कै मित्र सत्रु समानि ।।
ब्रहमगिआनी कै नाही अभिमान ।।
ब्रहमगिआनी ऊच ते ऊचा ।।
मनि अपनै है सभ ते नीचा ।।
ब्रहमगिआनी से जन भए ।।
नानक जिन प्रभु आपि करेइ ।। २ ।।

जिनके मन में ज्ञान ईश का दिल का पाक और साफ़ है वह
मैल लगे कब पानी को जब निथरे तो शफ़्फ़ाफ़[3] है वह
जिसके मन में ज्ञान, ईश का उसमें नूर समाया है
देखो जैसे धरती पर आकाश बराबर छाया है
जिसके मन में ज्ञान ईश का दुश्मन दोस्त बराबर हैं
जिसके मन में ज्ञान ईश का उससे दूर ख़ुदी[4] की मैं[5]
जिसके मन में ज्ञान ईश का वह आला से आला है
सबसे खुद को नीचा समझे गो बाला से बाला है
रब का ज्ञान उसी को हो रब जिसको ज्ञानी आप बनाए
'नानक' ज्ञान उसी को होगा मालिक जिसको आप सिखाए ।।२।।

ब्रहमगिआनी सगल की रीना ।।
आतम रसु ब्रहमगिआनी चीना ।।
ब्रहमगिआनी की सभ ऊपर मइआ ।।
ब्रहमगिआनी ते कछु बुरा न भइआ ।।

---

१ आग २ स्वभाव ३ निर्मल ४ अहंभाव ५ नशा ।

ब्रहमगिआनी सदा समदरसी ॥
ब्रहमगिआनी की द्रिसटि अंम्रितु बरसी ॥
ब्रहमगिआनी बंधन ते मुकता ॥
ब्रहमगिआनी की निरमल जुगता ॥
ब्रहमगिआनी का भोजनु गिआन ॥
नानक ब्रहमगिआनी का ब्रहम धिआनु ॥ ३ ॥

जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का खुद को सबकी खाक बताए
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का वह रूहानी[1] लज़्ज़त[2] पाए
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का सब पर शफ़क़त[3] करता जाए
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का शर[4] उसके नज़दीक न आए
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का नैन उसके अमरित बरसाएँ
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का एक नज़र सब उसको भाएँ
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का हर बन्धन से मुक्ती पाए
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का वह नेकी के रस्ते जाए
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का उसका भोजन रब का ज्ञान
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का 'नानक' उसका रब में ध्यान ॥३॥

ब्रहमगिआनी एक ऊपरि आस ॥
ब्रहमगिआनी का नही बिनास ॥
ब्रहमगिआनी कै गरीबी समाहा ॥
ब्रहमगिआनी परउपकार उमाहा ॥
ब्रहमगिआनी कै नाही धंधा ॥
ब्रहमगिआनी ले धावतु बंधा ॥
ब्रहमगिआनी कै होइ सु भला ॥
ब्रहमगिआनी सुफल फला ॥
ब्रहमगिआनी संगि सगल उधारु ॥
नानक ब्रहमगिआनी जपै सगल संसारु ॥ ४ ॥

---

१ आध्यात्मिक २ स्वाद ३ सहानुभूति ४ बदी।

जिसके मन में ज्ञान प्रभू का एक ख़ुदा पर आस लगाए
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का मौत भी उसके पास न आए
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का वह मिस्कीं[1] तबियत पाए
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का रहमो-करम पर[2] उमड़ा आए
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का सब धन्धों से यकसू[3] हो
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का उसको मन पर क़ाबू हो
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का उससे हों सब काम भले
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का जग में फूले और फले
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का उसकी संगत कर दे पार
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का 'नानक' गुन गाए संसार ।।४।।

ब्रहमगिआनी कै एकै रंग ।।
ब्रहमगिआनी कै बसै प्रभु संग ।।
ब्रहमगिआनी कै नामु आधारु ।।
ब्रहमगिआनी कै नामु परवारु ।।
ब्रहमगिआनी सदा सद जागत ।।
ब्रहमगिआनी अहंबुधि तिआगत ।।
ब्रहमगिआनी कै मनि परमानंद ।।
ब्रहमगिआनी कै घरि सदा अनंद ।।
ब्रहमगिआनी सुख सहज निवास ।।
नानक ब्रहमगिआनी का नही बिनास ।। ५ ।।

जिसके मन में ज्ञान ईश का उल्फ़त[4] भी यक रंग[5] रहे
जिसके मन में ज्ञान ईश का रब भी उसके संग रहे
जिसके मन में ज्ञान ईश का नाम उसका आधार रहे
जिसके मन में ज्ञान ईश का नाम उसका परिवार रहे
जिसके मन में ज्ञान ईश का रहता है बेदार[6] सदा
जिसके मन में ज्ञान ईश का दूर उससे पन्दार[7] सदा
जिसके मन में ज्ञान ईश का मन उसका ख़ुरसन्द[8] रहे
जिसके मन में ज्ञान ईश का घर उसके आनन्द रहे

---

१ विनम्र २ परोपकार पर ३ निश्चिंत ४ प्रेम ५ एक ही रूप यानी ईश्वर के प्रति ही ६ जाग्रत ७ दंभ, घमण्ड ८ प्रसन्न ।

जिसके मन में ज्ञान ईश का चैन और सुख में बसता जाए
जिसके मन में ज्ञान ईश का 'नानक' वह कब मिटने पाए ॥५॥

ब्रहमगिआनी ब्रहम का बेता ॥
ब्रहमगिआनी एक संगि हेता ॥
ब्रहमगिआनी कै होइ अचिंत ॥
ब्रहमगिआनी का निरमल मंत ॥
ब्रहमगिआनी जिसु करै प्रभु आपि ॥
ब्रहमगिआनी का बड परताप ॥
ब्रहमगिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ ॥
ब्रहमगिआनी कउ बलि बलि जाईऐ ॥
ब्रहमगिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥
नानक ब्रहमगिआनी आपि परमेसुर ॥ ६ ॥

जिसके मन में ज्ञान प्रभू का ब्रह्मज्ञानी कहलाता है
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का एक से प्रेम लगाता है
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का चिन्ता उससे दूर रहे
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का पाक उसका दस्तूर[1] रहे
उसके मन में ज्ञान प्रभू का जिसको देता वाली[2] है
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का उसकी शान निराली है
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का क़िस्मत ही से पायें हम
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का बल-बल उसके जायें हम
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का ढूंढे उसको महेश्वर आप
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का 'नानक' वह परमेश्वर आप ॥६॥

ब्रहमगिआनी की कीमति नाहि ॥
ब्रहमगिआनी कै सगल मन माहि ॥
ब्रहमगिआनी का कउन जानै भेदु ॥
ब्रहमगिआनी कउ सदा अदेसु ॥

---

१ नियम-व्यवहार २ संरक्षक, परमात्मा ।

ब्रहमगिआनी का कथिआ न जाइ अधाख्यरु ॥
ब्रहमगिआनी सरब का ठाकुरु ॥
ब्रहमगिआनी की मिति कउनु बखानै ॥
ब्रहमगिआनी की गति ब्रहमगिआनी जानै ॥
ब्रहमगिआनी का अंतु न पारु ॥
नानक ब्रहमगिआनी कउ सदा नमसकारु ॥ ७ ॥

जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का बन्दा है अनमोल वही
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का रौशन उस पर हाल सभी
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का जाने उसका भेद ख़ुदा
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का उसको है आदेश[1] सदा
ज्ञानी की तारीफ़ में हम से आधा हर्फ़ न लिक्खा जाए
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का सबका वह ठाकुर[2] कहलाए
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का कौन [illegible] उसे पहचानेगा
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का ज्ञानी उसको जानेगा
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का अन्त न उसका है अंजाम
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का 'नानक' उसको नित परनाम ॥७॥

ब्रहमगिआनी सभ स्रिसटि का करता ॥
ब्रहमगिआनी सद जीवै नही मरता ॥
ब्रहमगिआनी मुकति जुगति जीअ का दाता ॥
ब्रहमगिआनी पूरन पुरखु बिधाता ॥
ब्रहमगिआनी अनाथ का नाथु ॥
ब्रहमगिआनी का सभ ऊपरि हाथु ॥
ब्रहमगिआनी का सगल अकारु ॥
ब्रहमगिआनी आपि निरंकारु ॥
ब्रहमगिआनी की सोभा ब्रहमगिआनी बनी ॥
नानक ब्रहमगिआनी सरब का धनी ॥ ८ ॥

जिसके मन में ज्ञान ईश का जग का कर्ता धर्ता है
जिसके मन में ज्ञान ईश का ज़िन्दा है, कब मरता है

---

१ ईश्वर की ओर से पथप्रदर्शन २ पूज्य ।

जिसके मन में ज्ञान ईश का सुख मुक्ती का दाता है
जिसके मन में ज्ञान ईश का पूरा काम बनाता है
जिसके मन में ज्ञान ईश का बे-नाथों का नाथ है वह
जिसके मन में ज्ञान ईश का रखता सब पर हाथ है वह
जिसके मन में ज्ञान ईश का खुद सारा संसार है वह
जिसके मन में ज्ञान ईश का आप ही निरंकार है वह
जिसके मन में ज्ञान ईश का शान उसकी इरफ़ानी[1] है
'नानक' जो ज्ञानी है रब का हाथ उसके सुल्तानी[2] है ।।८।।

सलोकु

उरिधारै जो अंतरि नामु ।
सरब मै पेखै भगवानु ।।
निमख निमख ठाकुर नमसकारै ।
नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै ।। १ ।।

जिसके मन में बस गया प्यारे रब का नाम
सब में जो भगवान का देखे नूर तमाम
पल-पल रब को याद जो कर ले शीश झुकाय
अपरस[3] उसको जानिए 'नानक' जग तैराय

असटपदी ९

मिथिआ नाही रसना परस मन महि प्रीति निरंजन दरस ।
पर त्रिअ रूपु न पेखै नेत्र साध की टहल संत संगि हेत ।
करन न सुनै काहू की निंदा सभ ते जानै आपस कउ मंदा ।
गुरप्रसादि बिखिआ परहरै मन की बासना मन ते टरै ।
इंद्री जित पंच दोख ते रहत नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस।।१।।

---

१ ज्ञानमय २ बादशाही, सर्वनिधि-सम्पन्नता ३ पवित्र ।

झूठ न आए जिसके लब[१] पर सच का जिसको ज़ौक़[२] रहे
मन में इश्क़ ख़ुदा का हो दीदार[३] का हरदम शौक़ रहे
नाम हरम[४] का रूप न देखे अपनी आँख बचाए वह
सेवा करले साधुओं की संतों से प्रेम लगाए वह
कानों को ग़ैबत[५] से रोके औरों के वह ऐब छिपाए
ख़ुद को सब से नीचा समझे अदना[६] ख़ुद को कहता जाए
गुरु की उस पर रहमत हो सब बदियाँ दूर हटाए वह
दूर करे नफ़्सानी ख़्वाहिश[७] मन को साफ़ बचाए वह
बच कर पाँचों ऐबों से[८] जो नफ़्स को जीते नेक है वह
'नानक' लाखों इंसानों से ऐसा अपरस एक है वह ॥१॥

बैसनो सो जिसु ऊपरि सु प्रसंन बिसन की माइआ ते होइ भिंन ।
करम करत होवै निहकरम तिसु बैसनो का निरमल धरम ।
काहू फल की इछा नही बाछै केवल भगति कीरतन संगि राचै ।
मन तन अंतरि सिमरन गोपाल सभ ऊपरि होवत किरपाल ।
आपि द्रिड़ै अवरह नामु जपावै नानक ओहु बैसनो परमगति पावै॥२॥

विष्णू उसको जानो जिससे आप ख़ुदा मस्रूर[९] रहे
विष्णू उसको जानो हरदम जो माया से दूर रहे
अलग से बचकर कर्म कमाए[१०] कर्म हमेशा पाक रहे
विष्णू वह ऐसा है जिसका धर्म हमेशा पाक रहे
कर्म कमाए फल को त्यागे[१०] फल का शौक़ मिटाए वह
रब की ख़ालिस भक्ती करके दाता के गुन गाए वह
याद करे तन मन से रब को जिसने सबको पाला है
सब पर रहमत करने वाला बख़्शिश करने वाला है
आप भी उसका नाम जपे औरों को नाम जपाए वह
विष्णू उसको समझो 'नानक' आला रुतबा पाए वह ॥२॥

भगउती भगवंत भगति का रंगु सगल तिआगै दुसट का संगु ।
मन ते बिनसै सगला भरमु करि पूजै सगल पारब्रहमु ।

---

१ होंठ २ स्वाद ३ दर्शन ४ पर स्त्री ५ परोक्ष निन्दा ६ तुच्छ
७ काम-वासना ८ पाँच इन्द्रियों के विषय से ९ प्रसन्न १० निष्काम कर्म ।

साध संगि पापा मलु खोवै तिसु भगउती की मति ऊतम होवै ।
भगवंत की टहल करै नित नीति मनु तनु अरपै बिसन परीति ।
हरि के चरन हिरदै बसावै नानक ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै।। ३।।

जिसका नाम भगवती है भगवान की भक्ती करता है
जिसका नाम भगवती है हर बद सुहबत से डरता है
मन में भरम न रक्खे कोई वहम गुमान मिटाता है
अपने रब में सब को देखे उसको सीस झुकाता है
जो संतों की संगत में सब मैल कपट का धोता है
उसका नाम भगवती है वह अक़्ल में आला होता है
हरदम अपनी भक्ती से भगवान की सेवा करता है
तन मन से वह अपने रब की उल्फ़त[1] का दम भरता है
अपने मन के मन्दिर में जो हर के चरन बसाता है
'नानक' ख़ास "भगवती" वह भगवान को अपने पाता है ।।३।।

सो पंडितु जो मनु परबोधै राम नामु आतम महि सोधै ।
राम नाम सारु रसु पीवै उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै ।
हरि की कथा हिरदै बसावै सो पंडितु फिरि जोनि न आवै ।
बेद पुरान सिम्रिति बूझै मूल सूखम महि जानै असथूलु ।
चहु वरना कउ दे उपदेसु नानक उसु पंडित कउ सदा अदेसु।।४।।

"पंडित" उसको समझो तुम जो मन में जोत जगाता है
प्यारे रब के नाम का अपने मन में खोज लगाता है
नाम है रब का अमरित रस वह नाम का अमरित पीता है
उस पण्डित के उपदेशों से सारा आलम जीता है
वह पण्डित जो रब की बातें मन में ख़ूब बसाता है
वह पण्डित फिर दुनिया में कब जोन बदलकर आता है
असल हक़ीक़त देखे पुराणों स्मृतियों और वेदों में
ज़ाहिर[2] को बातिन[3] में देखे हक़ को पाए भेदों में
चारों वर्णों को जो पण्डित एक तरह उपदेश करे
'नानक' ऐसे पण्डित को आदेश सदा आदेश करे ।।४।।

१ प्रेम २ प्रकट ३ हृदय ।

बीज मंत्रु सरब को गिआनु चहु वरना महि जपै कोऊ नामु ।
जो जो जपै तिस की गति होइ साध संगि पावै जनु कोइ ।
करि किरपा अंतरि उरधारै पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै ।
सरब रोग का अउखदु नामु कलिआण रूप मंगल गुण गाम ।
काहू जुगति कितै न पाईऐ धरमि,
नानक तिसु मिलै जिसु लिखिआ धुरि करमि ।।५।।

बीज का मन्तर[1] नाम है रब का नाम से सब को ज्ञान मिले
चारों वर्णों में जो चाहे अपने रब का नाम जपे
जो जो नाम ये जपता है वह मुक्ती द्वारे आता है
कोई क़िस्मत वाला है साधुओं की संगत पाता है
रब की जिस पर किरपा होगी मन में नाम बसाएगा
वहशी[2] मूरख भूत कठोर[3] इन सबको पार लगाएगा
नाम ख़ुदा का है एक दारू रोग करे सब दूर यही
अपने रब के गुन गाना खुशहाली (लुत्फ़) सरूर यही
उसका और न रस्ता कोई पायें न उसको धर्मों में
नाम ख़ुदा का मिल जाएगा 'नानक' हो जब कर्मों में ।।५।।

जिस कै मनि पारब्रहम का निवासु तिस का नामु सति रामदासु ।
आतम रामु तिसु नदरी आइआ दास दसंतण भाइ तिनि पाइआ ।
सदा निकटि निकटि हरि जानु सो दासु दरगह परवानु ।
अपुने दास कउ आपि किरपा करै तिसु दास कउ सभ सोझी परै ।
सगल संगि आतम उदासु ऐसी जुगति नानक रामदासु ।।६।।

बसता है रब जिसके मन में हरदम रब के पास है वह
पूछो मुझसे नाम जो उसका राम का सच्चा "दास" है वह
देखे रूह जहाँ[4] की हर सू सबमें उसको पाता है
रब के जितने दास हैं उनका दास वही बन जाता है
हासिल जिसको क़ुर्ब[5] ख़ुदा का समझे हरदम पास है वह
इज़्ज़त हो दरगाह में उसकी राम का प्यारा दास है वह

१ मूल मंत्र पशुओं ३ पत्थरों ४ दुनिया ५ समीपत्व ।

जग का मालिक दास पे अपने जब रहमत फ़रमाएगा
उसको सब कुछ सूझेगा सब भेद उस पर खुल जाएगा
सब में रह कर अपने मन को सब से दूर हटाता है
'नानक' समझो राम का सच्चा दास वही कहलाता है ।।६।।

प्रभ की आगिआ आतम हितावै जीवन मुकति सोऊ कहावै ।
तैसा हरखु तैसा उसु सोगु सदा अनंदु तह नही बिओगु ।
तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी तैसा अंम्रितु तैसी बिखु खाटी ।
तैसा मानु तैसा अभिमानु तैसा रंकु तैसा राजानु ।
जो वरताए साई जुगति,
नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति ।।७।।

प्यारे रब का हुक्म जिसे सो जान अपनी से प्यारा है[1]
"जीवन-मुक्ती" वही है उसका जीते जी छुटकारा है
सुख दुख उसको यकसाँ है ज़िनहार[2] ख़ुशी या शोक नहीं
रहता है आनन्द हमेशा उसको रोग बियोग नहीं
यकसाँ समझे दोनों को वह सोना हो या मिट्टी हो
अमरित जैसी मीठी शै[3] हो या ज़हरीली खट्टी हो
इज़्ज़त हो या ज़िल्लत हो इक जैसा सबको जानेगा
राजा हो कंगाल हो वह दोनों को यकसाँ मानेगा
अच्छा ही वह उसको समझे जो कुछ रब से आता है
जीवनमुक्त वही है 'नानक' साफ़ रिहाई[4] पाता है ।।७।।

पारब्रह्म के सगले ठाउ जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ ।
आपे करन करावन जोगु प्रभ भावै सोई फुनि होगु ।
पसरिओ आपि होइ अनत तरंग लखे न जाहि पारब्रह्म के रंग ।
जैसी मति देइ तैसा परगास पारब्रह्मु करता अबिनास ।
सदा सदा सदा दइआल सिमरि सिमरि नानक भए निहाल ।।८।।

---

१ प्रभु की आज्ञा जिसको अपने प्राणों से अधिक प्यारी लगती है २ कभी भी
३ वस्तु ४ मुक्ति, छुटकारा ।

हाज़िर[1] नाज़िर[2] पाक ख़ुदा   हर सिम्त[3] मुक़ाम उसी का है
जिस-जिस जा[4] में रखे जिसको   वैसा नाम उसी का है
आप ही दे तौफ़ीक़[5] अमल[6] की   आप वही सब करता है
जो चाहे सो होता है   जो होता है रब करता है
अपना जलवा[7] फैलाकर   बेअन्त दिखाई मौज तरंग
खेल न उसके समझे कोई   वाह निराले रब के रंग
जैसी अक़्ल किसी को बख़्शी   वैसा मन नूरानी है
पाक ख़ुदा वह ख़ालिक सबका   बाक़ी[8] है लाफ़ानी[9] है
हरदम हरदम हरदम उसको   रहमत वाला पाओगे
नाम जपो हक़-नाम[10] जपो   फिर 'नानक' ऐश मनाओगे ।।८।।

सलोकु

उसतति करहि अनेक जन
अंतु न पारावार ।।
नानक रचना प्रभि रची
बहुबिधि अनिक प्रकार ।। १ ।।

हम्द करें[11] बे-अन्त उसी की   जिसका पार न वार
'नानक' रचना रब रचे   क्या बे-अन्त शुमार

असटपदी १०

कई कोटि होए पूजारी   कई कोटि आचार बिउहारी ।
कई कोटि भए तीरथ वासी   कई कोटि बन भ्रमहि उदासी ।
कई कोटि वेद के स्रोते   कई कोटि तपीसुर होते ।
कई कोटि आतम धिआनु धारहि   कई कोटि कबि काबि बिचारहि ।
कई कोटि नवतन नामु धिआवहि   नानक करते का अंतु न पावहि ।।१।।

---

१ सर्वव्यापी २ सर्वद्रष्टा ३ दिशा ४ जगह ५ सामर्थ्य ६ कर्म ७ नुमाइश ८ स्थायी ९ अविनाशी १० सत्य (सतनाम्) ११ स्तुति करें ।

लाखों और करोड़ों हैं जो रब के ख़ास पुजारी हैं
लाखों और करोड़ों ही आचारी और व्यवहारी हैं
लाखों और करोड़ों हैं जो तीरथ में जा रहते हैं
लाखों और करोड़ों तारिक[1] कष्ट बनों में सहते हैं
लाखों और करोड़ों ही वेदों के सुनने वाले हैं
लाखों और करोड़ों ज़ाहिद[2] जप-तप के मतवाले हैं
लाखों और करोड़ों अपने मन में ध्यान जमाते हैं
लाखों और करोड़ों शायर[3] शेरों में गुन गाते हैं
लाखों और करोड़ों उसके नाम निराले लेते जायें
'नानक' उस ख़ालिक मालिक का लेकिन कोई अन्त न पायें ।।१।।

कई कोटि भए अभिमानी कई कोटि अंध अगिआनी ।
कई कोटि किरपन कठोर कई कोटि अभिग आतम निकोर ।
कई कोटि पर दरब कउ हिरहि कई कोटि परदूख ना करहि ।
कई कोटि माइआ स्रम माहि कई कोटि परदेस भ्रमाहि ।
जितु जितु लावहु तितु तितु लगना,
नानक करते की जानै करता रचना ।। २ ।।

लाखों और करोड़ों बन्दे सरकश और मग़रूर[4] हुए
लाखों और करोड़ों अन्धे इस्म से जो बे-नूर[5] हुए
लाखों और करोड़ों हैं जो पत्थरदिल कंजूस भी हैं
लाखों और करोड़ों हैं जो ख़ुश्क भी हैं मनहूस भी हैं
लाखों और करोड़ों हैं जो ग़ैर की चोरी करते हैं
लाखों और करोड़ों हैं जो झूठी तुहमत[6] धरते हैं
लाखों और करोड़ों को धुन दौलत माल कमाने की
लाखों और करोड़ों को धुन मुल्कों-मुल्कों जाने की
जिस-जिस जा[7] पर जिसको रखे 'नानक' उस जा रहना है
अपनी रचना आप ही जाने ख़ालिक का क्या कहना है ।।२।।

१ त्यागी २ संयमी, तपस्वी ३ कवि ४ घमण्डी ५ ज्योतिहीन ६ आरोप ७ अगह ।

कई कोटि सिध जती जोगी कई कोटि राजे रस भोगी ।
कई कोटि पंखी सरप उपाए कई कोटि पाथर बिरख निपजाए ।
कई कोटि पवण पाणी बैसंतर कई कोटि देस भू मंडल ।
कई कोटि ससी अर सूर नख्यत्र कई कोटि देव दानव इंद्र सिरि छत्र ।
सगल समग्री अपनै सूति धारै,
नानक जिसु जिसु भावै तिसु तिसु निसतारै ।। ३ ।।

लाखों और करोड़ों बन्दे जिद्ध जती और जोगी हैं
लाखों और करोड़ों राजे ऐश के बन्दे भोगी हैं
लाखों और करोड़ों पंछी लाख-करोड़ों नाग बनाए
लाखों और करोड़ों पत्थर लाख-करोड़ों पेड़ उगाए
लाखों और करोड़ों क़िस्में आग हवा और पानी की
लाखों और करोड़ों सूबे खित्ते[1] और इक़लीमें[2] भी
लाखों और करोड़ों रौशन तारे सूरज चन्दर हैं
लाखों और करोड़ों दानव देव और राजे इन्दर हैं
तार में अपने आप पिरोई सब दुनिया की माला है
'नानक' चाहे जिस जिस को वह पार लगाने वाला है ।।३।।

कई कोटि राजस तामस सातक कई कोटि बेद पुरान सिमृति अरु सासत ।
कई कोटि कीए रतन समुन्द कई कोटि नाना प्रकार जन्त ।
कई कोटि कीए चिरजीवे कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे ।
कई कोटि जख्य किंनर पिसाच कई कोटि भूत प्रेत सूकर मृगाच ।
सभ ते नेरै सभहु ते दूरि,
नानक आपि अलिपतु रहिआ भरपूरि ।। ४ ।।

लाख-करोड़ों रजगुन तमगुन सतगुन के इंसान भी हैं
लाख-करोड़ों शास्त्र और स्मृतियाँ वेद पुराण भी हैं
लाख-करोड़ों सागर हैं जो हीरे - मोती वाले हैं
लाख-करोड़ों जानवर ऐसे जिनके रूप निराले हैं
लाख-करोड़ों हैं ऐसे जो लम्बी उमरें पाते हैं
लाख-करोड़ों टीले पर्वत सोने के मिल जाते हैं

---

१ प्रदेश २ महाद्वीप, लोक ।

लाख-करोड़ों यक्ष और किन्नर लाख पिशाच शरीर भी हैं
लाख - करोड़ों भूत प्रेत और शेर भी हैं ख़िंज़ीर[1] भी हैं
रब इन सबके पास भी है और रब इन सबसे दूर भी है
'नानक' सबसे दूर भी है और जग उससे भरपूर भी है ।।४।।

कई कोटि पाताल के वासी कई कोटि नरक सुरग निवासी ।
कई कोटि जनमहि जीवहि मरहि कई कोटि बहु जोनी फिरहि ।
कई कोटि बैठत ही खाहि कई कोटि घालहि थकि पाहि ।
कई कोटि कीए धनवंत कई कोटि माइआ महि चिंत ।
जह जह भाणा तह तह राखे नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे ।।५।।

लाखों और करोड़ों हैं पाताल में जिनकी हस्ती है
लाखों और करोड़ों की जन्नत या दोज़ख़ बस्ती है
लाखों और करोड़ों आकर जीते हैं मर जाते हैं
लाखों और करोड़ों ही जोनों के चक्कर खाते हैं
लाखों और करोड़ों हैं जो घर में बैठे खाते हैं
लाखों और करोड़ों जो बिपता से रिज़्क़[2] कमाते हैं
लाखों और करोड़ों हैं जो ज़र[3] वाले इंसान बनें
लाखों और करोड़ों को यह चिन्ता है धनवान बनें
जिसको जिस जा चाहे रक्खे आप ही कर्ता-धर्ता है
रब के हाथ है सब कुछ 'नानक' जो चाहे सो करता है ।।५।।

कई कोटि भए बैरागी राम नाम संगि तिनि लिव लागी ।
कई कोटि प्रभ कउ खोजते आतम महि पारब्रहमु लहंते ।
कई कोटि दरसन प्रभ पिआस तिन कउ मिलिओ प्रभु अबिनासु ।
कई कोटि मागहि सतसंगु पारब्रहम तिन लागा रंगु ।
जिन कउ होए आपि सुप्रसंन नानक ते जन सदा धनि-धंनि ।।६।।

लाखों और करोड़ों तारिक[4] दुनिया से मुँह मोड़ चले
नाम से रब के प्रीत लगाई उससे नाता जोड़ चले

---

१ सुअर २ रोज़ी ३ धन ४ त्यागी ।

लाखों और करोड़ों बन्दे रब का खोज लगाते हैं
अपने ही वह मन के अन्दर पाक ख़ुदा को पाते हैं
लाखों और करोड़ों हैं दीदार की जिनको प्यास रहे
वासिल[1] हों लाफ़ानी[2] रब से रब ख़ुद उनके पास रहे
लाखों और करोड़ों बन्दे चाहते हैं सब संग मिले
उल्फ़त पाक ख़ुदा से उनके प्रेम उन्हें हर रंग मिले
जिनसे आप ख़ुदा हो राज़ी रौशन भाग उन्हीं के हैं
'नानक' वह हैं क़िस्मत वाले धन-धन भाग उन्हीं के हैं ।।६।।

कई कोटि खाणी अरु खंड कई कोटि अकास ब्रहमंड ।
कई कोटि होए अवतार कई जुगति कीनो बिसथार ।
कई बार पसरिओ पासार सदा सदा इकु एकंकार ।
कई कोटि कीने बहु भाति प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति ।
ता का अंतु न जाने कोइ आपे आपि नानक प्रभु सोइ ।।७।।

लाखों और करोड़ों खित्ते सरचश्मे जाँदारों के
लाखों और करोड़ों हिस्से आकाशों संसारों के
लाखों और करोड़ों ही अवतार जहाँ में आए हैं
लाखों और करोड़ों आलम[3] खालिक़[4] ने फैलाए हैं
दुनिया सारी सिमटे फैले रोज़ उजड़ती बसती है
हस्ती एक ओंकार की है जो क़ायम[5] दायम[6] हस्ती है
लाखों और करोड़ों चीज़ें रंगा रंग बनाई हैं
रब ही से सब आई हैं फिर रब में आन समाई हैं
उसकी थाह न पाए कोई उसका अन्त न जानेंगे
आप से आप[7] हुआ सो रब है 'नानक' उसको मानेंगे ।।७।।

कई कोटि पारब्रहम के दास तिन होवत आतम परगास ।
कई कोटि तत के बेते सदा निहारहि एको नेत्रे ।
कई कोटि नाम रसु पीवहि अमर भए सदा ही जीवहि ।
कई कोटि नाम गुन गावहि आतम रस सुखि सहजि समावहि ।
अपुने जन कउ सासि सासि समारे नानक ओइ परमेसुर के पिआरे ।।८।।

---

१ लीन २ अविनाशी ३ संसार ४ सिरजनहार ५ स्थायी ६ हमेशा
७ स्वयंभू ।

लाखों और करोड़ों हैं जो रब के दास ज़रूर हुए
रूहें उनकी रौशन रौशन दिल उनके पुर नूर हुए
लाखों और करोड़ों बन्दे असल हक़ीक़त[1] जानें वह
एक ख़ुदा को देखें सबमें एक ख़ुदा को मानें वह
लाखों और करोड़ों हैं जो नाम का अमरित पीते हैं
लाफ़ानी[2] हो जाते हैं और दायम[3] जग में जीते हैं
लाखों और करोड़ों हैं हक़ नाम के जो गुन गाते हैं
रूहानी आनन्द मनाएं सहज सहज सुख पाते हैं
हरदम अपने बन्दों की वह आप हिफ़ाज़त करता है
'नानक' रब के प्यारे हैं रब उनसे उल्फ़त करता है ।।८।।

सलोकु

करण कारण प्रभु एकु है
दूसर नाही कोइ ।।
नानक तिसु बलिहारणै
जलि थलि नही अलि सोम ।। १ ।।

कर्ता धर्ता आप रब और कौन कर्तार
वह जल थल आकाश में 'नानक' मैं बलिहार

असटपदी ११

करन करावन करनै जोगु जो तिसु भावै सोई होगु ।
खिन महि थापि उथापनहारा अन्तु नही किछु पारावारा ।
हुकमे धारि अधर रहावै हुकमे उपजै हुकमि समावै ।
हुकमे ऊच नीच बिउहार हुकमे अनिक रंग परकार ।
करि करि देखै अपनी वडिआई नानक सभ महि रहिआ समाई ।।१।।

---

१ परमसत्य २ अविनाशी ३ हमेशा ।

हर कारज का कारन रब है उसको क़ुदरत सारी है
जो कुछ चाहे सो कुछ होगा हुक्म उसी का जारी है
पल में जोड़े पल में तोड़े लगती उसको बार नहीं
क़ुदरत का कुछ अन्त नहीं कुछ पार नहीं कुछ वार नहीं
उसका हुक्म सहारा सब का ख़ुद न सहारा पाता है
हुक्म से आलम पैदा होकर फिर उसमें खो जाता है
हुक्म से ऊँच और नीच सभी हों हुक्म से सब व्यवहार चले
हुक्म से रंगा रंग नज़ारे हुक्म से सब संसार चले
आप बनाए आप ही देखे कितनी शान बड़ाई है
'नानक' सब में आप समाए क्या भरपूर ख़ुदाई है ॥१॥

प्रभ भावै मानुख गति पावै प्रभ भावै ता पाथर तरावै।
प्रभ भावै बिनु सास ते राखै प्रभ भावै ता हरि गुण भाखै।
प्रभ भावै ता पतित उधारै आपि करै आपन बीचारै।
दुहा सिरिआ का आपि सुआमी खेलै बिगसै अन्तरजामी।
जो भावै सो कार करावै नानक दृसटी अवरु न आवै ॥२॥

जब मंज़ूर ख़ुदा को हो तब बन्दे मुक्ती पाते हैं
जब मंज़ूर ख़ुदा को हो तब पत्थर तैरे आते हैं
जब मंज़ूर ख़ुदा को हो तब मुर्दे जीवन पाते हैं
जब मंज़ूर ख़ुदा को हो तब दाता के गुन गाते हैं
जब मंज़ूर ख़ुदा को हो तब पापी को भी पार करे
जग को आप बनाए वह और ख़ुद ही सोच विचार करे
दोनों आलम हाथ में उसके वह दोनों का स्वामी है
आप ही खेले आप ही ख़ुश हो आप ही अन्तरजामी है
'नानक' जो कुछ उसकी मर्ज़ी बन्दा वह कुछ कार करे
और नज़र कौन आता है सब कार वही कर्तार करे ॥२॥

कहु मानुख ते किआ होइ आवै जो तिसु भावै सोई करावै।
इस कै हाथि होइ ता सभु किछु लेइ जो तिसु भावै सोई करेइ।
अनजानत बिखिआ महि रचै जे जानत आपन आप बचै।
भरमे भूला दहदिसि धावै निमख माहि चारि कुंट फिरि आवै।
करि किरपा जिसु अपनी भगति देइ नानक ते जन नामि मिलेइ ॥ ३॥

बोलो ! क्या बन्दे के बस में बन्दे से क्या होता है
जैसा हो मंज़ूर ख़ुदा को वैसा वैसा होता है
बस में अगर इंसान के हो एक पल में सब कुछ पाए वह
जो कुछ हो मंज़ूर ख़ुदा को बात अमल में लाए वह
जो रब से अनजान रहे बदियों में रचता जाएगा
जिसने रब को जान लिया पापों से बचता जाएगा
मोह भरम में फँसता है दुनिया में चक्कर खाता है
मन उसका चौगिर्द भटककर पल में वापस आता है
जिस पर रब की किरपा है वह भक्ती ही के काम में है
'नानक' ऐसा भक्त ख़ुदा का महो[1] ख़ुदा के नाम में है ।।३।।

खिन महि नीच कीट कउ राज पारब्रहम गरीब निवाज ।
जा का दृसटि कछू न आवै तिसु ततकाल दह दिस प्रगटावै ।
जा कउ अपुनी करै बखसीस ता का लेखा न गनै जगदीस ।
जीउ पिंडु सभ तिस की रासि घटि घटि पूरन ब्रहम प्रगास ।
अपनी बणत आपि बनाई नानक जीवै देखि बडाई ।।४।।

आप ग़रीबनवाज़[2] ख़ुदा बन्दों की सुध-बुध लेता है
पल में आजिज़ कीड़े को वह राज जहाँ का देता है
डूबा हो गुमनामी[3] में संसार न जिसको जाने भी
पल में उसका नाम हो रौशन सब जग उसको माने भी
जिस पर उसकी बख़्शिश होगी जिस पर उसकी रहमत हो
लेखा उससे कोई न पूछे कोई न उसको ज़हमत[4] हो
तन मन दौलत उसको है सब शान ज़हूर[5] उसी का है
हर इक दिल में हर इक मन में रौशन नूर उसी का है
अपनी सन्अ़त[6] आप बनाए करदे ख़ल्क़-ख़ुदाई[7] को
जीता हूं मैं देख के 'नानक' उसकी शान बड़ाई को ।।४।।

इसका बलु नाही इसु हाथ करन करावन सरब को नाथ ।
आगिआकारी बपुरा जीउ जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ।

१ विभोर, मुग्ध २ दीनवत्सल ३ अप्रसिद्ध ४ क्लेश ५ उत्पत्ति
६ कारीगरी ७ ईश्वरी सृष्टि ।

कबहू ऊच नीच महि बसै कबहू सोग हरख रंगि हसै ।
कबहू निंद चिंद बिउहार कबहू ऊभ अकास पइआल ।
कबहू बेता ब्रहम बीचार नानक आपि मिलावणहार ।। ५ ।।

बन्दे का मक़दूर नहीं क्या ताक़त उसके हाथ में है
मालिक सब कुछ करता है बल ज़ोर सभी उस नाथ में है
ताक़त उसके पास कहाँ मख़लूक़[1] बहुत बेचारी है
जो कुछ हो मंजूर ख़ुदा को करती दुनिया सारी है
बन्दा ऊँचा चढ़ता है या फिर पस्ती[2] में धँसता है
गाहे[3] शोक मनाता है वह गाहे ख़ुशी से हँसता है
गाहे निन्दा करता है वह और देता है 'शाबाश' कभी
आता है पाताल कभी और जाता है आकाश कभी
गाह वह सोचे रब की बातें इल्म ख़ुदाई पाता है
दाता जिसको चाहे 'नानक' अपने साथ मिलाता है ।।५।।

कबहू निरति करै बहु भाति कबहू सोइ रहै दिनु राति ।
कबहू महा क्रोध बैकराल कबहू सरब की होत रवाल ।
कबहू होइ बहै बड राजा कबहू भेखारी नीच का साजा ।
कबहू अपकीरति महि आवै कबहू भला भला कहावै ।
जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै गुर प्रसादि नानक सचु कहै ।। ६ ।।

रंगारंगी नाच वह नाचे ख़ूब दिखाए गात कभी
ग़ाफ़िल होकर नींद का माता सोता है दिन रात कभी
ग़ुस्से में और तैश में आकर गाहे जोश दिखाता है
गाहे सबके क़दमों की अपने को ख़ाक बनाता है
गाहे वह राजों का राजा दुनिया में हो जाता है
गाहे बदल कर भेस गदा[4] का चिथड़ों लिपटा आता है
गाहे मिले बदनामी उसको नज़रों से गिर जाए वह
गाहे हो उसकी नेकी रौशन नेक बड़ा कहलाए वह
जैसा मालिक रखे उसको वैसा ही वह रहता है
गुरु की किरपा ही से 'नानक' सच्ची बातें कहता है ।।६।।

---

१ सृष्टि २ नीचाई ३ कभी ४ भिखारी ।

कबहू होइ पंडितु करे बख्यानु कबहू मोनि धारी लावै धिआनु ।
कबहू तट तीरथ इसनान कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ।
कबहू कीट हसति पतंग होइ जीआ अनिक जोनि भरमै भरमीआ ।
नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ।
जो तिसु भावै सोइ होइ नानक दूजा अवरु न कोइ ।। ७ ।।

गाहे पण्डित बन बन कर उपदेश कथाएँ कहता है
गाहे रख कर मौन बरत वह ध्यान में चुप चुप रहता है
गाहे तीरथ जा जा कर तन पाक करे स्नान करे
गाहे सिद्ध और साधू बनकर ज़ाहिर सब पर ज्ञान करे
गाहे हाथी गाहे कीड़ा गाहे पतिङ्गा बनता है
जोन अनेक बदल कर देखो बन्दा क्या क्या बनता है
भरता है वह रूप नये बहुरूपी स्वांग दिखाता है
जैसे उसकी मर्ज़ी हो रब वैसे नाच नचाता है
जो कुछ हो मंज़ूर ख़ुदा को वह कुछ होकर रहता है
उस बिन और नहीं है कोई बात यह 'नानक' कहता है ।।७।।

कबहू साध संगति इहु पावै उसु असथान ते बहुरि न आवै ।
अंतरि होइ गिआन परगासु उसु असथान का नही बिनासु ।
मन तन नामि रते इक रंगि सदा बसहि पारब्रहम कै संगि ।
जिउ जल महि जलु आइ खटाना तिउ जोती संगि जोति समाना ।
मिटि गए गवन पाए बिस्राम नानक प्रभ कै सद कुरबान ।। ८ ।।

गाहे साध की संगत में वह ऐसा लुत्फ़ उठाता है
जिस स्थान में जा बैठे कब लौट कर उससे आता है
ज्ञान का मन में नूर वह पाए ज्ञानी हो नूरानी[1] हो
जिस स्थान पे जा बैठे स्थान भी वह लाफ़ानी[2] हो
उसके तन मन रंगे जाएँ नाम का ऐसा रंग मिले
ज़ात से रब की वासिल[3] होकर रब का उसको संग मिले
दुई[4] कहाँ फिर रहती है जब पानी आए पानी में
दुई कहाँ फिर रहती है जब नूर[5] मिले नूरानी[6] में

---

१ प्रकाशमय २ अनश्वर, अविनाशी ३ तन्मय, लीन ४ द्वैतभाव ५ ज्योति, (जीव) ६ महाज्योति (ब्रह्म) ।

जोनि-जनम[1] के चक्कर टूटें मिल जाएँ आराम सकूँ
'नानक' अपने पाक प्रभू पर मैं हरदम क़ुर्बान रहूँ ।।८।।

सलोकु

सुख बसै मसकीनीआ
आपु निवारि तले ।।
बडे बडे अहंकारीआ
नानक गरबि गले ।। १ ।।

सुख में वह मिसकीन[2] हैं जो आजिज़[3] कहलाएँ
'नानक' जो मग़रूर[4] हैं मान में वह गल जाएँ

असटपदी १२

जिसकै अंतरि राज अभिमानु सो नरकपाती होवत सुआनु ।
जो जाने मै जोवनवंतु सो होवत बिसटा का जंतु ।
आपस कउ करमवंतु कहावै जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ।
धन भूमि का जो करै गुमानु सो मूरखु अंधा अगिआनु ।
करि किरपा जिसकै हिरदै गरीबी बसावै,
नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै ।। १ ।।

जिसको नाज़[5] हुकूमत पर जो दौलत पर मग़रूर रहे
दोज़ख में गिर जाएगा वह कुत्ते की सी मौत मरे
जिसको नाज़ जवानी पर है जीवन की ख़ुदबीनी[6] है
बन्दा उसको गन्दा समझो वह नापाक यक़ीनी[7] है
जिसको नाज़ अमल[8] पर है वह कर्मी ख़ुद को कहता है
मरता है फिर जीता है वह जून बदलता रहता है

---

१ आवागमन २ सरल, झुके हुए ३ दीन ४ घमण्डी ५ अभिमान
६ अहंकार ७ निश्चय ८ कर्म ।

जिसको नाज़ ज़मीनों पर है दौलत पर मग़रूर है वह
मूरख है वह अन्धा है इरफ़ान[1] से क़ाबिल दूर है वह
जिसके मन में मिसकीनी[2] रहमत[3] से आप बसाता है
'नानक' मुक्ती पाए यहाँ भी आगे भी सुख पाता है ॥१॥

धनवंता होइ करि गरबावै त्रिण समानि कछु संगि न जावै ।
बहु लसकर मानुख ऊपरि करे आस पल भीतरि ताका होइ बिनास ।
सभ ते आप जानै बलवंतु खिन महि होइ जाइ भसमंतु ।
किसै न बदै आपि अहंकारी धरमराइ तिसु करे खुआरी ।
गुर प्रसादि जा का मिटै अभिमानु सो जनु नानक दरगह परवानु ॥२॥

धनवाला इंसान जो अपनी दौलत पर इतराएगा
इस दुनिया से तिनका सा भी उसके साथ न जाएगा
जो फ़ौजों और लश्कर की बहुतात पे हरदम आस करे
उसके सर पर मौत जब आए पल में उसका नाश करे
जो ख़ुद को बलवान समझकर सबको ज़ोर दिखाता है
उस पर मौत जब आए पल में वह मिट्टी हो जाता है
औरों को जो हेच[4] समझ ले वह बन्दा पन्दारी[5] है
धर्मी राजा आएगा तो उसके हिस्से ख़्वारी[6] है
अपने गुरु की रहमत से जो मान ग़रूर मिटाता है
वह दरगाह में रब की जाकर 'नानक' इज़्ज़त पाता है ॥२॥

कोटि करम करै हउ धारे स्रमु पावै सगले बिरथारे ।
अनिक तपसिआ करे अहंकार नरक सुरग फिरि फिरि अवतार ।
अनिक जतन करि आतम नही द्रवै हरि दरगह कहु कैसे गवै ।
आपस कउ जो भला कहावै तिसहि भलाई निकटि न आवै ।
सरब की रेन जा का मनु होइ कहु नानक ताकी निरमल सोइ ॥३॥

जो ख़ुदबीनी[7] करता है गो लाखों करम कमाता है
वह जोखों[8] में पड़ता है सब काम अकारथ जाता है

---

१ ज्ञान, आतमज्ञान २ विनम्रता, दीनता ३ ईश्वर अपनी दया से ४ तुच्छ ५ घमण्डी ६ अपमान, ज़िल्लत ७ अहंकार ८ जोखम, ख़तरा ।

जो करता है लाख तपस्या साथ मगर इतराता है
जन्नत और दोज़ख में घूमे जोन बदलता जाता है
लाख जतन भी करता हो वह दिल न अगर नरमाएगा
बोलो फिर दरगाह में रब की क्योंकर इज़्ज़त पाएगा
जो नेकी पर नाज़ करे गो नेक बड़ा कहलाता है
नेकी उसके पास न आए जैसा हो रह जाता है
ख़ुद को सबके क़दमों की जो ख़ाक समझता रहता है
असल बड़ाई उसकी है यह 'नानक' सबसे कहता है ॥३॥

जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ तब इस कउ सुखु नाही कोइ ।
जब इह जानै मै किछु करता तब लगु गरभ जोन महि फिरता ।
जब धारै को बैरी मीतु तब लग निहचलु नाही चीतु ।
जब लगु मोह मगन संगि माइ तब लगु धरमराइ देइ सजाइ ।
प्रभ किरपा ते बंधन तूटै गुरप्रसादि नानक हउ छूटै ॥४॥

जब तक बन्दा समझे मन में आप वह सब कुछ करता है
तब तक दिल में चैन न आए करता है और मरता है
जब तक बन्दा समझे मन में काम मुझी से चलता है
फेर में जीने-मरने के वह जूनें[1] रोज़ बदलता है
जब तक बन्दा समझे मन में बैरी है यह बैर है वह
उसके मन में चैन न आए चंचल है दिलगीर[2] है वह
जब तक बन्दा धन दौलत की मस्ती में ग़रक़ाब[3] रहे
उस पर धर्मी राजा[4] की फिर ग़ुस्सा क़हर[5] अज़ाब[6] रहे
रब की रहमत जब भी होगी सारे बन्धन टूटेंगे
'नानक' गुरु की किरपा हो तो मान[7] तकब्बुर[8] छूटेंगे ॥४॥

सहस खटे लख कउ उठि धावै त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै ।
अनिक भोग बिखिआ के करै नह त्रिपतावै खपि खपि मरै ।
बिना संतोख नही कोऊ राजै सुपन मनोरथ ब्रिथे सभ काजै ।
नाम रंगि सरब सुखु होइ बडभागी किसै परापति होइ ।
करन करावन आपे आपि सदा सदा नानक हरि जापि ॥ ५ ॥

---

१ योनियाँ २ दुखी ३ डूबा ४ यमराज ५ दैवी प्रकोप ६ प्रकोप, दण्ड
७ अभिमान ८ घमण्ड ।

जब इंसान हज़ार कमाए लाख के पीछे जाएगा
जितनी माया पाएगा जी और उसका ललचाएगा
गो शहवानी-लज़्ज़त[१] के वह भोग हज़ारों करता है
इत्मीनान न हासिल हो वह खपते खपते मरता है
सब्र-क़रार[२] न आए जब तक राहत[३] कैसे पाएगा
काम हों उसके सुपने जैसे ख्वाब में मन परचाएगा
नाम प्रभू का लेने से सुख चैन मिले आराम मिले
धन धन भाग उसी के हैं यह प्यारा जिसको नाम मिले
हर कारज का करने वाला सब का है कर्तार वही
'नानक' रब का नाम जपे जा आली है सरकार वही ॥५॥

करन करावन करनेहारु इस कै हाथि कहा बीचारु ।
जैसी द्रिसटि करे तैसा होइ आपे आपि आपि प्रभु सोइ ।
जो किछु कीनो सु अपनै रंगि सभ ते दूरि सभहू कै संगि ।
बूझै देखै करै बिबेक आपहि एक आपहि अनेक ।
मरै न बिनसै आवै न जाइ नानक सदही रहिआ समाइ ॥ ६ ॥

हर कारज का कारन है कर्तार है वह कर्तार है वह
बस में क्या है बन्दे के नाचार[४] है वह नाचार है वह
जिस पर बख्शिश जितनी करदे वैसा वह हो जाता है
आप ही अपने आप है वह ख़ुद आप ख़ुदा कहलाता है
जो कुछ नूर[५] ज़हूर[६] हुआ वह ख़ालिक़[७] को मंज़ूर हुआ
सबसे वह नज़दीक हुआ और सबसे ही वह दूर हुआ
देखे बूझे दुनिया को वह ध्यान लगाए खिलक़त में
ज़ात उसी की वहदत[८] में है शान उसी की कसरत[९] में
पाक जनम से पाक मरन से आए और न जाए वह
'नानक' उसकी ज़ात है यकसाँ सब में आप समाए वह ॥६॥

आपि उपदेसै समझै आपि आपे रचिआ सभ कै साथि ।
आपि कीनो आपन बिसथारु सभु कछु उसका ओहु करनैहारु ।

१ भोगविलास का मज़ा २ धैर्य-संतोष ३ चैन ४ लाचार ५ प्रकाश ६ प्रकट ७ स्रष्टा ८ एकत्व में ९ अनेकत्व में ।

उस ते भिन कहहु किछु होइ थान थनंतरि एकै सोइ ।
अपुने चलित आपि करणैहार कउतक करै रंग आपार ।
मन महि आपि मन अपुने माहि नानक कीमति कहनु न जाइ ।। ७ ।।

आप ही उसने समझा है और आप उसने समझाया है
सब के अन्दर आप रचा है सब में आप समाया है
आप से आप बनाकर उसने सारा जग फैलाया है
हर शै[1] का कर्तार है वह संसार उसी की माया है
बोलो आख़िर बे-उसके भी कोई किसी से बात हुई
जिस-जिस जाँ[2] पर हमने देखा एक उसी की ज़ात हुई
करने वाला आप वही है काम उसी के सारे हैं
रंग सब उसके प्यारे हैं और खेल सब उसके न्यारे हैं
आप समाए मन के अन्दर मन भी उसमें आप समाए
'नानक' खुद अनमोल है वह फिर क़ीमत उसकी कौन बताए ।।७।।

सति सति सति प्रभु सुआमी गुरपरसादि किनै बखिआनी ।
सचु सचु सचु सभु कीना कोटि मधे किनै बिरलै चीना ।
भला भला भला तेरा रूप अति सुंदर अपार अनूप ।
निरमल निरमल निरमल तेरी वाणी घटि घटि सुनी स्रवन बख्याणी ।
पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत नामु जपै नानक मनि प्रीति ।।८।।

सच्चा सच्चा सच्चा मालिक हरदम उसका ध्यान करें
गुरु की किरपा जिन पर होगी उसकी शान बयान करें
सच्चा सच्चा सच्चा वह सब उसका ताना बाना है
लाखों में एक निकलेगा वह जिसने उसको जाना है
प्यारा प्यारा प्यारा प्यारा रूप तेरा नूरानी[3] है
सुन्दर है बेपायाँ[4] है लासानी[5] है लासानी है
पाक है बानी[6] पाक है बानी पाक यह तेरी बानी है
हर-हर दिल में सुन-सुनकर जो कानों कान सुनानी है
पाक पवित्तर पाक पवित्तर पाक वही हो जाता है
नाम जपे जो मन से 'नानक' रब से प्रीत लगाता है ।।८।।

---

१ वस्तु, पदार्थ २ जगह ३ प्रकाशमय ४ स्वयमाधार ५ अनुपम
६ वाणी, कलाम।

सलोकु

संत सरनि जो जनु परै
सो जनु उधरनहार ॥
संत की निंदा नानका
बहुरि बहुरि अवतार ॥ १ ॥

संत की निन्दा जो करे फिर जोनों[1] में जाय
साए में आकर संत के 'नानक' मुक्ती पाय

असटपदी १३

संत कै दूखनि आरजा घटै संत कै दूखनि जम ते नही छुटै ।
संत कै दूखनि सुखु सभु जाइ संत कै दूखनि नरक महि पाइ ।
संत कै दूखनि मति होइ मलीन संत कै दूखनि सोभा ते हीन ।
संत कै हते कउ रखै न कोइ संत कै दूखनि थान भ्रसटु होइ ।
संत क्रिपाल क्रिपा जे करै नानक संत संगि निंदकु भी तरै॥१॥

संत की निन्दा करने से घट जाय उमर खस्सारा[2] हो
संत की निन्दा करने से कब मरने से छुटकारा हो
संत की निन्दा करने से सुख मन का जाता रहता है
संत की निन्दा करने से दोज़ख़ की बिपता सहता है
संत की निन्दा करने से ख़ुद अक़्ल पै परदा पड़ता जाये
संत की निन्दा करने से सब इज़्ज़त भागे, ज़िल्लत[3] आये
संत की जिस पर लानत[4] होगी उसको कौन बचायेगा
संत की निन्दा करने से घर बार नजिस[5] हो जायेगा
संत हैं रहमत वाले 'नानक' रहम वो जब फ़रमायेंगे
निन्दा करने वाले भी फिर साथ उनके बच जायेंगे ॥१॥

संत कै दूखन ते मुखु भवै संत कै दूखनि काग जिउ लवै ।
संतन कै दूखनि सरप जोनि पाइ संत कै दूखनि त्रिगद जोनि किरमाइ ।

---

१ योनिगों में २ व्यर्थ जाय ३ बेइज़्ज़ती ४ फिटकार ५ अपवित्र ।

सन्तन कै दूखनि त्रिसना महि जलै सन्त कै दूखनि सभु को छलै।
सन्त कै दूखनि तेजु सभु जाइ सन्त कै दूखनि नीचु नीचाइ।
सन्त दोखी का थाउ को नाहि,
नानक सन्त भावै ता ओइ भी गति पाहि ।। २ ।।

संत की निन्दा करने से मुँह टेढ़ा मेढ़ा होता है
करता है जो सन्त की निन्दा काओं काओं रोता है
करता है जो सन्त की निन्दा साँप की जोनी पायेगा
करता है जो सन्त की निन्दा कीड़ा सा बन जायेगा
करता है जो सन्त की निन्दा प्यास के दुख से जलता है
करता है जो सन्त की निन्दा सब लोगों को छलता है
करता है जो सन्त की निन्दा शान गवाँ कर रुस्वा[1] हो
करता है जो सन्त की निन्दा नीचों से भी नीचा हो
करता है जो सन्त की निन्दा क्योंकर ठौर-ठिकाना पाये
सन्त अगर चाहें तो 'नानक' वह भी मुक्ती-द्वारे आये ।।२।।

सन्त का निंदकु महा अतताई सन्त का निंदकु खिनु टिकनु न पाई।
सन्त का निंदकु महा हतिआरा सन्त का निंदकु परमेसुरि मारा।
सन्त का निंदकु राज ते हीनु सन्त का निंदकु दुखीआ अरु दीनु।
सन्त के निंदक कउ सरब रोग सन्त के निंदक कउ सदा बिजोग।
सन्त की निंदा दोख महि दोखु,
नानक सन्त भावै ता उसका भी होइ मोखु ।। ३ ।।

करता है जो सन्त की निन्दा वह पापी हो जाता है
करता है जो सन्त की निन्दा चैन न पल भर पाता है
करता है जो सन्त की निन्दा खूँनी और खूँख्वार समझ
करता है जो सन्त की निन्दा उस पर रब की मार समझ
करता है जो सन्त की निन्दा अपना राज गवाँएगा
करता है जो सन्त की निन्दा दुख और तंगी पायेगा
करता है जो सन्त की निन्दा रोगी है रंजूर[2] है वह
करता है जो सन्त की निन्दा दायम[3] रब से दूर है वह

१ बदनाम, निन्दित २ दुखी ३ हमेशा।

करता है जो सन्त की निन्दा पाप ही पाप कमाते हैं
'नानक' चाहें सन्त अगर तो, पापी मुक्ती पाते हैं ।।३।।

सन्त का दोखी सदा अपवितु सन्त का दोखी किसै का नही मितु ।
सन्त के दोखी कउ डानु लागै सन्त के दोखी कउ सभ तिआगै ।
सन्त का दोखी महा अहंकारी सन्त का दोखी सदा बिकारी ।
सन्त का दोखी जनमै मरै सन्त की दूखना सुख ते टरै ।
सन्त के दोखी कउ नाही ठाउ नानक सन्त भावै ता लए मिलाइ ।।४।।

करता है जो सन्त की निन्दा नेक नहीं बदकार है वह
करता है जो सन्त की निन्दा बोलो किसका यार है वह
करता है जो सन्त की निन्दा उस पर दण्ड लगायेंगे
करता है जो सन्त की निन्दा छोड़ सब उसको जायेंगे
करता है जो सन्त की निन्दा उसमें है पिनदार[1] सदा
करता है जो सन्त की निन्दा रहता है बदकार सदा
करता है जो सन्त की निन्दा वह जी जी कर मरता है
करता है जो सन्त की निन्दा कब सुख हासिल करता है
करता है जो सन्त की निन्दा कब वह ठौर ठिकाना पाये
सन्त जो चाहे 'नानक' उसको फिर भी अपने साथ मिलाये ।।४।।

सन्त का दोखी अध बीच ते टूटै सन्त का दोखी कितै काजि न पहूचै।
सन्त के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईऐ सन्त का दोखी उझड़ि पाईऐ ।
सन्त का दोखी अंतर ते थोथा जिउ सास बिना मिरतक की लोथा।
सन्त के दोखी की जड़ किछु नाहि आपन बीजि आपे ही खाहि ।
सन्त के दोखी कउ अवरु न राखनहारु,
नानक सन्त भावै ता लए उबारि ।। ५ ।।

करता है जो सन्त की निन्दा बीच अधर में लोटेगा
करता है जो सन्त की निन्दा हर मक़सद[2] से छूटेगा
करता है जो सन्त की निन्दा उजड़े बन में फिरता है
करता है जो सन्त की निन्दा वीरानी में[3] घिरता है

---

१ अहंकार । २ अभीष्ट ३ निर्जन में ।

करता है जो सन्त की निन्दा वह अंदर से ख़ाली है
लाश हो जैसे मुरदे की जो साँस न लेने वाली है
उसकी जड़ कब लगती है जो सन्त की निन्दा करता है
बोता है सो खाता है जो करता है सो भरता है
करते हैं जो सन्त की निन्दा उनको कौन बचायेंगे
सन्त ही गर चाहें तो 'नानक' बेड़ा पार लगायेंगे ।।५।।

सन्त का दोखी इउ बिललाइ जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ।
सन्त का दोखी भूखा नहीं राजै जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै।
सन्त का दोखी छुटै इकेला जिउ बूआड़ु तिलु खेत माहि दुहेला।
सन्त का दोखी धरम ते रहत सन्त का दोखी सद मिथिआ कहत।
किरतु निंदक का धुरि ही पइआ नानक जो तिसु भावै सोई थिआ।।६।।

करता है जो सन्त की निन्दा चीख़ेगा चिल्लायेगा
बेपानी की मछली बन कर तड़पेगा बल खायेगा
करता है जो सन्त की निन्दा भूका है वह सेर[1] न हो
जैसे जलती आग को काफ़ी कुछ इंधन का ढेर न हो
करता है जो सन्त की निन्दा संगी और न चेला हो
तिल का डण्ठल खेत में ख़ाली जैसे एक अकेला हो
करता है जो सन्त की निन्दा धरम से ख़ाली रहता है
करता है जो सन्त की निन्दा झूठ हमेशा कहता है
करता है जो निन्दा वह बदक़िस्मत रोज़ अज़ल का[2] है
जो चाहे हो जाये 'नानक' रब का हुकुम न टलता है ।।६।।

सन्त का दोखी विगड़ रूपु होइ जाइ,
सन्त के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ।
सन्त का दोखी सदा सहकाईऐ सन्त का दोखी न मरै न जीवाईऐ।
सन्त के दोखी की पुजै न आसा सन्त का दोखी उठि चलै निरासा।
सन्त कै दोखि न त्रिसटै कोइ जैसा भावै तैसा कोई होइ।
पइआ किरतु न मेटै कोइ नानक जानै सचा सोइ ।। ७ ।।

---

१ तृप्त २ अन्तिम न्याय के दिन वह अभागा ठहरेगा।

करता है जो सन्त की निन्दा बिगड़े उसका रूप सदा
करता है जो सन्त की निन्दा रब के द्वारे पाये सज़ा
करता है जो सन्त की निन्दा ऊपर के दम भरता है
करता है जो सन्त की निन्दा जीता और न मरता है
करता है जो सन्त की निन्दा आस मुराद न पायेगा
करता है जो सन्त की निन्दा मायूसी[1] में जायेगा
करता है जो सन्त की निन्दा छुटकारा कब पाता है
जैसा रब के मन को भाये वैसा हो हो जाता है
करमों का जो लिक्खा है फिर उसको कौन मिटायेगा
'नानक' वह रब सच्चा जाने भेद न कोई पायेगा ।।७।।

सभ घट तिसके ओहु करनैहारु सदा सदा तिस कउ नमसकारु ।
प्रभ की उसतति करहु दिनु राति तिसहि धिआवहु सासि गिरासि ।
सभु कछु वरतै तिस का कीआ जैसा करे तैसा को थीआ ।
अपना खेलु आपि करनैहारु दूसर कउनु कहै बीचारु ।
जिसनो क्रिपा करै तिसु आपन नामु देइ बडभागी नानक जन सेइ ।। ८ ।।

सब के दिल का मालिक है करतार है वह करतार है वह
उसको है परनाम हमेशा क्या आली सरकार है वह
हम्द[2] करो दिनरात उसी की महिमा गाओ आठ पहर
याद करो हर साँस में उसको नाम भी लो हर लुक़मे[3] पर
दुनिया में जो होता है सब काम उसी का होता है
जैसा जिसको करता है वह वैसा वैसा होता है
ख़ुद ही खेले खेल वह अपना खेल भी उसका न्यारा है
ऐब निकाले काम में उसके बन्दा कौन बिचारा है
जिस पर उसकी रहमत हो वह नाम की निअ़मत पायेगा
'नानक' उसके भाग बड़े हैं जिसको वह मिल जायेगा ।।८।।

---

१ हताशा, नाउम्मेदी २ स्तुति ३ निवाले, कौर ।

सलोकु

तजहु सिआनप सुरिजनहु
सिमरहु हरि हरि राइ ॥
एक आस हरि मनि रखहु
नानक दूखु भरमु भउ जाइ ॥ १ ॥

छोड़ के सब चतुराइयाँ रब की याद मनाएँ
'नानक' रब की आस रख डर शक दुख मिट जाएँ

असटपदी १४

मानुख की टेक बृथी सभ जानु देवन कउ एकै भगवानु ।
जिस कै दीऐ रहै अघाइ बहुरि न त्रिसना लागै आइ ।
मारै राखै एको आपि मानुख कै किछु नाही हाथि ।
तिसका हुकमु बूझि सुखु होइ तिसका नामु रखु कंठि परोइ ।
सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ नानक विघनु न लागै कोइ ॥ १ ॥

झूठ है तक्य:[1] बन्दों पर कब देता है इन्सान तुझे
देता है भगवान तुझे बस देता है भगवान तुझे
देन उसी की देन है जिससे पूरी सारी आस रहे
देन उसी की देन है जिससे कोई न बाक़ी प्यास रहे
रक्खे तो वह आपही रक्खे मारे तो वह मारे आप
बन्दे के कुछ हाथ नहीं वह काम करे ख़ुद सारे आप
उसका हुकुम समझ लेने से दुनिया में सुख होता है
क्यों नहीं फिर शह-रग[2] अपनी उसका नाम पिरोता है
याद कर उसकी, याद कर उसकी याद जब उसकी आयेगी
'नानक' फिर कब राह में तुझको कोई रोक सतायेगी ॥१॥

---

१ सहारा २ हृदय की नाड़ी ।

उसतति मन महि करि निरंकार करि मन मेरे सति बिउहार ।
निरमल रसना अंम्रितु पीउ सदा सुहेला करि लेहि जीउ ।
नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु साधसंगि बिनसै सभ संगु ।
चरन चलउ मारगि गोबिंद मिटहि पाप जपीऐ हरि बिंद ।
करि हरि करम स्रवनि हरि कथा,
हरि दरगह नानक ऊजल मथा ।। २ ।।

मन मेरे कर हम्द प्रभू की उसको निर-अंकार समझ
मन मेरे कर याद उसी की यह सच्चा व्योहार समझ
करले पाक ज़बाँ अपनी को नाम का अमरित पीता जा
जी में राहत पाता जा सुख चैन से हरदम जीता जा
मालिक के नैरंग[1] हैं सारे जग की रंगत देख ज़रा
भूलेगी हर संगत तुझको साधु की संगत देख ज़रा
चलता जा तू राह में हक़ की हर दम पाँव बढ़ाता जा
नाम ख़ुदा का लेता जा और सारे पाप मिटाता जा
काम कर उसका बात सुन उसकी मन तेरा मसरूर[2] रहे
'नानक' फिर दरगाह में रब की तेरा रुख़[3] पुरनूर[4] रहे ।।२।।

बडभागी ते जन जग माहि सदा सदा हरि के गुन गाहि ।
राम नाम जो करहि बीचार से धनवंत गनी संसार ।
मनि तनि मुखि बोलहि हरि मुखी सदा सदा जानहु ते सुखी ।
एको एकु एकु पछानै इत उत की ओहु सोझी जानै ।
नाम संगि जिसका मनु मानिआ,
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ।। ३ ।।

दुनिया में ख़ुशक़िस्मत[5] हैं और अच्छे भाग उन्हीं के हैं
रब के जो गुन गायें हरदम मीठे राग उन्हीं के हैं
याद करे जो नाम प्रभू का मन में रक्खे ध्यान वही
दुनिया में धनवान वही है दुनिया में धनवान वही
तन मन से और मुँह से अपने नाम जो रब का लेता है
रहता है ख़ुशहाल हमेशा नाम उसे सुख देता है

१ माया, तिलिस्म २ प्रसन्न ३ चेहरा, आकृति ४ प्रकाशमय ५ भाग्यवान ।

एक खुदा मानेगा, बस एक को ही पहचानेगा
इस दुनिया[1] की जानेगा वह उस दुनिया[2] की जानेगा
नाम से मन लग जाये जिसका जिसने मन से माना है
'नानक' उसने सच्चे दिल से पाक निरंजन[3] जाना है ।।३।।

गुरु प्रसादि आपन आपु सुझै तिसकी जानहु त्रिसना बुझै ।
साध संगि हरि हरि जसु कहत सरब रोग ते ओहु हरि जनु रहत ।
अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु ग्रिहसत महि सोई निरबानु ।
एक ऊपरि जिसु जन की आसा तिसकी कटीऐ जम की फासा ।
पारब्रहम की जिसु मनि भूख नानक तिसहि न लागहि दूख ।।४।।

जिसको गुरु की रहमत से खुद खोज अपना मिल जायेगा
उसकी प्यास बुझेगी सारी मन की सेरी[4] पायेगा
साधु की संगत पाकर जो रब नाम को जपता जाता है
सब रोगों से पास रहे तन मन की सेहत[5] पाता है
जो बन्दा उस एक खुदा की हम्द-सना[6] दिन रात करे
अपने ही घर बार में रहकर हासिल आप नजात[7] करे
वह बन्दा जो एक ईश पर आस लगाये रहता है
मौत का फन्दा कट जायेगा वह कब ज़हमत[8] सहता है
पाक खुदा की भूख जिसे है चैन वह रब से पायेगा
दुख उसका मिट जाये 'नानक' दुख उसका मिट जायेगा ।।४।।

जिस कउ हरि प्रभु मनि चिति आवै,
सो संतु सुहेला नही डुलावै ।
जिसु प्रभु अपुना किरपा करै सो सेवकु कहु किस ते डरै ।
जैसा सा तैसा द्रिसटाइआ अपुने कारज महि आपि समाइआ ।
सोधत सोधत सोधत सीझिआ गुर प्रसादि ततु सभु बूझिआ ।
जब देखउ तब सभु किछु मूलु,
नानक सो सूखमु सोई असथूलु ।। ५ ।।

---

१ लोक २ परलोक ३ निर्लेप, निर्विकार (ईश्वर) ४ तृप्ति ५ आरोग्य
६ स्तुति-गुणगान ७ मुक्ति ८ क्लेश ।

मन में याद करे जो रब की हक़[१] में ध्यान लगाये वह
सन्त वही खुशहाल रहे मन दुबधा में कब पाये वह
जिस पर रब की किरपा हो वह रहमत उसकी पायेगा
वह बन्दा कब डरता है और उसको कौन डरायेगा
ऐन हक़ीक़त[२] जैसा रब है वैसा दरशन पाता है
अपनी ही मख़लूक़[३] के अन्दर ख़ालिक़[४] आप समाता है
ढूँढा ढूँढा ढूँढा जिसने पाई ढूँढ रसाई[५] है
उसने गुरु की रहमत से सब असल हक़ीक़त[६] पाई है
हर शै[७] की जड़ मूल वही है उसका सारा जलवा[८] है
ज़ाहिर[९] उसका जलवा 'नानक' बातिन[१०] उसका जलवा है ॥५॥

नह किछु जनमै नह किछु मरै आपन चलितु आप ही करै।
आवनु जावनु द्रिसटि अनद्रिसटि आगिआकारी धारी सब स्त्रिसटि।
आपे आपि सगल महि आपि अनिक जुगति रचि थापि उथापि।
अविनासी नाही किछु खंड धारण धारि रहिओ ब्रहमंड।
अलख अभेव पुरख परताप आपि जपाए त नानक जाप ॥६॥

कौन जहाँ में आता है और कौन यहाँ से मरता है
ख़ालिक़ मालिक आप ही अपना खेल ये सारा करता है
एक ज़ाहिर[११] एक बातिन[१२] है एक आता है एक जाता है
सब उसके फ़रमान[१३] में हैं हर शै[१४] को आप चलाता है
हर शै में वह आप बसा है उसके रंग निराले हैं
आप बनाये आप बिगाड़े उसके ढंग निराले हैं
बाक़ी[१५] है वह बाक़ी है लाफ़ानी[१६] है लाफ़ानी है
उससे कुल चलती है जगकी वह दुनिया का बानी[१७] है
आली[१८] है वह मख़्फ़ी[१९] है वह शान उसी की बाला[१८] है
जिसको आप जपावे 'नानक' नाम की जपता माला है ॥६॥

---

१ सत्यस्वरूप २ परम सत्य ३ सृष्टि ४ स्रष्टा ५ पैंठ ६ सच्चाई ७ चीज़ ८ छबि ९ व्यक्त १० अव्यक्त (छिपा हुआ) ११ व्यक्त १२ अव्यक्त १३ हुक्म १४ वस्तु १५ शेष (स्थायी) १६ अविनाशी १७ मूल १८ श्रेष्ठ १९ गुप्त।

जिन प्रभु जाता सु सोभावंत सगल संसारु उधरै तिन मंत।
प्रभ के सेवक सगल उधारन प्रभ के सेवक दूख बिसारन।
आपे मेलि लए किरपाल गुर का सबदु जपि भए निहाल।
उनकी सेवा सोई लागै जिसनो क्रिपा करहि बडभागै।
नामु जपत पावहि बिसरामु,
नानक तिन पुरख कउ ऊतम करि मानु ॥ ७ ॥

जिसने रब को जान लिया शान उसकी न्यारी न्यारी है
हरफ़ कहे जब एक भी मुँह से बनती दुनिया सारी है[1]
रब के ऐसे बन्दे ही दुनिया को पार लगायेंगे
रब के ऐसे बन्दे ही दुनिया का रोग मिटायेंगे
रहमत वाला रब उन सब को अपने साथ मिलायेगा
गुरु से सुनकर नाम जपे सो दुनिया में सुख पायेगा
ऐसे रब के बन्दों की इन्सान वो सेवा करता है
जिस पर रहमत रब की है और जिसका भाग निखरता है
नाम जपे जो नाम जपे पाता है अमन-अमान[2] वही
'नानक' सब से अच्छा है रखता है ऊँची शान वही ॥७॥

जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि सदा सदा बसै हरि संगि।
सहज सुभाइ होवै सो होइ करणैहारु पछाणै सोइ।
प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना जैसा सो तैसा द्रिसटाना।
जिसते उपजे तिसु माहि समाए ओइ सुखनिधान उनहू बनि आए।
आपस कउ आपि दीनो मानु नानक प्रभ जनु एको जानु ॥ ८॥

रंग में रब के रंगा है जो करता है या कहता है
रंग में रब के रंगा है वह साथ ख़ुदा के रहता है
होता है सो होने दे बेचैन न जी जिनहार[3] करे
समझे जो कुछ होता है करतार करे करतार करे
पाक प्रभू जो करता है सन्तों को मीठा लगता है
जैसा है वह ऐन हक़ीक़त[4] उनको वैसा लगता है

---

१ शब्द मात्र से दुनिया बनती है २ सुखचैन ३ त्राहि त्राहि ४ परम सत्य स्वरूप।

जात से जिसकी आये हैं फिर उसमें आप समायेंगे
चैन उन्हीं को हासिल है वह सुख की दौलत पायेंगे
शान बढ़ा कर अपनों की खुद अपनी शान बढ़ाई है
रब में और रब वालों में कब 'नानक' फ़र्क़ जुदाई है ।।८।।

सलोकु

सरब कला भरपूर प्रभ
बिरथा जाननहार ।।
जा कै सिमरनि उधरीऐ
नानक तिसु बलिहार ।। १ ।।

रब को सब तौफ़ीक़[1] है उसको सब का ध्यान
पार हूँ उसकी याद से 'नानक' मैं क़ुर्बान

असटपदी १५

टूटी गाढनहार गुपाल सरब जीआ आपे प्रतिपाल ।
सगल की चिंता जिसु मन माहि तिस ते बिरथा कोई नाहि ।
रे मन मेरे सदा हरि जापि अबिनासी प्रभु आपे आपि ।
आपन कीआ कछू न होइ जे सउ प्रानी लोचै कोइ ।
तिसु बिनु नाही तेरै किछु काम,
गति नानक जपि एक हरि नाम ।। १ ।।

जोड़ेगा सब टूटे बंधन दुनिया का करतार है वह
मेहर[2] से उसकी ज़िन्दा हैं सब आपही पालनहार है वह
उसके मन में सब की चिन्ता वह करता रखवाली है
पाते हैं सब उसके दर से खाली कौन सवाली[3] है
मन मेरे कर याद उसी को तेरा रब लाफ़ानी[4] है
आप से आप हुआ वह ज़ाहिर ज़ात उसकी लासानी[5] है

१ सामर्थ्य २ दया ३ याचना करनेवाला ४ अविनाशी ५ अद्वितीय ।

उसकी मेहर न जब तक होगी आप किये कुछ कार न हो
सौ सौ ज़ोर लगाये बन्दा काम मगर एक बार न हो
उसके सिवा ओ बन्दे तेरे कुछ भी काम न आयेगा
एक ख़ुदा का नाम लिये जा 'नानक' मुक्ती पायेगा ।।१।।

रूपवंतु होइ नाही मोहै प्रभ की जोति सगल घट सोहै ।
धनवंता होइ किआ को गरबै,
जा सभु किछु तिस का दीआ दरबै ।
अति सूरा जे कोऊ कहावै प्रभ की कला बिना कह धावै ।
जे को होइ बहै दातारु तिसु देनहारु जानै गावारु ।
जिसु गुरप्रसादि तूटै हउ रोगु नानक सो जनु सदा अरोगु ।।२।।

मान[1] न कर मग़रूर[2] न हो गो रूप सुहाना पाया है
रूप ख़ुदा का रूप है यह जो सब के मन को भाया है
इस पर नाज़[3] ग़रूर न कर गर पास तेरे कुछ माया है
धन दौलत सब मालिक की है सारा माल पराया है
बीर बहादुर बनता है बलबान अगर कहलाता है
रब का ज़ोर न हो गर तुझ में बोल कहाँ फिर जाता है
गर तू ख़ुद को समझा है तू दाता है या दानी है
सच्चा दाता समझेगा यह ऐन तेरी नादानी है
अपने गुरु की रहमत से जो अपना मान मिटायेगा
'नानक' सेहत[4] पायेगा वह सारे रोग गवाँयेगा ।।२।।

जिउ मंदर कउ थामै थंमनु तिउ गुर का सबदु मनहि असथंमनु ।
जिउ पाखाणु नाव चड़ि तरै प्राणी गुरचरण लगतु निसतरै ।
जिउ अंधकार दीपक परगासु गुर दरसनु देखि मनि होइ बिगासु ।
जिउ महा उदिआन महि मारगु पावै,
तिउ साधू संगि मिलि जोति प्रगटावै ।
तिन संतन की बाछउ धूरि नानक की हरि लोचा पूरि ।। ३ ।।

---

१ अभिमान २ घमण्डी ३ इतराना ४ स्वास्थ्य ।

जैसे एक सुतून[1] छत भर का सर पर बोझ उठाता है
मन भी गुरु की बातों से वैसे ही सहारा पाता है
नाव पै चढ़ कर पत्थर भी दरया से पार उतरते हैं
गुरु के पाँव में फ़ानी[2] भी दुनिया से पार उतरते हैं
जैसे दीपक जलने पर सब दूर अँधेरा होता है
वैसे गुरु के दर्शन से मन रौशन तेरा होता है
जैसे घन के जंगल में एक राही रस्ता पाता है
साध की संगत में भी वैसे नूर हमें मिल जाता है
दाता ऐसे सन्तों की कुछ बख़्शिश मुझको धूल करो[3]
'नानक' की इस आशा को मंज़ूर करो मक़बूल[4] करो ।।३।।

मन मूरख काहे बिललाईऐ पुरब लिखे का लिखिआ पाईऐ ।
दूख सूख प्रभ देवनहारु अवर तिआगि तू तिसहि चितारु ।
जो किछु करै सोई सुखु मानु भूला काहे फिरहि अजानु ।
कउन बसतु आई तेरै संग लपटि रहिओ रसि लोभी पतंग ।
राम नाम जपि हिरदे माहि नानक पति सेती घरि जाहि ।।४।।

मूरख क्यों चिल्लाता है मन मूरख क्यों चिल्लाता है
जो क़िस्मत का लिक्खा है मिल जाता है मिल जाता है
दुख भी उससे मिलता है तो सुख भी उससे मिलता है
अपने रब से ध्यान लगा क्यों दिल ग़ैरों को देता है
जो कुछ उससे मिलता है सुख जान उसे सुख जान उसे
भूला भूला क्यों फिरता है छोड़ न ओ नादान उसे
तू दुनिया में आया है तू साथ अपने क्या लाया है
लिपटा है परवान:[5] बन कर मन तेरा ललचाया है
मन में जप ले नाम ख़ुदा का कैसा नाम सुहाना है
इज़्ज़त शान बढ़ा ले 'नानक' आख़िर को घर जाना है ।।४।।

जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ राम नामु संतन घरि पाइआ ।
तजि अभिमानु लेहु मन मोलि राम नामु हिरदे महि तोलि ।
लादि खेप संतह संगि चालु अवर तिआगि विखिआ जंजालु ।

---

१ खम्भा २ नष्ट हो जानेवाले ३ भभूति दो ४ क़बूल करो ५ पतिंगा ।

धंनि धंनि कहै सभु कोइ मुख ऊजल हरि दरगह सोइ ।
इहु वापारु विरला वापारै नानक ता कै सद बलिहारै ॥५॥

जिन्स[1] ख़ुदा के नाम की है तू जिनको लेके आया है
सन्तों के घर मिलती है यह सन्तों ही की माया है
शान और शौक़त छोड़ के अपनी रख दे आगे मन का मोल
जिन्स ख़ुदा के नाम की लेकर उसको अपने मन में तोल
लाद के अपनी खेप ज़रा तू सन्तों के हमराह निकल
पाप के जंजालों से तू आज़ाद हो ख़ातिरख़्वाह[2] निकल
धन धन अच्छे भागों का शुहरा[3] हो पास और दूर तेरा
इज़्ज़त हो दरगाह में रब की चेहरा हो पुरनूर[4] तेरा
रब का जो व्योपार कमाये कम ऐसा व्योपारी है
रब के ऐसे व्योपारी पर 'नानक' भी बलिहारी है ॥५॥

चरन साध के धोइ धोइ पीउ अरपि साध कउ अपना जीउ ।
साध की धूरि करहु इसनानु साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु ।
साध सेवा वडभागी पाईऐ साध संगि हरि कीरतनु गाईऐ ।
अनिक बिघन ते साधू राखै हरिगुन गाइ अंम्रित रसु चाखै ।
ओट गही संतह दरि आइआ सरब सूख नानक तिह पाइआ ॥६॥

साधों के चरनों को धोकर उनका धोवन पीते जाव
जीवन माया साधों पर क़ुरबान करो और जीते जाव
साधों के चरनों की मिट्टी ले लेकर स्नान करो
दिल उन पर क़ुरबान करो तुम जी उन पर क़ुरबान करो
साध की सेवा करते हैं जो भाग ख़ुदा से पाते हैं
साधों की संगत में रह कर हम्द ख़ुदा की गाते हैं
सब जोखों[5] और ख़तरों से ये साध[6] बचाये रक्खेंगे
रब के जो गुन गाते हैं वह अमरित का रस चक्खेंगे
जो सन्तों का साया लेने उनके दरवाज़े आते हैं
'नानक' अपने सन्तों से सुख चैन वो सारे पाते हैं ॥६॥

---

१ सौदा (नाम रूपी सौदा), जिनिस २ मनचाहा होकर ३ प्रसिद्धि ४ प्रकाशमय
५ जोखिम ६ सन्तजन ।

मिरतक कउ जीवालनहार भूखे कउ दैवत आधार ।
सरबनिधान जाकी द्रिसटी माहि पुरब लिखेका लहणा पाहि ।
सभु किछु तिस का ओहु करनै जोगु,
तिसु बिनु दूसर होआ न होगु ।
जपि जन सदा सदा दिनु रैणी सभ ते ऊच निरमल इह करणी ।
करि किरपा जिस कउ नामु दीआ,
नानक सो जनु निरमल थीआ ।। ७ ।।

जिसमें जान न बाक़ी होगी उसमें जान वो डालेगा
भूखों का आधार वही है कंगालों को पालेगा
उसकी एक नज़र में सारे जग की दौलत माया है
क़िस्मत में जो लिक्खा है हर एक ने उससे पाया है
जो कुछ है सब माल है उसका वह हर शै[1] का बानी[2] है
वैसा गुज़रा और न होगा यकता[3] है लासानी[3] है
ओ बन्दे दिन रात हमेशा वरद[4] किये जा नाम यही
नाम लिये जा नाम लिये जा काम है ऊंचा काम यही
जिसको अपनी रहमत से ख़ुद रब ने नाम सिखाया है
उसका जीवन पाक है 'नानक' नाम से रुतबा पाया है ।।७।।

जा कै मनि गुर की परतीति तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ।
भगतु भगतु सुनीऐ तिहु लोइ जा कै हिरदै एको होइ ।
सचु करणी सचु ता की रहत सचु हिरदै सति मुखि कहत ।
साची द्रिसटि साचा आकारु सचु बरतै साचा पासारु ।
पारब्रहमु जिनि सचु करि जाता नानक सो जनु सचि समाता ।।८।।

सच्चे दिल से मान के जो ईमान गुरू पर लाता है
याद ख़ुदा की करता है वह रब में ध्यान जमाता है
जिसके मन में एक बसे जो एक में ध्यान लगाता है
जग के तीनो तबकों[5] में फिर भक्त वही कहलाता है
काम सब उसके सच्चे हों वह सच में जीता रहता है
सच है उसके दिल के अन्दर सच ही मुँह से कहता है

---

१ वस्तु २ मूल ३ अद्वितीय ४ जप ५ तीनों लोकों में ।

सच है उसकी आँखों में वह सच की दुनिया पायेगा
सच ही सब में बरतेगा वह सच ही सच फैलायेगा
जिसने रब को सच के अन्दर सच्चे दिल से पाया है
'नानक' वह इन्सान है सच्चा सच में आप समाया है ॥८॥

सलोकु

रूपु न रेख न रंगु किछु
त्रिहु गुण ते प्रभ भिन ॥
तिसहि बुझाए नानका
जिसु होवै सुप्रसंन ॥ १ ॥

पाक वह रंग और रूप से तीन गुनों[1] से दूर
रब जिनसे खुश 'नानका' पाएँ उसका नूर

असटपदी १९

अबिनासी प्रभु मन महि राखु मानुख की तू प्रीति तिआगु ।
तिस ते परै नाही किछु कोइ सरब निरंतरि एको सोइ ।
आपे बीना आपे दाना गहिर गंभीरु गहीरु सुजाना ।
पारब्रहम परमेसुर गोबिंद क्रिपा निधान दइआल बखसंद ।
साध तेरे की चरनी पाउ नानक कै मनि इहु अनराउ ॥१॥

रब की याद बसा ले मन में रब तेरा लाफ़ानी[2] है
उलफ़त[3] छोड़ इन्सानों की सब प्यार ये तेरा फ़ानी[4] है
उससे बढ़कर और नहीं कुछ उससे आली कोई नहीं है
हर शै में बेरोक वही है उससे खाली कोई नहीं है
सब कुछ उस पर रौशन है वह बीना[5] है वह दाना है
गहरा और उथला भी है वह दानिशमन्द[6] सयाना है

---

१ सत-रज-तम २ अविनाशी ३ प्रेम ४ नाशवान ५ देखनेवाला (सर्वद्रष्टा)
६ बुद्धि-विवेक-मय ।

पाक ख़ुदा परमेश्वर है गोविन्द है पालनहार है वह
रहमत[१] का वह मख़्ज़न[२] है रहमान है वह ग़फ़्फ़ार[३] है वह
साध जो तेरे प्यारे हैं सुख पाऊँ मैं उनके क़दमों में
'नानक' की यह ख़्वाहिश है लग जाऊँ मैं उनके क़दमों में ।।१।।

मनसा पूरन सरना जोगु जो करि पाइआ सोई होगु ।
हरन भरन जा का नेत्र फोरु तिस का मंत्रु न जानै होरु ।
अनद रूप मंगल सद जाकै सरब थोक सुनीअहि घरि ताकै ।
राज महि राजु जोग महि जोगी तप महि तपसरु ग्रिहसत महि भोगी।
धिआइ धिआइ भगतह सुखु पाइआ,
नानक तिसु पुरख का किनै अंतु न पाइआ ।।२।।

सब का मंशा पूरा करके सब को आप बचाता है
जो उसने लिख रक्खा है वह पूरा होता जाता है
आये दुनिया जाये दुनिया उसके एक इशारे से
वाक़िफ़[४] और नहीं कोई भी उसके मन्तर न्यारे से[५]
रूप आनन्द उसी का है कुछ उसको रंज मलाल नहीं
सुनता हूँ मैं घर में उसके चीज़ किसी का काल[६] नहीं
राजों में वह राजा है और जोगी हों तो जोगी है
तप वालों में तप वाला है घरवालों में वह भोगी है
भक्त जो हरदम ध्यान लगाये चैन उसे मिल जायेगा
ऐसी आला मस्ती का कुछ 'नानक' अन्त न पायेगा ।।२।।

जा की लीला की मिति नाहि सगल देव हारे अवगाहि ।
पिता का जनमु कि जानै पूतु सगल परोई अपुनै सूति ।
सुमति गिआनु धिआनु जिन देइ जन दास नामु धिआवहि सेइ ।
तिहु गुण महि जाकउ भरमाए जनमि मरै फिरि आवै जाए ।
ऊच नीच तिस के असथान जैसा जनावै तैसा नानक जान ।।३।।

उसने ऐसी लीला धारी जिसका अन्त न आया है
देवता सब थक थक कर हारे भेद कब उसका पाया है

---

१ दया २ भण्डार ३ अति क्षमाशील ४ जानकार ५ अनोखे मंत्र से
६ अभाव ।

बच्चे को मालूम हो क्योंकर बाप कहाँ से आया है
तार में कुल संसार पिरोकर रब ने हार बनाया है
जिसको उसने होश दिया है ज्ञान और ध्यान वह पाते हैं
उसके सच्चे दास वही हैं उसमें ध्यान लगाते हैं
सतगुन, रजगुन, तमगुन में वह जिसका मन भरमाता है
जीता है गर मरता है गर आता है गर जाता है
ऊँचे हों या नीचे हों सब उनके हैं स्थान सदा
जैसा आप समझाये 'नानक' वैसा उसको जान सदा ।।३।।

नाना रूप नाना जाके रंग नाना भेख करहि इक रंग ।
नाना बिधि कीनो बिसथारु प्रभु अविनासी एकंकारु ।
नाना चलित करे खिन माहि पूरि रहिओ पूरनु सभ ठाइ ।
नाना बिधि करि बनत बनाई अपनी कीमति आपे पाई ।
सभ घट तिसके सभ तिसके ठाउ जपि जपि जीवै नानक हरि नाउ ।।४।।

रूप नये औ रंग नये नैरंग[1] नये औ ढंग नये
आप रहे यकरंग मगर बहुरूप हैं रंगारंग नये
गूनागूनी[2] जलवों[3] से फैलाता है संसार वही
ज़ात उसकी लाफ़ानी[4] है एकता है एक ओंकार वही
चाल नई और ढाल नई पल पल में स्वाँग वह करता जाये
कामिल ज़ात उसी की है वह सारे भरने भरता जाये
रंग रंगीली ख़ल्क़[5] बनाये ख़ूब दिखाये सुन्नत[6] वह
आपही अपनी क़दर वह जाने आपही अपनी क़ीमत वह
हर मन में घर उसका है हर घर में उसकी बस्ती है
नाम को जप कर जीता है बस यह 'नानक' की हस्ती है ।।४।।

नाम के धारे सगले जंत नाम के धारे खंड ब्रहमंड ।
नाम के धारे सिम्रिति बेद पुरान नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ।
नाम कें धारे आगास पाताल नाम के धारे सगल आकार ।

---

१ माया २ रंग बिरंगे ३ दृश्यों से ४ अविनाशी ५ सृष्टि ६ नाना प्रकार के नियम, तरीक़े, पद्धतियाँ ।

नाम के धारे पुरीआ सभ भवन नाम कै संगि उधरे सुनि स्रवन।
करि किरपा जिसु आपनै नामि लाए,
नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए ॥ ५ ॥

नाम के बल पर क़ायम रहकर खिलक़त[1] बसती रहती है
नाम के बल पर ख़ित्तों[2] तबक़ों[3] संसारों की हस्ती है
नाम के बल पर हिन्दू को स्मृतियाँ वेद पुरान मिले
नाम के बल पर ज्ञान मिले औ नाम के बल पर ध्यान मिले
नाम के बल पर क़ायम यह आकाश भी है पाताल भी है
नाम के बल पर हासिल सारे जग को इस्तिक़लाल[4] भी है
नाम के बल पर घर क़ायम हों नगरी में आबादी हो
नाम ख़ुदा का सुन कर हासिल बन्दे को आज़ादी हो
जिसको अपनी रहमत से वह नाम की उल्फ़त[5] देता है
'नानक' चौथे दरजे[6] में वह कामिल मुक्ती लेता है ॥५॥

रूपु सति जाका सति असथानु पुरखु सति केवल परधानु।
करतूति सति सति जाकी बाणी सति पुरख सभ माहि समाणी।
सति करमु जा की रचना सति मूलु सति सति उतपति।
सति करणी निरमल निरमली जिसहि बुझाए तिसहि सभ भली।
सतिनामु प्रभ का सुखदाई बिस्वासु सति नानक गुर ते पाई ॥६॥

सच्चा उसका रूप भी है और सच्चा ही स्थान भी है
ख़ालिस[7] सच्ची उसकी हस्ती[8] जो सब में परधान[9] भी है
सच्चे उसके काम भी हैं और सच्ची उसकी बात भी है
सच्ची उसकी ज़ात भी है पुर[10] जिससे मौजूदाद[11] भी है
सच्चे फ़ेल[12] सब उसके हैं और सच्चा ख़ूब पसारा[13] है
जड़ भी सच है मूल भी सच है सच्चा पेड़ भी सारा है
ख़ालिस[14] से भी बढ़कर ख़ालिस सच्चा काम बनाये वह
जिसको आप सुझाये वह हर शै को नेक बनाये वह

---

१ सृष्टि २ प्रदेशों में ३ लोकों, वर्गों ४ ठहराव ५ प्रीति ६ चौथे पद (मुक्ति पद) में ७ एकमात्र ८ अस्तित्व ९ प्रधान, श्रेष्ठ १० परिपूर्ण ११ सारा दृश्य जगत् १२ कर्म १३ (सृष्टि का) फैलाव १४ विशुद्ध, अद्वितीय।

सच्चा नाम ख़ुदा का है जो दुनिया का सुखदाता है
यह सच्चा ईमान हमेशा 'नानक' गुरु से पाता है ॥६॥

सति बचन साधू उपदेस सति ते जन जा कै रिदै प्रवेस ।
सति निरति बूझै जे कोइ नामु जपत ताकी गति होइ ।
आपि सति कीआ सभु सति- आपे जानै अपनी मिति गति ।
जिसकी स्रिसटि सु करणैहारु अवर न बूझि करत बीचारु ।
करते की मिति न जानै कीआ नानक जो तिसु भावै सो बरतीआ ॥७॥

क़ौल[1] है सच्चा साधों का उपदेश वो सच फ़रमाते हैं
सच्चे वह भी जिनके मन में मन्दिर साध बनाते हैं
ख़ालिस-सच[2] को जो समझे यह भेद जिसे मिल जाता है
नाम प्रभू का जपता है वह और छुटकारा पाता है
सच्ची ज़ात ख़ुदा की है सब सच्चा काम बनाया है
अपनी हद और हालत को ख़ुद आप उसी ने पाया है
अपनी रचना आप रचे कर्ता है वह करतार है वह
राय न पूछे और किसी से पूरा ख़ुद मुख़्तार[3] है वह
आप जो ख़ुद मख़लूक़[4] हुआ ख़ालिक़[5] के भेद न पायेगा
जो उसको मन्ज़ूर है 'नानक' वह पूरा हो जायेगा ॥७॥

बिसमन बिसम भए बिसमाद जिनि बूझिआ तिसु आइआ स्वाद ।
प्रभ कै रगि राचि जन रहे गुर कै बचनि पदारथ लहे ।
ओइ दाते दुख काटनहार जा कै संगि तरै संसार ।
जन का सेवकु सो बडभागी जन कै संगि एक लिव लागी ।
गुन गोविंद कीरतनु जनु गावै गुर प्रसादि नानक फलु पावै ॥८॥

हैरत[6] को भी हैरत है हैरानी[7] को हैरानी है
जिसने उसको जाना है बस लज़्ज़त[8] उसने जानी है
रब का रंग निराला है इस रंग में जो रच जाते है
गुरु की बातें सुन सुन कर वह आला मक़सद[9] पाते हैं

---

१ वचन २ परम सत्य ३ परम स्वतन्त्र ४ पैदा किया हुआ ५ पैदा करने वाला (स्रष्टा) ६ आश्चर्य ७ विस्मय ८ आतमानन्द ९ उद्देश्य ।

ऐसे दाता लोगों ही से दुख का दूर आज़ार[1] हुआ
उनकी संगत पाने से दुनिया का बेड़ा पार हुआ
अच्छे भाग उन्हीं के हैं जो उनकी सेवा करते हैं
संगत उनकी पा पाकर रब वाहिद[2] का दम भरते हैं
हम्द ख़ुदा की करते हैं जो मालिक के गुन गाते हैं
'नानक' गुरु की रहमत से वह दुनिया में फल पाते हैं ।।८।।

सलोकु

आदि सचु जुगादि सचु ।।
है भी सचु ।।
नानक होसी भी सचु ।। १ ।।

सच्चा रोज़ अज़ल से पहले सच्चा रोज़ अज़ल भी वह
सच्चा है वह आज भी 'नानक' सच्चा होगा कल भी वह§

असटपदी १७

चरन सति सति परसनहार पूजा सति सति सेवदार ।
दरसनु सति सति पेखनहार नामु सति सति धिआवनहार ।
आपि सति सति सभ धारी आपे गुण आपे गुणकारी ।
सबदु सति सति प्रभु बकता सुरति सति सति जसु सुनता ।
बुझनहार कउ सति सभ होइ नानक सति सति प्रभु सोइ ।।१।।

पांव भी उनके सच्चे हैं जो उनको चूमे सच्चा है
पूजा उसकी सच्ची है जो उसको पूजे सच्चा है
दरशन उसका सच्चा है और सच्चा है जो दरशन पाये
नाम भी उसका सच्चा है और सच्चा है जो ध्यान लगाये

---

१ रोग २ एकमात्र प्रभु ।

§ उस सत्यस्वरूप परमात्मा की स्थिति सृष्टि-रचना से पहले, सृष्टि-रचना के समय, आज भी तथा भविष्य में भी सर्वदा रहेगी ।

ज़ात भी उसकी सच्ची जिसने सब संसार सम्हाला है
आप ही नेकी आप ही ख़ुद वह नेकी देने वाला है
सच्चा पाक कलाम है उसका सच्चा है जो कहता है
होश भी सच्चा सच्चा वह जो उसकी सुनता रहता है
सोच समझ जो रखता है उस दाता को सब सच्चा है
कह 'नानक' रब[1] सच्चा है रब सच्चा है रब सच्चा है ॥१॥

सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ करन करावन तिनि मूलु पछानिआ ।
जा कै रिदै बिस्वासु प्रभ आइआ ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ ।
भै ते निरभउ होइ बसाना जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाना ।
बसतु माहि ले बसतु गडाई ताकउ भिन न कहना जाई ।
बूझै बूझनहारु बिवेक नाराइण मिले नानक एक ॥ २ ॥

सच का रूप समझ कर जिसने दिल में रब को माना है
करता-धरता दुनिया का उस ख़ालिक़[2] को पहचाना है
जिसके मन में रब पर अपने तव्वकुल[3] है ईमान भी है
उसके मन में ज्ञान है रौशन हासिल सब इरफ़ान[4] भी है
ख़ौफ़ से वह बेख़ौफ़ रहे कब ख़ौफ़ को उसने जाना है
ज़ात से जिसकी आया उसमें आख़िरकार समाना है
जिन्स[5] कोई हमजिन्स[6] में अपने जिस दम आन समाई है
हरफ़ दुई[7] का कौन कहे दोनों की दूर जुदाई[8] है
बन्दा जिसमें सोच समझ है साफ़ उस पर यह बात हुई
नारायन की ज़ात में मिलकर एक ही 'नानक' ज़ात हुई ॥२॥

ठाकुर का सेवकु आगिआकारी ठाकुर का सेवकु सदा पूजारी ।
ठाकुर के सेवक कै मनि परतीति ठाकुर के सेवक की निरमल रीति ।
ठाकुर कउ सेवकु जानै संगि प्रभ का सेवकु नाम कै रंगि ।
सेवक कउ प्रभ पालनहारा सेवक की राखै निरंकारा ।
सो सेवकु जिसु दइआ प्रभु धारै,
नानक सो सेवकु सासि सासि समारै ॥३॥

---

१ प्रभु २ स्रष्टा ३ भरोसा ४ ब्रह्मज्ञान ५ वस्तु, ज़ात ६ अपने समान वस्तु या ज़ात (जीव ब्रह्म में) ७ द्वैत भाव, अपना-बिराना ८ अलगाव ।

अपने प्यारे बन्दे का वह परदा ढांके ऐब छिपाये
इज़्ज़त अपने सेवक की वह सर पर रख कर हाथ बचाये
शान बड़ाई देने वाला दास को इज़्ज़त देता है
अपना नाम जपाने की सेवक को हिम्मत देता है
मालिक अपने सेवक की ख़ुद शान और इज़्ज़त रखता है
रुतबा उसका कौन बताये ऐसी अज़मत[1] रखता है
रब के प्यारे सेवक को फिर कौन पहुँचने वाला है
ऊँचे से वह ऊंचा है वह बाला से भी बाला है
जिस सेवक को पाक ख़ुदा ने अपनी ख़िदमत बख़्शी है
'नानक' उस सेवक को उसने हर सू[2] इज़्ज़त बख़्शी है ।।३।।

अपने जन का परदा ढाकै अपने सेवक की सर पर राखै ।
अपने दास कउ देइ वडाई अपने सेवक कउ नामु जपाई ।
अपने सेवक की आपि पति राखै ताकी गति मति कोइ न लाखै ।
प्रभ के सेवक कउ को न पहूचै प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे ।
जो प्रभि अपनी सेवा लाइआ,
नानक सो सेवकु दह दिसि प्रगटाइआ ।।४।।

मालिक का जो सेवक है हर हुक्म वह पूरा करता है
मालिक का जो सेवक है मालिक की सेवा करता है
मालिक का जो सेवक है ईमान से मन भरपूर करे
मालिक का जो सेवक है वह सब अच्छे दस्तूर[3] करे
मालिक का जो सेवक है ख़ुद मालिक उसके संग में है
मालिक का जो सेवक है वह रँगा उसी के रंग में है
मालिक का जो सेवक है रब उसको रोज़ी देता है
मालिक का जो सेवक है रब उसकी पत[4] रख लेता है
मालिक का जो सेवक है रब मेहर[5] से जिसको शाद[6] करे
'नानक' ऐसा सेवक ही मालिक को हरदम याद करे ।।४।।

नीकी कीरी महि कल राखै भसम करै लसकर कोटि लाखै ।
जिस का सासु न काढत आपि ता कउ राखत दे कर हाथ ।

१ प्रतिष्ठा २ हर प्रकार से ३ अमल, आचरण ४ लाज ५ दया ६ प्रसन्न ।

मानस जतन करत बहु भाति तिसके करतब बिरथे जाति।
मारै न राखै अवरु न कोइ सरब जीआ का राखा सोइ।
काहे सोच करहि रे प्राणी जपि नानक प्रभ अलख विडाणी ॥५॥

एक नन्हीं सी चिउँटी को जब ज़ोर अता[1] रब पाक[2] करे
लश्कर लाख करोड़ों का वह पल के अन्दर खाक करे
जिसकी जान न ले वह मालिक जिसको मार न डाले आप
हाथ करम का उस पर रखकर उसकी जान बचा ले आप
बन्दा कोशिश लाख करे वह हिम्मत सौ सौ बार करे
करतब उसके जायँ अकारथ कार वो सब बेकार करे
मारे किसकी ताक़त है और रखे किसकी हिम्मत है
सब की रक्षा करने वाली उस खालिक़[3] की क़ुदरत[4] है
ओ फ़ानी[5] किस सोच में है तू सोच ने तुझको मारा है
'नानक' जप ले नाम उसी का जो बिन-देखा[6] न्यारा है ॥५॥

बारंबार बार प्रभु जपीऐ पी अंम्रितु इहु मनु तनु ध्रपीऐ।
नामु रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ,
तिसु किछु अवरु नाही द्रिसटाइआ।
नामु धनु नामो रूपु रंगु नामो सुखु हरिनाम का संगु।
नाम रसि जो जन त्रिपताने मन तन नामहि नामि समाने।
ऊठत बैठत सोवत नाम कहु नानक जन कै सद काम ॥६॥

हरदम नाम उसी का लो हर बार उसी की याद करो
अमरित है यह पी पी कर तन सेर करो दिल शाद करो
गुरु के मुंह से सुन कर जिसने नाम का हीरा पाया है
उसको फिर इस दुनिया में कुछ और नज़र कब आया है
नाम ही उसकी दौलत है हक़ नाम[7] ही रूप और रंग भी है
नाम ही उसकी राहत[8] है हक़ नाम ही उसके संग भी है
नाम के रस को प्रेम के लब[9] से जो खुशक़िस्मत पीता है
नाम बसे तन मन में उसके नाम के बल पर जीता है

---

१ प्रदान २ पवित्र प्रभु ३ स्रष्टा ४ प्रकृति ५ क्षणभंगुर (नाशवान)
६ अलख (न दिखाई देने वाला) ७ सतूनाम ८ सुख चैन ९ होठ।

जब वह उट्ठे बैठे सोये　　नाम ही लेता रहता है
काम ये रब के बन्दे का है　　सुन जो 'नानक' कहता है ।।६।।

बोलहु जसु जिहवा दिन राति　　प्रभि अपनै जन कीनी दाति ।
करहि भगति आतम कै चाइ　　प्रभ अपने सिउ रहहि समाइ ।
जो होआ होवत सो जानै　　प्रभ अपने का हुकमु पछानै ।
तिस की महिमा कउन बखानउ　　तिस का गुनु कहि एक न जानउ ।
आठ पहर प्रभ बसहि हजूरे　　कहु नानक सेई जन पूरे ।। ७ ।।

जो बन्दे दिन रात ज़बाँ से　　दाता के गुन गाते हैं
निअमत खास खुदा ने दी है　　काम में उसको लाते हैं
शौक़ से भक्ती करते हैं　　जो रब से प्रेम लगाते हैं
रब में आप समाते हैं[1]　　सुख चैन हमेशा पाते हैं
गुजरा है सो जानें वह　　जो आयेगा सो जानें वह§
हुक्म प्रभू का मानें वह　　उस मालिक को पहचानें वह
उसकी क्या तारीफ़ करूँ　　वह तारीफ़ों से बाला है
एक सिफ़त मालूम नहीं　　वह लाखों वस्फ़ों वाला है
जिनके मन में आठ पहर　　उस रब की खास हुज़ूरी हो
'नानक' कामिल बन्दे[2] हैं　　यह बात उन्हीं की पूरी हो ।।७।।

मन मेरे तिनकी ओट लेहि　　मनु तनु अपना तिन जन देहि ।
जिन जनि अपना प्रभू पछाता　　सो जनु सरब थोक का दाता ।
तिसकी सरनि सरब सुख पावहि　　तिसकै दरसि सभ पाप मिटावहि ।
अवर सिआनप सगली छाडु　　तिसु जन की तू सेवा लागु ।
आवनु जानु न होवी तेरा　　नानक तिसु जनके पूजहु सद पैरा ।।८।।

ऐ मन मेरे ओट[3] लिया कर　　ऐसे कामिल बन्दों की
तन मन कर क़ुरबान उन्हीं पर　　छोड़ दे सोहबत गंदों की
जिसने रब को जाना है　　और शान उसकी पहचानी है
दिल वाला फ़ैयाज़[4] वही है　　सब चीज़ों का दानी है

---

१ तल्लीन होते हैं　२ पूर्ण भक्त　३ आश्रय　४ सखी, दाता ।
§ भूत-भविष्य का उन्हें ज्ञान रहता है ।

उसकी सोहबत पायेगा तो चैन तुझे मिल जायेगा
उसके दरशन पायेगा तो अपने पाप मिटायेगा
छोड़ दे उस चतुराई को हाँ छोड़ दे उस चतुराई को
ऐसे कामिल बन्दों की तू सेवा कर शैदाई[1] हो
छूटेगा सब मरना जीना आये और न जायेगा
पाँव उन्हीं के पूज सदा फिर 'नानक' मुक्ती पायेगा ॥८॥

सलोकु

सति पुरखु जिनि जानिआ
सतिगुरु तिस का नाउ ॥
तिस कै संगि सिखु उधरै
नानक हरिगुन गाउ ॥ १ ॥

सच्चे रब को जान ले सतगुरु वह कहलाय
'नानक' हर गुन गाय कर सिख[2] को पार लगाय

असटपदी १८

सतिगुरु सिख की करै प्रतिपाल सेवक कउ गुरु सदा दइआल ।
सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै गुरुबचनी हरिनामु उचरै ।
सतिगुरु सिख के बंधन काटै गुरु का सिखु विकार ते हाटै ।
सतिगुरु सिख कउ नाम धनु देइ गुरु का सिखु बडभागी हेइ ।
सतिगुरु सिख का हलतु पलतु सवारै,
नानक सतिगुरु सिख कउ जीअ नालि समारै ॥ १ ॥

सद्गुरु[3] अपने सिक्खों की ख़ुद आप हिफ़ाज़त करता है
सद्गुरु अपने सेवक पर हर आन इनायत करता है
सद्गुरु अपने सिक्खों का कुल मैल कपट धो देता है
गुरु के मुँह से सुन कर रब का नाम ज़बाँ से लेता है

१ उन्मत्त २ शिष्य (सिक्ख) ३ उत्तम गुरु ।

सद्गुरु अपने सिक्खों के सब क़ैद और बन्धन तोड़ेगा
सद्गुरु का जो चेला है शहवानी - लज़्ज़त[1] छोड़ेगा
सद्गुरु अपने सिक्खों को हक़ नाम की दौलत देता है
सद्गुरु का सिख अपने गुरु से अच्छी क़िस्मत लेता है
सद्गुरु दोनों जग में[2] अपने सिख को नेकोकार करे
'नानक' सद्गुरु सिक्खों को खुद अपनी जान[3] शुमार करे ।।१।।

गुर कै ग्रिहि सेवकु जो रहै गुर की आगिआ मन महि सहै ।
आपस कउ करि कछु न जनावै हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै ।
मनु बेचै सतिगुर कै पासि तिसु सेवक के कारज रासि ।
सेवा करत होइ निहकामी तिस कउ होत परापति सुआमी ।
अपनी क्रिपा जिसु आपि करेइ,
नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ ।। २ ।।

गुरु के जब स्थान में जाकर कोई सेवक रहता है
लाज़िम है सब करता जाये जो जो सद्गुरु कहता है
नाम की खातिर काम न हो मत अपना आप[4] जताये वह
हरदम रब का नाम जपे और उसमें ध्यान जमाये वह
सद्गुरु को मन अपना देकर मन का मोल चुकाता जाये
ठीक उसी के काम हों सारे जो चाहे सो पाता जाये
फल की ख्वाहिश दूर करे जो काम करे निष्काम करे
आखिर उसको रब मिल जाये रब के जो सब काम करे
रब की किरपा जिस पर होगी रहम उस पर फ़रमायेगा
'नानक' अपने गुरु से सेवक आप हिदायत[5] पायेगा ।।२।।

वीस बिसवे गुर का मनु मानै सो सेवकु परमेसुर की गति जानै ।
सो सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ अनिक बार गुर कउ बलि जाउ ।
सरब निधान जीअ का दाता आठ पहर पारब्रहम रंगिराता ।
ब्रहम महि जनु जन महि पारब्रहमु एकहि आपि नही कछु भरमु ।
सहस सिआनप लइआ न जाईऐ, नानक ऐसा गुर बडभागी पाईऐ ।।३।।

---

१ इन्द्रिय-लिप्सा २ लोक-परलोक में ३ अपने प्राणों के समान ४ अपनी प्रसिद्धि ५ पथ-प्रदर्शन ।

बीसों बिसवे सद्‌गुरु जिसको अपना सेवक मानेगा
पायेगा परमेश्वर को वह हाल खुदा का जानेगा
सच्चा वह सद्‌गुरु है जिसको नाम[1] का हर दम ध्यान रहे
ऐसे गुरु के सदक़े[2] जाओ जान उस पर क़ुरबान रहे
जितने माल ख़ज़ाने हैं लोगों को बख़्शिश[3] करता है
आठ पहर वह पाक प्रभू की उलफ़त[4] का दम भरता है
बन्दा रब में रब बन्दे में ज़ात से बाहर ज़ात नहीं
गो वाहिद[5] है ज़ात खुदा की इसमें शक की बात नहीं
चालाकी से पायें न उसको चतुराई से हाथ न आये
ऊँचे अच्छे भाग हों जिसके 'नानक' ऐसा गुरु वह पाये ।।३।।

सफल दरसनु पेखत पुनीत परसत चरन गति निरमल रीति ।
भेटत संगि राम गुन रवे पारब्रहम की दरगह गवे ।
सुनि करि बचन करन आघाने मनि संतोखु आतम पतीआने ।
पूरा गुरु अखयओ जा का मंत्र अंम्रित द्रिसटि पेखै होइ संत ।
गुण बिअंत कीमति नही पाइ,
नानक जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ।। ४ ।।

गुरु का दर्शन फल देता है मन को पाक बनाता है
छूकर उसके चरनों को सब चाल चलन धुल जाता है
रह कर उसकी संगत में जो ख़ालिक़ के गुन गाता है
पाक ख़ुदा की दरगह का वह बन्दा रस्ता पाता है
उसकी बातें सुनने से कानों को लज़्ज़त मिलती है
मन को चैन मयस्सर[6] हो और रूह[7] को राहत[8] मिलती है
कामिल सद्‌गुरु जिसका मन्तर लाफ़ानी[9] कहलाता है
अमरित उसकी आँखों का मूरख को सन्त बनाता है
गुन उसके बेअन्त हैं 'नानक' उनका मोल न पायेंगे
अपने साथ मिलाये उनको जो जो उसको भायेंगे ।।४।।

जिहवा एक उसतति अनेक सति पुरख पूरन बिबेक ।
काहू बोल न पहुचत प्रानी अगम अगोचर प्रभ निरबानी ।

---

१ ईश्वर का नाम २ निछावर, बलि-बलि जाना ३ प्रदान ४ प्रेम ५ एकमात्र ६ उपलब्ध ७ आत्मा ८ शान्ति ९ शाश्वत, सच्चे गुरु का मंत्र सदैव फल देनेवाला होता है।

निराहारु निरवैरु सुखदाई ताकी कीमति किनै न पाई ।
अनिक भगत बंदन नित करहि चरन कमल हिरदै सिमरहि ।
सद बलिहारी सतिगुरु अपने
नानक जिसु प्रसादि ऐसा प्रभु अपने ।। ५ ।।

मेरे मुँह में एक जबाँ   वस्फ़ों का उसके अन्त नहीं[1]
कामिल[2] आक़िल[3] सच्ची हस्ती   उस जैसा भगवन्त नहीं
फ़ानी[4] की क्या ताक़त है   लाफ़ानी[5] की तारीफ़ बताये
वह आली[6] वह मख्फ़ी[7] हस्ती   चिन्ता उसके पास न आये
पाक है खाने पीने से   बेलाग़[8] है वह सुखदायी है
वह अनमोल प्रभू है उसकी   क़ीमत किसने पाई है
संत अनेक उसीके आगे   हरदम सीस झुकाते हैं
पाक कमल से चरनों पर   वह दिल से ध्यान जमाते हैं
ऐसे प्यारे सद्‌गुरु पर   फिर जान न क्यों बलिहारी हो
मेहर[9] से जिसकी 'नानक' रबका   नाम ज़बाँ पर जारी हो ।।५।।

इहु हरि रसु पावै जनु कोई अंम्रितु पीवै अमरु सो होइ ।
उसु पुरख का नाही कदे बिनास जा कै मनि प्रगटे गुन तास ।
आठ पहर हरि का नामु लेइ सचु उपदेसु सेवक कउ देइ ।
मोह माइआ कै संगि न लेपु मन महि राखै हरि हरि एकु ।
अंधकार दीपक परगासे नानक भरम मोह दुख ते नासे ।। ६ ।।

कोई कोई बन्दा है जो   यह अमरित रस पीता है
जो अमरित रस पीता है   लाफ़ानी[10] होकर जीता है
वस्फ़ों वाला मालिक जिसके   सीने में घर करता है
बाक़ी है लाफ़ानी है   वह कब दुनिया में मरता है
आठ पहर जो अपने दिल से   नाम ख़ुदा का लेता है
सच्ची सच्ची पाक हिदायत   वह सेवक को देता है
माया से कुछ प्यार न रखे   और न दिल ललचाये वह
एक प्रभू की याद करे बस   उस पर ध्यान जमाये वह

---

१ ईश्वर के गुण अनन्त हैं, गुणगान के लिए जिह्वा एक ही है २ पूर्ण ३ ज्ञानमय ४ नाशवान् ५ अविनाशी ६ श्रेष्ठ ७ गुप्त, अव्यक्त ८ निस्पृह, निरपेक्ष ९ दया १० अमर ।

जैसे दूर हो सब तारीकी[1] जब दीपक पुरनूर रहे
वैसे गुरु मिलने से 'नानक' मोह भरम दुख दूर रहे ।।६।।

तपति माहि ठाढि वरताई अनदु भाइआ दुख नाठे भाई ।
जनम मरन के मिटे अंदेसे साधू के पूरन उपदेसे ।
भउ चूका निरभउ होइ बसे सगल बिआधि मन ते खै नसे ।
जिसका सा तिनि किरपा धारी साध संगि जपि नामु मुरारी ।
थिति पाई चूके भ्रम गवन सुनि नानक हरि हरि जसु स्रवन।।७।।

आग लगी हो सीने में तो ठंडक यह पहुँचाता है
मन को सुख आनन्द मिले दुख दूर सभी हो जाता है
साधू अपने सेवक से उपदेश जो पूरा कहता है
कब फिर जीने मरने का अन्देशा बाक़ी रहता है
मन का सारा ख़ौफ़ मिटे बेख़ौफ़[2] हो तो बेबाक[3] रहे
दूर हों सब तकलीफ़ें मन की मन हर दुख से पाक रहे
जब साधों की संगत में तू नाम ख़ुदा का याद करे
अपना प्यारा करके तुझको रहमत वाला शाद[4] करे
'नानक' बन्दा वस्फ़[5] ख़ुदा का दिल से जब सुन पाता है
दूर तनासुख[6] होता है सुख पाता भरम मिटाता है ।।७।।

निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही कला धारि जिनि सगली मोही ।
अपने चरित प्रभ आपि बनाए अपुनी कीमति आपे पाए ।
हरि बिनु दूजा नाही कोइ सरब निरंतरि एको सोइ ।
ओति पोति रविआ रूप रंग भए परगास साध कै संग ।
रचि रचना अपनी कल धारी अनिक बार नानक बलिहारी ।।८।।

हर गुन[7] से वह पाक भी है और आप वह हर गुनवाला है
उसकी न्यारी क़ुदरत ने हैरत[8] में सब को डाला है
अपने रंग वह आपही जाने अपना खेल बनाये आप
अपना रुतबा आप वह समझे अपना दाम लगाये आप

---

१ अँधियाली २ निर्भय ३ बेभरम ४ प्रसन्न ५ सिफ़त, अलौकिकता
६ आवागमन ७ सत-रज-तम तीनों गुण ८ आश्चर्य ।

बे उसके रब कोई नहीं वह यकता[1] है लासानी[2] है
रूह वही है सब अन्दर सब जानों का जानी है[3]
शकलें उसकी रंग उसी के उसका ताना बाना है
साधों की संगत में रह कर नूर[4] उसका पहचाना है
रचना ख़ूब रचाई उसने क़ुदरत उसकी न्यारी है
सौ सौ बार ख़ुदा अपने पर ख़ुद 'नानक' बलिहारी है ॥८॥

सलोकु

साथि न चालै बिनु भजन
बिखिआ सगली छारु ॥
हरि हरि नामु कमावना
नानक इहु धनु सारु ॥ १ ॥

साथ चलेगी बन्दगी[5] दुनिया मिट्टी धूल
हरदम याद ख़ुदाय की 'नानक' धन का मूल[6]

असटपदी १६

संत जना मिलि करहु बीचारु एकु सिमरि नाम आधारु ।
अवरि उपाव सभि मीत बिसारहु चरन कमल रिद महि उरि धारहु ।
करन कारन सो प्रभु समरथु द्रिड़ु करि गहहु नामु हरि वथु ।
इहु धनु संचहु होवहु भगवंत संत जना का निरमल मंत ।
एक आस राखहु मन माहि सरब रोग नानक मिटि जाहि ॥१॥

सन्तों की संगत में मिल कर रब का सोच बिचार करो
एक प्रभू को याद करो हक़ नाम का तुम आधार करो
और जतन सब छोड़ो बाबा छोड़े हैं सब और उपाव
पाक कमल से चरनों को तुम दिल में ख़ूब बसाते जाव

---

१ अनोखा २ अद्वितीय ३ प्राणों का प्राण ४ तेज ५ ईश्वर-भक्ति ६ धनों का धन ।

वह दुनिया का करता धरता खालिक़[1] है करतार भी है
नाम पै उसके क़ायम रहना सब से अच्छा कार[2] भी है
उस धन के अम्बार[3] लगा लो धन धन भाग तुम्हारे हों
साफ़ है यह सन्तों का कहना जिससे वारे-न्यारे हों
अपने मन में आस करो तो एक ख़ुदा की आस करो
रोग मिटेंगे सारे 'नानक' सब रोगों का नास करो ॥१॥

जिसु धन कउ चारि कुट उठि धावहि,
सो धनु हरि सेवा ते पावहि ।
जिसु सुखु कउ नित बाछहि मीत सो सुखु साधू संगि परीति ।
जिसु सोभा कउ करहि भली करनी सा सोभा भजु हरि की सरनी ।
अनिक उपावी रोगु न जाइ रोगु मिटै हरि अवखधु लाइ ।
सरबनिधान महि हरि नामु निधानु जपि नानक दरगहि परवानु ॥२॥

चार तरफ़ जिस धन की ख़ातिर उठ कर भागे जाता है
रब की सेवा करने से वह धन तेरे हाथ आता है
तू जिस सुख की ख्वाहिश दिल में हर दम मेरे मीत करे
वह सुख सारा मिल जायेगा जब सन्तों से प्रीत करे
जिस इज़्ज़त की ख़ातिर हरदम तू करता है काम भले
वह इज़्ज़त मिल जायेगी जब दौड़ के रब के पास चले
लाख दुआएँ करता जा तू दूर न होगा रोग तेरा
नाम के दारू दरमत से मिट जाये रोग और सोग[4] तेरा
रब का नाम खज़ाना आला सारे माल खज़ानों में
नाम को जप कर 'नानक' मिल जा तू मक़बूल[5] इनसानों में ॥२॥

मनु परबोधहु हरि कै नाइ दह दिसि धावत आवै ठाइ ।
ताकउ विघनु न लागै कोइ जाकै रिदै बसै हरि सोइ ।
कलि ताती ठांढा हरिनाउ सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ ।
भउ बिनसै पूरन होइ आस भगति भाइ आतम परगास ।
तितु घरि जाइ बसै अबिनासी कहु नानक काटी जम फासी ॥३॥

---

१ स्रष्टा २ काम ३ ढेर ४ शोक ५ ईश्वर-स्वीकृत ।

नूर खुदा के नाम का लेकर मन को जब्र पुरनूर[1] करे
हासिल हो तस्कीन तुझे हक़ नाम ही दुबधा दूर करे
रोक रुकावट दूर रहे रस्ते में मुश्किल कोई न आये
जिसके दिल में नाम बसे हक़ नाम से वह सुख पाता जाये
जलती है कलजुग की दुनिया नाम से ठण्डक आयेगी
सुमरन कर लो सुमरन कर लो फिर राहत[2] मिल जायेगी
खौफ़ खतर सब जाते हैं हर आशा पूरी होती है
भक्ती भी हो प्रेम भी हो फिर रूह भी नूरी[1] होती है
वह घर जो लाफ़ानी[3] है इन्सान वहाँ जा रहता है
मौत की फांसी कट जाती है सुन जो 'नानक' कहता है ।।३।।

ततु बीचारु कहै जनु साचा जनमि मरै सो काचो काचा ।
आवागवनु मिटै प्रभ सेव आपु तिआगि सरनि गुरदेव ।
इउ रतन जनम का होइ उधारु हरि हरि सिमरि प्रान आधारु ।
अनिक उपाव न छूटनहारे सिंम्रिति सासत वेद बीचारे ।
हरि की भगति करहु मनु लाइ मनि बंछित नानक फल पाइ ।।४।।

असल हक़ीक़त वह सोचेगा जो सच्चों का सच्चा है
जीता है और मरता है जो झूठा है और कच्चा है
रब की सेवा करने से सब दूर तनासुख़[4] होता है
जिस पर हो गुरुदेव का साया मान खुदी[5] सब खोता है
हीरे जैसी जान है तेरी जान तेरी बच जायेगी
याद खुदा की करले उससे रूह सहारा पायेगी
कब छुटकारा होता है तुम करते जाओ लाख उपाव
गो सब वेदों शास्तरों में और स्मृतियों को पढ़ते जाव
अपने रब की भक्ती में जब मन को खूब लगाओगे
'नानक' फल मिल जायेगा तुम मन की आसा पाओगे ।।४।।

संगि न चालसि तेरै धना तूं किआ लपटावहि मूरख मना ।
सुत मीत कुटंब अरु बनिता इन ते कहहु तुम कवन सनाथा ।
राज रंग माइआ बिसथार इन ते कहहु कवन छुटकार ।

---

१ प्रकाशमय २ दिलासा, सान्त्वना ३ अमर ४ आवागमन ५ अहंकार ।

असु हसती रथ असवारी झूठा डंफु झूठु पासारी।
जिनि दीए तिसु बुझै न बिगाना नामु विसारि नानक पछुताना ।।५।।

जब दुनिया से जायेगा धन दौलत साथ न जायेगी
जिससे लिपटा फिरता है मन मूरख काम न आयेगी
कुनबा है या बीबी है या बेटा है या साथी है
क्यों बनता है मालिक सब का कोई न तेरा नाती है
राज भी हो और रंग भी हो धन दौलत का पुश्तारा[1] हो
ऐश जब इतने मिलते हों कब दुनिया से छुटकारा हो
हाथी है या घोड़ा है रथ गाड़ी शुतुर[2] सवारी है
झूठा ढोंग रचाया है यह झूठ नुमायश सारी है
जो मूरख उस बख्शिश वाले दाता को बिसरायेगा
भूल के उसके नाम को 'नानक' आखिर को पछतायेगा ।।५।।

गुर की मति तूं लेहि इआने भगति बिना बहु डूबे सिआने।
हरि की भगति करहु मन मीत निरमल होइ तुमारो चीत।
चरन कमल राखहु मन माहि जनम जनम के किलबिख जाहि।
आपि जपहु अवरा नाम जपावहु सुनत कहत रहत गति पावहु।
सारभूत सति हरि को नाउ सहजि सुभाइ नानक गुन गाउ ।।६।।

सुन नादान नसीहत गुरु की यों तुझ से फ़रमाते हैं
दाना भी जब छोड़ें भक्ती सौ सौ ग़ोते खाते हैं
यारों रब की भक्ति करो भक्ती ही से फल पाओगे
साफ़ तुम्हारा सीना[3] होगा मन को पाक बनाओगे
पाक कमल से चरनों का जब मन में प्रेम बसाओगे
पिछले सारे जनमों के तुम पाप मिटाते जाओगे
नाम की सिमरन आप करो और औरों से भी नाम जपाव
नाम को सुनकर नाम सुनाकर नाम पर रह कर मुक्ती पाव
नाम ही असली सच्ची शै[4] है नाम यह लेते जाओ तुम
मन के इत्मीनान[5] से 'नानक' मालिक के गुन गाओ तुम ।।६।।

गुन गावत तेरी उतरसि मैलु बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु।
होहि अचिंतु बसै सुल नालि सासि ग्रासि हरिनामु समालि।

---

१ ढेर, बोझ २ ऊँट ३ हृदय ४ पदार्थ ५ स्थिरता।

छाडि सिआनप सगली मना साध संगि पावहि सचु धना।
हरि पूंजी संचि करहु बिउहारु ईहा सुखु दरगह जैकारु।
सरब निरंतरि एको देखु कहु नानक जाकै मसतकि लेखु ।।७।।

गुन गाने से तेरे मन का मैल सभी छुट जायेगा
ज़हर ग़रूर तकब्बुर[१] का जो फैला है मिट जायेगा
मन से चिन्ता दूर रहे सुख पायेगा सुख पायेगा
हर दम नाम प्रभू का ले दुख जायेगा दुख जायेगा
छोड़ दे ऐ दिल सब चतुराई चतुराई कुछ काम न आये
साधू की संगत मिल जाये तो सच्ची सच्ची दौलत पाये
सच्चे रब को कर सरमाया[२] फिर सच्चा व्यौहार भी हो
दुनिया में सुख हासिल हो दरगाह[३] में जै-जैकार भी हो
एक का जलवा[४] देखे हरसू[५] सब में रब को पाये वह
भाग हों 'नानक' माथे पर फिर ख़ुशक़िस्मत कहलाये वह ।।७।।

एको जपि एको सालाहि एकु सिमरि एको मन आहि।
एकस के गुन गाउ अनंत मनि तनि जापि एक भगवंत।
एको एकु एकु हरि आपि पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि।
अनिक बिसथार एक ते भए एकु अराधि पराछत गए।
मन तन अंतरि एकु प्रभु राता गुर प्रसादि नानक इकु जाता ।।८।।

एक प्रभू का नाम लिये जा हम्द[६] उसी की गाये जा
एक प्रभू की याद किये जा मन में नाम बसाये जा
गाये जा गुन गाये जा रब वाहिद[७] है बेअन्त[८] भी है
तन मन से जप नाम उसका वह मालिक से भगवन्त भी है
एक वही है एक वही है एक अकेला आया है
हर सू उसका जलवा है हर शै में आप समाया है
वहदत[९] ही से कसरत[१०] निकली एक ही से सब आते हैं
रब[११] वाहिद की पूजा करले पाप सभी मिट जाते हैं
एक प्रभू के प्रेम में जिसने तन मन रँगे, सयाना है
'नानक' गुरु की रहमत से एक रब को उसने जाना है ।।८।।

---

१ अहंकार २ पूंजी ३ ईश्वर के दरबार में ४ तेज ५ हर तरफ़ ६ स्तुति ७ एकमेव, अद्वितीय ८ अनन्त ९ एकत्व १० अनेकत्व ११ प्रभु।

सलोकु

फिरत फिरत प्रभ आइआ
परिआ तउ सरनाइ ।।
नानक की प्रभ बेनती
अपनी भगती लाइ ।। १ ।।

फिरता फिरता आ गया रब के पाक दुवार
भगती की तौफ़ीक़ हो[1] 'नानक' को सरकार

असटपदी २०

जाचक जनु जाचै प्रभ दानु करि किरपा देवहु हरि नामु ।
साधजना की मागउ धूरि पारब्रहम मेरी सरधा पूरि ।
सदा सदा प्रभ के गुन गावउ सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउ ।
चरन कमल सिउ लागै प्रीति भगति करउ प्रभ की नित नीति ।
एक ओट एको आधारु नानकु मागै नामु प्रभ सारु ।।१।।

तू दाता मैं एक भिखारी लेने आया दान तेरा
नाम का तेरे दान मिले उस दान से हो इहसान तेरा
साध तेरे प्यारे हैं उनके दे चरनों की खाक[2] मुझे
पाक ख़ुदा ऐ पाक ख़ुदा दे ख़ाक की चुटकी पाक मुझे
गाऊँ मैं गुन गाऊँ मैं हर वक़्त तेरे गुन गाऊँ मैं
नाम तेरा हर साँस में लूँ बस तुझ पर ध्यान जमाऊँ मैं
पाक कमल के चरनों से ऐ दाता प्रीत लगाऊँ मैं
तेरी भक्ती काम मेरा हो भक्त तेरा बन जाऊँ मैं
ओट[3] मैं तेरी लेता हूँ है तूही पुश्तीबान[4] मेरा
पाक मुक़द्दस[5] नाम का या रब 'नानक' पाये दान तेरा ।।१।।

प्रभ की द्रिसटि महा सुखु होइ हरि रसु पावै बिरला कोइ ।
जिन चाखिआ से जन त्रिपताने पूरन पुरख नही डोलाने ।

---

१ ईश्वर-भक्ति की सामर्थ्य ईश्वर दे २ धूल ३ शरण ४ संरक्षण ५ पवित्र ।

सुभर भरे प्रेम रस रंगि उपजै चाउ साध कै संगि ।
परे सरनि आन सभ तिआगि अंतरि प्रगास अनदिनु लिवलागि ।
बड़भागी जपिआ प्रभु सोइ नानक नामि रते सुखु होइ ।।२।।

जिन पर रब की रहमत होगी खूब उन्हें सुख आयेगा
लेकिन कोई कोई होगा जो रब-रस[1] को पायेगा
जिस जिस ने यह रस चक्खा है उसको इत्मीनान हुआ
जम कर पाँव न उखड़ें उसके वह कामिल इन्सान हुआ
प्रेम के रस और रंग से उनका जी दायम[2] भरपूर रहे
संतों की संगत में ऊँचा उनको शौक़ जरूर रहे
सब का तक्य:[3] छोड़ के जो बस एक सहारा पाते हैं
मन उनका नूरानी हो वह हरदम ध्यान जमाते हैं
नाम प्रभू का जपने वाले खुशक़िस्मत कहलायेंगे
नाम से जो रंगीन हुए हैं 'नानक' वह सुख पायेंगे ।।२।।

सेवक की मनसा पूरी भई सतिगुर ते निरमल मति लई ।
जन कउ प्रभु होइओ दइआलु सेवकु कीनो सदा निहालु ।
बंधन काटि मुकति जनु भइआ जनम मरन दूखु भ्रमु गइआ ।
इछ पुंनी सरधा सभ पूरी रवि रहिआ सद संगि हजूरी ।
जिसका सा तिनि लीआ मिलाइ नानक भगती नामि समाइ ।।३।।

जो जो ख्वाहिश सेवक की हो रब पूरी कर देता है
अपने प्यारे सद्‌गुरु से वह पाक नसीहत लेता है
जिन पर रब की रहमत होगी काम उनके हो जायेंगे
रब के सेवक खुश रहते हैं राहत हरदम पायेंगे
सेवक के सब बन्धन टूटें दुनिया से छुटकारा हो
जीना मरना छोड़ेगा दुख दूर भरम का सारा हो
जो चाहे सो हो जाये हर ख्वाहिश दिल की पूरी हो
वासिल[4] हो वह ज़ात से रब की हासिल खास हज़ूरी[5] हो
जिसका वह कहलाता था उस मालिक से मिल जायेगा
भक्ती से वह नाम खुदा में 'नानक' आप समायेगा ।।३।।

---

१ परमानन्द २ सदैव ३ आश्रय ४ लीन, तन्मय ५ स्वयं ब्रह्मभाव प्राप्त हो ।

सो किउ बिसरै जि घाल न भानै सो किउ बिसरै जि कीआ जानै ।
सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ
सो किउ बिसरै जि जीवन जीआ ।
सो किउ बिसरै जि अगनि महि राखै गुर प्रसादि को बिरला राखै ।
सो किउ बिसरै जि बिखु ते काढै जनम जनम का टूटा गाढै ।
गुरि पूरै ततु इहै बुझाइआ,
प्रभु अपना नानक जन धिआइआ ।।४ ।।

उसको क्योंकर भूलें हम जो मेहनत का फल भूल न जाये
उसको क्योंकर भूलें हम जो काम किये पर फूल चढ़ाये
उसको क्योंकर भूलें हम हर चीज़ का जिससे दान मिले
उसको क्योंकर भूलें हम ज़िन्दा को जिससे जान मिले
उसको क्योंकर भूलें हम जो आग के अन्दर जान बचाये
गुरु की जिस पर रहमत हो वह कोई इसके दरशन पाये
उसको क्योंकर भूलें हम जो सबके पाप मिटाता है
जन्मों के सब टूटे फूटे[1] अपने साथ मिलाता है
मुरशिद[2] कामिल मेरा है यह गुर[3] उसने समझाया है
'नानक' मैंने अपने रब पर अपना ध्यान जमाया है ।।४।।

साजन संत करहु इहु काम आन तिआगि जपहु हरिनामु ।
सिमरि सिमरि सिमरि सुखपावहु आपि जपहु अवरह नामु जपावहु ।
भगति भाइ तरीऐ संसारु बिनु भगती तनु होसी छारु ।
सरब कलिआण सूख निधि नामु बूडत जात पाए बिस्रामु ।
सगल दूख का होवत नासु नानक नामु जपह गुन तासु ।।५।।

यारो ! सन्तो ! काम करो एक सबसे अच्छा काम करो
सब को छोड़ो सब को छोड़ो याद प्रभू का नाम करो
सुमरन कर लो सुमरन कर लो सुमरन से सुख पाते जाव
नाम जपो ख़ुद नाम जपो औरों को उसका नाम जपाव
भक्ती प्रेम की नैया पर संसार का सागर पार करो
छोड़ के भक्ती दाता की मत अपनी मिट्टी ख़्वार करो[4]

---

१ जन्म जन्मान्तर के पतितों को २ गुरु ३ मंत्र ४ दुर्दशाग्रस्त करो ।

रब का नाम ख़ज़ाना है सुख राहत जो पहुँचायेगा
डूबे जाने वालों को नाम उसका पार लगायेगा
नाम जपो हक़ नाम जपो दुख दूर करो दुख दूर करो
नाम ख़ज़ाना वस्फ़ों[१] का है 'नानक' जाप ज़रूर करो ।।५।।

उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ मन तन अंतरि इही सुआउ ।
नेत्रहु पेखि दरसु सुखु होइ मनु बिगसै साध चरन धोइ ।
भगत जना कै मनि तनि रंगु बिरला कोऊ पावै संगु ।
एक बसतु दीजै करि मइआ गुर प्रसादि नाम जपि लइआ ।
ताकी उपमा कही न जाइ नानक रहिआ सरब समाइ ।।६।।

प्रीत उगी और प्रेम का रस भी दिल में आया शौक़ यही
मन के अन्दर चाह यही है तन के अन्दर ज़ौक़[२] यही
आखों से दीदार[३] करो दीदार किये सुख पाऊँ मैं
साधों के चरनों को धोकर सुख आनन्द मनाऊँ मैं
मन जिनके रंगीन हुए हैं रब की पाक मुहब्बत में
कोई क़िस्मत वाला पहुँचे उन भक्तों की सुहबत में
बख़्शिश कर एक निअ़मत मुझ पर एक ही शै[४] का तालिब हूँ
अपने गुरु की रहमत से हक़ नाम जपूँ हक़ नाम जपूँ
उसकी महिमा क्योंकर हो वह फ़हम[५] में किसके आया है
हाज़िर[६] नाज़िर[७] है रब 'नानक' सब में आप समाया है ।।६।।

प्रभ बखसंद दीन दइआल भगत बछल सदा किरपाल ।
अनाथ नाथ गोबिंद गुपाल सरब घटा करत प्रतिपाल ।
आदि पुरख कारण करतार भगत जना के प्रान अधार ।
जो जो जपै सो होइ पुनीत भगति भाइ लावै मन हीत ।
हम निरगुनी आर नीच अजान
नानक तुमरी सरनि पुरख भगवान ।।७।।

सब पर बख़्शिश करने वाला आप ग़रीबनवाज़[८] ख़ुदा
भक्तों पर है रहमत उसकी सब पर उसका लुत्फ़[९] सदा

१ गुणों २ चाव ३ दर्शन ४ चीज ५ समझ ६ सब जगह मौजूद ७ सब कुछ देखनेवाला ८ दीनदयाल ९ दया ।

बेवाली[1] का वाली[2] है गोविन्द है वह गोपाल है वह
सबका पालनहार वही है देता रिज़्क़[3] और माल है वह
सब से अव्वल हस्ती उसकी खालिक़ है करतार है वह
भक्तों के मन क़ायम उसके रूहों[4] का आधार है वह
जो जो उसको जपता जाये पाक वह होता जाता है
भक्ती प्रेम उसी से रखे मन से प्रीत लगाता है
गुन तो पास नहीं कुछ मेरे नीच हूँ मैं अनजान हूँ मैं
तेरे साये[5] और अमाँ[6] में आया अब भगवान हूँ मैं ।।७।।

सरब बैकुंठ मुकति मोख पाए एक निमख हरि के गुन गाए ।
अनिक राज भोग बडिआई हरि के नाम की कथा मनि भाई ।
बहु भोजन कापर संगीत रसना जपती हरि हरि नीत ।
भली सुकरनी सोभा धनवंत हिरदै बसे पूरन गुरमंत ।
साध संगि प्रभ देहु निवास सरब सूख नानक परगास ।।८।।

पल भर भी जो अपने मन से मालिक के गुन गायेगा
जन्नत पाकर मुक्ती पाकर वह छुटकारा पायेगा
प्यारे रब के नाम की बानी[7] गर तेरे मन भाई है
शाही तूने पाई है और तेरी शान बड़ाई है
यह जो तेरे लब पर हरदम नाम प्रभू का आना है
भोजन है पोशाक है यह और मीठा मीठा गाना है
काम सब उसके अच्छे हैं ज़ीशान[8] है वह धनवाला है
जिसने अपने मन के अन्दर गुरु का मन्तर डाला है
दे संतों की संगत या रब उनके साथ बसेरा हो
'नानक' को सुख हासिल हो और ग़म का दूर अंधेरा हो ।।८।।

---

१ असहाय २ संरक्षक ३ रोज़ी ४ जीवों ५ छाया ६ शरण ७ वाणी
८ शान वाला ।

सलोकु

सरगुन निरगुन निरंकार
सुंन समाधी आपि ।।
आपन कीआ नानका
आपे ही फिरि जापि ।। १ ।।

गुन वाला बेगुन है वह जिसका रूप न रंग
आप समाध लगाए वह बे-साथी बे-संग
'नानक' अपने आप ही रचना आप रचाय
सब में ख़ुद महसूस[1] हो सब में आप समाय

असटपदी २१

जब आकारु इहु कछु न द्रिसटेता पाप पुंन तब कहते होता ।
जब धारी आपन सुंन समाधि तब बैर बिरोध किसु संगि कमाति ।
जब इसका बरनु चिहनु न जापत तब हरख सोग कहु किसहि बिआपत ।
जब आपन आप आपि पारब्रहम तब मोह कहा किसु होवत भरम ।
आपन खेलु आपि वरतीजा नानक करनैहारु न दूजा ।। १ ।।

दुनिया ज़ाहिर जब न हुई थी सारा आलम सोता था
पुन फिर कौन कमाता था और पाप कहाँ से होता था
जब वह आप समाधी में बैठा ख़ुद ध्यान जमाता था
कौन लड़ाई करता था और किससे बैर कमाता था
वरनों[2] की तक़सीम कहाँ थी रिश्ता और न नाता था
ख़ुशियाँ कौन मनाता था ग़म कौन जहाँ में खाता था
यह दुनिया मौजूद न थी बस एक वही रब आली था
माया का कुछ मोह न था संसार भरम से ख़ाली था
खेल उसी का है यह दुनिया उसमें आप समाया है
'नानक' पैदा करने वाला ग़ैर कहाँ से आया है ।।१।।

---

१ अनुभूत, मालूम २ चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ।

जब होवत प्रभ केवल धनी तब बंध मुकति कहु किस कउ गनी ।
जब एकहि हरि अगम अपार तब नरक सुरग कहु कउन अउतार ।
जब निरगुन प्रभ सहज सुभाइ तब सिव सकति कहहु कितु ठाइ ।
जब आपहि आपि अपनी जोति धरै तब कवन निडरु कवन कत डरै ।
आपन चलित आपि करनैहार नानक ठाकुर अगम अपार ।।२।।

वाहिद[1] ज़ात ख़ुदाई थी जब शान उसकी यकताई[2] थी
किसको बन्दिश[3] हासिल थी तब किसने मुक्ती पाई थी
बे-ग़ायत[4] बे-थाह[5] ख़ुदा जब एक अकेला छाया था
जन्नत में कौन आया था और दोज़ख़ किसने पाया था
सब वस्फ़ों से बाला रब को एक सकून में हस्ती थी
'शिव' किस घर में रहता था तब 'शक्ती' किस जाँ बसती थी
आप ही अपनी आँखों में जब अपना नूर दिखाता था
कौन किसी से डरता था और कौन निडर कहलाता था
आप चलाये आप चले याँ और कोई करतार नहीं
'नानक' रब की थाह नहीं कुछ वार नहीं कुछ पार नहीं ।।२।।

अबिनासी सुख आपन आसन तह जनम मरन कहु कहा बिनासन ।
जब पूरन करता भु सोइ तब जम की त्रास कहहु किसु होइ ।
जब अबिगत अगोचर प्रभ एका तब चित्र गुपत किसु पूछत लेखा ।
जब नाथ निरंजन अगोचर अगाधे तब कउन छुटे कउन बंधन बाधे ।
आपन आप आप ही अचरजा,
नानक आपन रूप आप ही उपरजा ।।३।।

सुख के आसन पर जब क़ायम वह हस्ती लाफ़ानी[6] थी
मरना जीना कसा था कब दुनिया आनी जानी थी
कामिल[7] ज़ात ख़ुदा की थी बस ख़ालिक़ एक अकेला था
मौत का किसको खटका था मरने का दूर झमेला था
फ़हम[8] से बाला[9] बातिन[10] रब वह आप अकेला रहता था
चित्र हिसाब न करता था और लेखा गुप्त न रखता था

---

१ एकमात्र २ अनुपम ३ बन्धन ४ अनन्त ५ अथाह ६ अविनाशी ७ पूर्ण ८ बुद्धि-विवेक ९ ऊँचा १० अन्तर्यामी ।

तनहाई[1] में वाहिद[2] मालिक पाक निरंजन[3] प्यारा था
किसको कौन जकड़ता था और किसका कब छुटकारा था
आप ही आप अचम्भा है हैरानी पर हैरानी है
अपना रूप वह आप ही धारे 'नानक' वह लासानी[4] है ।।३।।

जह निरमल पुरखु पुरख पति होता तह बिनु मैलु कहहु किआ धोता ।
जह निरंजन निरंकार निरबान,
तह कउन कउ मान कउन अभिमान ।
जह सरूप केवल जगदीस तह छल छिद्र लगत कहु कीस ।
जह जोति सरूपी जोति संगि समावै तह किसहि भूख कवनु त्रिपतावै ।
करन करावन करनैहारु नानक करते का नाहि सुमारु ।।४।।

पाक खुदा बेलाग[5] खुदा जब आप अकेला होता था
पाप कपट का मैल न था कौन इसको मल मल धोता था
जब बेलौस[6] निरंजन की बेसूरत सूरत होती थी
किसकी इज़्ज़त होती थी तब किसकी ज़िल्लत होती थी
एक मालिक की हस्ती थी मौजूद ही कोई ग़ैर न था
कौन किसी को छलता था दम झाँसा धोखा बैर न था
नूर था गुम नूरानी में§ कुछ मेरी और न तेरी थी
भूख किसे फिर लगती थी और किसको होती सेरी[7] थी
जो कुछ होता रहता है सब करता है करतार वही
करता है करतार ही 'नानक' है बेअन्त शुमार वही ।।४।।

जब अपनी सोभा आपन संगि बनाई,
तब कवन माइ बाप मित्र सुत भाई ।
जह सरब कला आपहि परबीन तह बेद कतेब कहा कोऊ चीन ।
जब आपन आपु आपि उरि धारै तउ सगन अपसगन कहा बीचारै ।
जह आपन ऊच आपन आपि नेरा तह कउन ठाकुरु कउनु कहीऐ चेरा ।
बिसमन बिसम रहे बिसमाद नानक अपनी गति जानहु आपि ।।५।।

---

१ केवलत्व २ एकमात्र ३ निर्विकार ४ अद्वितीय ५ निरपेक्ष ६ निस्पृह ७ तृप्ति ।

§ज्योति ज्योतिपुञ्ज में—जीव ईश्वर ही में लीन था ।

मख़्फ़ी[1] शान ख़ुदाई थी सब ज़ात में ज़ात समाई थी
कौन था उस दिन ख़्वैश[2] बिरादर बेटा बाप न माई थी
हर फ़न में वह कामिल[3] था मुहताज न था वह ग़ैरों का
वेद भी किसने बाँचे थे और कौन किताबें पढ़ता था
आप छिपाये रखता था तदबीरों के मज़मूनों को
कौन बिचारा करता था फिर नेक और नजिस[4] शुगूनों[5] को
दूर भी था वह पास न था वह पास भी था वह दूर न था
कौन था आक़ा[6] कौन था चाकर रुतबों का दस्तूर न था
दुनिया की नैरंगी[7] से हैरानी ही हैरानी है
'नानक' अपनी आप ही जाने शान बड़ी रब्बानी[8] है ।।५।।

जह अछल अछेद अभेद समाइआ ऊहा किसहि बिआपत माइआ ।
आपस कउ आपहि आदेसु तिहु गुण का नाही परवेसु ।
जह एकहि एक एक भगवंता तह कउन अचिंतु किसु लागै चिंता ।
जह आपन आपु आपि पतीआरा तह कउनु कथै कउनु सुननै हारा ।
बहु बेअंत ऊच ते ऊचा,
नानक आपस कउ आपहि पहूचा ।।६।।

भेदों छेदों छल से बाला आप में आप समाया था
तब माया के धोखे में कौन आया था कौन आया था
आप उसे आदेश थी अपनी ग़ैरों का परनाम न था
सतगुन रजगुन तमगुन का इस दुनिया में कुछ काम न था
आप ही था भगवान अकेला ग़ैरों का कुछ ज़िक्र न था
किसको चिन्ता लगती थी और कौन था जिसको फ़िक्र न था
अपने आप तसल्ली[9] थी और ख़ुद से इतमीनान भी था
कौन कथाएँ करता था और करता कौन बयान भी था
हद दर्जे बेअन्त है वह ऊँचों से ऊँची बात उसकी
अपनी आप नज़ीर[10] वह 'नानक' बेहमता[11] है ज़ात उसकी ।।६।।

जह आपि रचिओ परपंचु अकारु तिहु गुण महि कीनो बिसथारु ।
पापु पुंनु तह भई कहावत कोऊ नरक कोऊ सुरग बंछावत ।

---

१ गुह्य, छिपी हुई २ आत्मीय, स्वजन ३ पूर्ण ४ अपवित्र ५ शकुन ६ मालिक ७ माया-जाल ८ ईश्वरी ९ संतोष १० उदाहरण ११ अनुपम, बेमिसाल ।

आल जाल माइआ जंजाल हउमै मोह भरम भै भार ।
दूख सूख मान अपमान अनिक प्रकार कीओ बख्यान ।
आपन खेलु आपि करि देखै खेलु संकोचै तउ नानक एकै ॥७॥

यह रचना जो उसने रचाई झूठम झूठ पसारा है
सतगुन रजगुन तमगुन से फैलाया आलम सारा है
गुन फैले तो पाप औ पुन की बातों का मज़्कूर[1] हुआ
ज़िक्र करे एक दोज़ख़ का एक जन्नत से मसरूर[2] हुआ
जाल बिछाया माया ने धोखे के फैले तार कहीं
मोह कहीं है दुनिया का डर ख़ौफ़ कहीं पिनदार[3] कहीं
दुख भी आया सुख भी आया ज़िल्लत आई शान हुई
लाख तरह की हिकमत आई सौ सौ बात बयान हुई
आप ही 'नानक' खेल को देखे आप ही उसने खेला है
जब वह खेल समेटे अपना रहता आप अकेला है ॥७॥

जह अबिगतु भगतु तह आपि जह पसरै पासारु संत परतापि ।
दुहू पाख का आपहि धनी उन की सोभा उनहू बनी ।
आपहि कउतक करै अनद चोज आपहि रस भोगन निरजोग ।
जिसु भावै तिसु आपन नाइ लावै जिसु भावै तिसु खेल खिलावै ।
बेसुमार अथाह अगनत अतोलै,
जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै ॥८॥

मख़्फ़ी[4] रब के भक्त जहाँ[5] में आप वह उनमें प्यारा है
सन्तों के परताप की ख़ातिर फैला आलम सारा है
दोनों का है आप ही मालिक दोनों का है आप धनी
उनकी शोभा होती है तो समझे मेरी शान बनी
आप ही खेले खेल तमाशे ख़ुशियाँ आप मनाये वह
आप मगर बेलाग़[6] रहे गो सारे लुत्फ़ उठाये वह
जिनको चाहे नाम से अपने उनका प्रेम लगाये वह
हुक्म जिन्हें फ़रमाये वह दुनिया का खेल खिलाये वह
उसकी थाह शुमार न कोई कौन गिने या तौलेगा
जैसे आप बुलाये 'नानक' दास भी वैसे बोलेगा ॥८॥

---

१ चर्चा २ प्रसन्न ३ अभिमान ४ छिपे हुए ५ संसार ६ निरपेक्ष ।

सलोकु

जीअ जंत के ठाकुरा
आपे वरतणहार ॥
नानक एको पसरिआ
दूजा कह द्रिसटार ॥ १ ॥

मालिक कुल मख़लूक़[1] का सब में तेरा नूर[2]
'नानक' दुई[3] न देखिए फैला एक का नूर

असटपदी २२

आपि कथै आपि सुननैहारु आपहि एकु आपि बिसथारु ।
जा तिसु भावै ता स्रिसटि उपाए आपनै भाणै लए समाए ।
तुम ते भिंन नही किछु होइ आपन सूति सभु जगतु परोइ ।
जा कउ प्रभ जीउ आपि बुझाए सचु नामु सोई जनु पाए ।
सो समदरसी तत का बेता नानक सगल स्रिसटि का जेता ॥१॥

आप कहे और आप सुने तू अपनी आप हिकायत[4] है
वहदत[5] में तू वहदत है और कसरत[6] में तू कसरत है
दुनिया तूने पैदा की है जब खुद तुझ को भाया है
फिर जब तुझ को भाया है जग तुझमें आन समाया है
बे तेरे क्या होता है तू सब कुछ करने वाला है
जग की तूने तार में अपने आप पिरोई माला है
जिसको रब ने खुद समझाया सच से रखे काम वही
पाये सच्चा नाम वही हाँ पाये सच्चा नाम वही
सब को एक नज़र जो देखे असल हक़ीक़त[7] पाता है
सब दुनिया को जीते 'नानक' फ़ातेह[8] वह कहलाता है ॥१॥

जीअ जंत्र सभ ता कै हाथ दीन दइआल अनाथ को नाथु ।
जिसु राखै तिसु कोइ न मारै सो मूआ जिसु मनहु बिसारै ।

---

१ सृष्टि २ प्रकाश ३ द्वैतभाव ४ कहानी ५ एकत्व ६ अनेकत्व ७ परम सत्य ८ विजेता ।

तिसु तजि अवर कहा को जाइ सभ सिरि एकु निरंजन राइ।
जीअ की जुगति जा कै सभ हाथि अंतरि बाहरि जानहु साथि।
गुन निधान बेअंत अपार नानक दास सदा बलिहार ॥२॥

हाथ में उसके सारी खिल्क़त[1] मालिक सब जाँदारों में
बेवाली[2] का वाली[3] है वह चारा है बेचारों में
मालिक जिसको रखना चाहे कोई न उसको मारेगा
मौत के मुँह में जा पहुँचेगा जिसको आप बिसारेगा
उसका दामन छोड़ के हम ग़ैरों के पीछे जायें क्यों
सबके सर पर एक निरञ्जन ग़ैर का साया पायें क्यों
सबकी चाबी हाथ में उसके जीता रखे मारे वह
अन्दर बाहर ज़ाहिर-बातिन[4] हर दम साथ हमारे वह
सब वस्फ़ों का आप ख़ज़ीना[5] अन्त न कोई पायेगा
'नानक' दास उसी का है वह उसके वारी जायेगा ॥२॥

पूरनि पूरि रहे दइआल सभ ऊपरि होवत किरपाल।
अपने करतब जानै आपि अंतरजामी रहिओ बिआपि।
प्रतिपालै जीअन बहु भाति जो जो रचिओ सु तिसहि धिआति।
जिसु भावै तिसु लए मिलाइ भगति करहि हरि के गुण गाइ।
मन अंतरि बिस्वासु करि मानिआ,
करनहारु नानक इकु जानिआ ॥३॥

रहमत वाला बख़्शिश वाला हर जाँ उसकी हस्ती है
बारिश उसकी रहमत की हम सब पर ख़ूब बरसती है
अपने काम वह आप ही जाने कुछ कहना ख़ुदकामी[6] है
सब भेदों से वाक़िफ़ है वह आप ही अन्तरजामी है
पालनहार वह सब का है हर रंग व रोज़ी देता है
जो जो पैदा होता है वह नाम उसी का लेता है
जिसको वह मंज़ूर करे ख़ुद अपने साथ मिलाता है
रब की भक्ती करता है वह मालिक के गुन गाता है

---

१ सृष्टि २ असहाय ३ संरक्षक ४ व्यक्त-अव्यक्त ख़ज़ाना ६ उच्छृंखलता।

मन जिसका ईमान से पुर[१] है खास यक़ीं[२] से मानेगा
'नानक' करता-धरता सबका एक प्रभू को जानेगा ॥३॥

जनु लागा हरि एकै नाइ तिस की आस न बिरथी जाइ ।
सेवक कउ सेवा बनि आई हुकमु बूझि परम पदु पाई ।
इस ते ऊपरि नही बीचारु जा कै मनि बसिआ निरंकारु ।
बंधन तोरि भए निरवैर अनदिनु पूजहि गुर के पैर ।
इह लोक सुखीए परलोक सुहेले नानक हरि प्रभि आपहि मेले ॥४॥

रब का बन्दा याद जिसे हर वक़्त प्रभू का नाम रहे
पूरी हों उम्मीदें उसकी जग में कब नाकाम[३] रहे
खादिम[४] पर ख़िदमत[५] है लाज़िम[६] सेवक करता सेवा है
हुक्म जो माने रुतबा पाये सेवा ही से मेवा है
बे सूरत की सूरत वाला जिसके मन में बसता है
सब से ऊँची अक़्ल है उसकी आली उसका रुतबा है
सारे बन्धन तोड़ेगा वह बैर न रखे ग़ैरों से
रात हो दिन हो प्रेम उसे है अपने गुरु के पैरों से
इस दुनिया में सुख पाये और आगे भी आराम मिले
'नानक' वह मिल जाये रब से वस्ल[७] का उसको जाम[८] मिले ॥४॥

साध संगि मिलि करहु अनंद गुन गावहु प्रभ परमानंद ।
राम नाम ततु करहु बीचारु द्रुलभ देह का करहु उधारु ।
अंम्रितबचन हरि के गुन गाउ प्रान तरन का इहै सुआउ ।
आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा मिटै अगिआनु बिनसै अंधेरा ।
सुनि उपदेसु हिरदै बसावहु मन इछे नानक फल पावहु ॥५॥

संतों की संगत में मिलकर जी अपना ख़ुरसंद[९] करो
मालिक परमानन्द तुम्हारा गुन गाओ आनन्द करो
नाम ईश का हक़ है उसको सोचो और विचारो तुम
क़िस्मत से मिलता है जीना जीवन ख़ूब सवाँरो तुम

१ पूर्ण २ विश्वास ३ असफल ४ सेवक ५ सेवा ६ कर्तव्य ७ तन्मयता ८ (मदिरा का) प्याला ९ आनन्दित ।

ज़िक्र ख़ुदा का अमरित है गुन गाना काम तुम्हारा है
रूह किनारे लग जायेगी उससे पार उतारा है
देखो पास प्रभू को हरदम दिल पुरनूर[1] तुम्हारा है
मिट जाये अज्ञान तुम्हारा दूर अँधेरा सारा है
उपदेशों को सुन-सुन कर जब मन में नाम बसाओगे
'नानक' जैसा दिल चाहेगा वैसा ही फल पाओगे ॥५॥

हलतु पलतु दुइ लेहु सवारि राम नामु अंतरि उरिधारि ।
पूरे गुर की पूरी दीखिआ जिसु मनि बसै तिसु साचु परीखिआ ।
मनि तनि नामु जपहु लिव लाइ दूखु दरदु मन ते भउ जाइ ।
सचु वापारु करहु वापारी दरगह निबहै खेप तुमारी ।
एका टेक रखहु मन माहि नानक बहुरि न आवहि जाहि ॥६॥

यह दुनिया भी ख़ूब सवाँरी अगली दुनिया ख़ूब बनाव
नाम ख़ुदा का मन में लेकर मन की दुनिया आप बसाव
गुरु कामिल[2] तालीम[3] भी कामिल पक्का उसका रस्ता है
यह तालीम जो हासिल हो फिर हिरदे में सच बसता है
नाम जपो हक़ नाम जपो तन-मन में इससे प्रेम लगाव
नाम जपो हक़ नाम जपो सब ख़ौफ़ कटे दुख दर्द मिटाव
सच ही का ब्योहार करो गर तुम सच्चे ब्यौपारी हो
फिर दरगाह में रब के प्यारे सारी खपत तुम्हारी हो
मन को टेकन[4] दो एक रब की एक सहारा पाओ तुम
मरना जीना ख़त्म हो सारा 'नानक' आओ न जाओ तुम[5] ॥६॥

तिस ते दूरि कहा को जाइ उबरै राखनहारु धिआइ ।
निरभउ जपै सगल भउ मिटै प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ।
जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख नामु जपत मनि होवत सूख ।
चिंता जाइ मिटै अहंकारु तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु ।
सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरा नानक ता के कारज पूरा ॥७॥

---

१ प्रकाशपूर्ण २ पूर्ण ३ शिक्षा ४ आश्रय ५ आवागमन से मुक्त हो ।

तोड़ के उससे जोड़ो किससे दूर किधर को जाओगे
उस वाली[1] पर ध्यान जमाओ नाम से मुक्ती पाओगे
नाम जपो बेख़ौफ़ ख़ुदा का डर सब दूर तुम्हारा हो
तुम पर लुत्फ़ प्रभू का हो सब रोग मिटें छुटकारा हो
जिसको मालिक आप बचाए वह क्योंकर दुख पाता है
नाम जपो हक़ नाम जपो दुख जाता है सुख आता है
उसकी चिन्ता दूर हो सारी ख़ौफ़ न कुछ पिन्दार[2] रहे
रुतबा उसका किसने पाया वह सब का सरदार रहे
सर पर बीर बहादुर गुरु जब अपना साया डालेगा
काम हो फिर सब पूरे 'नानक' हर मक़सद[3] को पा लेगा ।।७।।

मति पूरी अंम्रितु जा की द्रिसटि दरसनु पेखत उधरत स्रिसटि ।
चरन कमल जा के अनूप सफल दरसनु सुंदर हरि रूप ।
धंनु सेवा सेवकु परवानु अंतरजामी पुरखु प्रधानु ।
जिसु मनि बसै सु होत निहालु ता कै निकटि न आवत कालु ।
अमर भए अमरा पदु पाइआ साध संगि नानक हरि धिआइआ ।।८।।

आक़िल कामिल ज़ात है उसकी नैन में अमरित न्यारा है
उसका दरशन करने से दुनिया का पार उतारा है
ज़ात उसकी लासानी है और पाँव कमल से प्यारे हैं
सुन्दर उसका दरशन है दरशन ने काम सवाँरे हैं
सेवा भी बा-बरकत[4] है शुभ उसकी खास ग़ुलामी है
सब में वह परधान भी है वह सब का अन्तरजामी है
जिसके मन में रब बसता है वह आनन्द मनायेगा
मौत भी उसके पास न फटके जुग जुग जीता जायेगा
साध की संगत में जो 'नानक' रब में ध्यान लगाता है
लाफ़ानी[5] हो जाता है लाफ़ानी रुतबा पाता है ।।८।।

---

१ संरक्षक २ घमण्ड (अहंकार) ३ उद्देश्य, लक्ष्य, इच्छा ४ बढ़ती वाली
५ अनश्वर ।

सलोकु

गिआन अंजनु गुरि दीआ
अगिआन अंधेर बिनासु ॥
हरि किरपा ते संत भेटिआ
नानक मनि परगासु ॥ १ ॥

गुरु ने बख़्शा ज्ञान का वह सुरमा पुरनूर[1]
जिससे सब अज्ञान का हुआ अँधेरा दूर
रब का जिस पर लुत्फ़[2] हो संत की सुहबत पाए
'नानक' मन में नूर हो दिल रौशन हो जाए

असटपदी २३

संत संगि अंतरि प्रभु डीठा नामु प्रभू का लागा मीठा ।
सगल समिग्री एकसु घट माहि अनिक रंग नाना द्रिसटाहि ।
नउ निधि अंम्रितु प्रभ का नामु देही महि इस का बिस्रामु ।
सुंन समाधि अनहत तह नाद कहनु न जाई अचरज बिसमाद ।
तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाए नानक तिसु जन सोझी पाए ॥१॥

सन्तों की संगत में रह कर रब को मन में पाया है
मीठा-मीठा नाम ख़ुदा का उससे लुत्फ़[3] उठाया है
रंग बिरंगी दुनिया जिसकी सूरत न्यारी न्यारी है
एक ख़ुदा बस एक ख़ुदा के मन में देखो सारी है
नाम ख़ुदा का नौ गंजीने[4] ख़ालिस अमरित रब का नाम
उसके तन में नाम बसेरा उसके मन में हो आराम
उस ख़ामोश समाधी में अनहद झन्कार समाती है
वह कैफ़ीयत कौन बताये ख़ुद हैरत गुम हो जाती है
उसके दरशन पायेगा वह जिसको आप दिखायेगा
जिसको ख़ुद समझाये 'नानक' सूझ वही कुछ पायेगा ॥१॥

---

१ ज्योति से पूर्ण २ दया ३ आनन्द ४ नौ निधि ।

सो अंतरि सो बाहरि अनंत घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत ।
धरनि माहि आकास पइआल सरब लोक पूरन प्रतिपाल ।
बनि तिनि परबति है पारब्रहमु जैसी आगिआ तैसा करमु ।
पउण पाणी बैसंतर माहि चारि कुंट दहदिसे समाहि ।
तिस ते भिन नही को ठाउ गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ ।।२।।

अन्दर भी बेअन्त[1] वही है बाहर भी बेअन्त वही
सब के दिल में आप समाया मन में है भगवन्त वही
उसका जलवा[2] धरती में आकाश में है पाताल में है
सारे जग को पाल रहा है जो जो जिस जिस हाल में है
बन में वह पर्वत में वह तिनके में वह रब आली है
जो-जो होता रहता है कब हुक्म से उसके खाली है
पानी आग हवा इन सब में अपना आप रचाता है
चारों खूंट में उसका जलवा हर सू आप समाता है
हर जाये वह हाज़िर नाज़िर उसको सब में पाओगे
'नानक' गुरु की रहमत हो तब आप सुखी हो जाओगे ।।२।।

बेद पुरान सिम्रित महि देखु ससी अर सूर नख्यत्र महि एकु ।
बाणी प्रभ की सभु को बोलै आपि अडोलु न कबहू डोलै ।
सरब कला करि खेलै खेल मोलि न पाईऐ गुणह अमोल ।
सरब जोति महि जा की जोति धारि रहिओ सुआमी ओति पोति ।
गुर परसादि भरम का नासु नानक तिन महि एहु बिसासु ।।३।।

वेद पुरान स्मृतियों को हमने देखा भाला है
सूरज चाँद सितारों में उस रब का नूर उजाला है
दुनिया में जो बोलेगा सो उसकी बोली बोलेगा
क़ायम है वह दायम है डोला है और न डोलेगा
खेल वह खेले हर सूरत में खेल भी उसका न्यारा है
उसके गुन अनमोल हैं सारे मोल का किसको यारा[3] है
नूर उसका हर नूर में है वह आप है नूर ज़माने का
ताना उसका बाना उसका मालिक ताने बाने का

---

१ अनन्त २ कान्ति ३ सामर्थ्य ।

गुरु की रहमत जिस दम होगी शक जाये ईक़ान[1] मिले
गुरु की रहमत जिस दम होगी 'नानक' यह ईमान मिले ॥३॥

संत जना का पेखनु सभु ब्रहम संत जना कै हिरदै सभि धरम ।
संत जना सुनहि सुभ बचन सरब बिआपी राम संगि रचन ।
जिनि जाता तिस की इह रहत सति बचन साधू सभि कहत ।
जो जो होइ सोई सुखु मानै करन करावनहारु प्रभु जानै ।
अंतरि बसे बाहरि भी ओही नानक दरसनु देखि सभ मोही ॥४॥

सन्तों की आँखों से देखो सब में रब का नूर मिले
सन्तों के हिरदै में देखो धरम का नूर ज़हूर[2] मिले
सन्तों के कानों में हरफ़ जो आया अच्छा आया है
सन्त रचे हैं रब में जो सब जग में आप समाया है
जिसने रब को पहचाना वह सच में रहता सहता है
सच्चे बोल सब उसके हैं जो कहता है सच कहता है
दुनिया में जो होता है वह उसको अच्छा जानेगा
हर कारज का करने वाला अपने रब को मानेगा
अन्दर जलवा बाहर जलवा उसके सब नज़्ज़ारे[3] हैं
मनमोहन का दरशन पाकर 'नानक' सब मन हारे हैं ॥४॥

आपि सति कीआ सभु सति तिसु प्रभ ते सगली उतपति ।
तिसु भावै ता करे बिसथारु तिसु भावै ता एकंकारु ।
अनिक कला लखी नह जाइ जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ।
कवन निकटि कवन कहीऐ दूरि आपे आपि आप भरपूरि ।
अंतर गति जिसु आपि जनाए नानक तिसु जन आपि बुझाए ॥५॥

सच्चा है रब सच्चा है जो करता है सब सच्चा है
दुनिया पैदा करने वाला आप वही रब सच्चा है
जब तक उसकी मरज़ी होगी फैला यह संसार रहे
फिर जब उसकी मरज़ी हो बस खाली एक ओंकार रहे
ताक़त लामहद्दूद[4] है उसकी कब लिखने में आये वह
जिसको उसका मन चाहे ख़ुद अपने साथ मिलाये वह

---

१ दृढ़ विश्वास २ प्रत्यक्ष ३ दृश्य ४ असीम ।

किसको समझें पास है यह — और किसको जाने दूर है वह
अपने में वह आप समाया — हर शै[1] में भरपूर है वह
जिसको मन के अन्दर अपनी — हस्ती जाप जतायेगा
राज़[2] वही समझेगा 'नानक' — भेद वही कुछ पायेगा ॥५॥

सरब भूत आपि वरतारा सरब नैन आपि पेखनहारा ।
सगल समग्री जा का तना आपन जसु आप ही सुना ।
आवन जानु इकु खेलु बनाइआ आगिआकारी कीनी माइआ ।
सभ कै मधि अलिपतो रहै जो किछु कहणा सु आपे कहै ।
आगिआ आवै आगिआ जाइ नानक जा भावै ता लए समाइ ॥६॥

जो फ़ितरत[3] के अनसर[4] हैं — हर अनसर में वह आप समाये
सब की वह आँखों से झाँके — आप ही देखे आप दिखाये
सारी दुनिया उसका तन है — उसका रूप निराला है
आप करे तारीफ़ वह अपनी — आप ही सुनने वाला है
जग में आना जग से जाना — उसने खेल बनाया है
उसके एक इशारे पर यह — चलती सारी माया है
सब में वह मौजूद भी है — और दूर भी सबसे रहता है
जो कुछ हम तुम कहते हैं — खुद कहता है खुद कहता है
आयें उसकी मरज़ी से हम — जायें उसकी मरज़ी से
ज़ात में उसकी 'नानक' आन — समायें उसकी मरज़ी से ॥६॥

इस ते होइ सु नाही बुरा ओरै कहहु किनै कछु करा ।
आपि भला करतूति अति नीकी आपे जानै अपने जी की ।
आपि साचु धारी सभ साचु ओति पोति आपन संगि राचु ।
ता की गति मिति कही न जाइ दूसर होइ त सोझी पाइ ।
तिस का कीआ सभु परवानु गुर प्रसादि नानक इहु जानु ॥७॥

जो कुछ उससे होता है — वह काम बुरा कब होता है
बोलो और किया है किसने — आप करे तब होता है
अच्छा है रब अच्छा है — काम अच्छे हैं जो करता है
अपने मन की आप ही जाने — जो चाहे सो करता है

---

१ चीज़ २ रहस्य ३ प्रकृति, क़ुदरत ४ तत्व (पञ्चमहाभूत) ।

सच्चा आप वह सच्चा सब कुछ दुनिया आप सहारा है
ज़ात में अपनी आप रचाया ताना बाना सारा है
उसकी हालत कौन बताये उसका अन्त न सूझेगा
उससे बाहर कोई अगर हो फिर वह उसकी बूझेगा
जो कुछ भी वह करता है मंज़ूर[1] समझ मक़बूल[2] समझ
'नानक' गुरु की रहमत से तू बात यही माक़ूल[3] समझ ।।७।।

जो जानै तिसु सदा सुखु होइ आपि मिलाइ लए प्रभु सोइ ।
ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ।
धंनु धंनु धंनु जनु आइआ जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइआ ।
जन आवन का इहै सुआउ जन कै संगि चिति आवै नाउ ।
आपि मुकतु मुकतु करै संसारु,
नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ।।८।।

जिसने उसको जाना है सुख चैन उसी ने पाया है
आप ख़ुदा ने उस प्यारे को अपने साथ मिलाया है
जिस दिल में भगवान बसे बस जीते जी वह मुक्ती पाये
ऊँचे घर का धनवाला हो इज़्ज़त शान बड़ाई पाये
धन-धन भाग वह आया है लो धन-धन भाग वह आया है
जिसकी बख़्शिश रहमत ने कुल जग को पार लगाया है
नाम ख़ुदा का रौशन करने इस दुनिया में आया है
जिसने उसकी संगत पाई दिल में नाम बसाया है
मुक्त है ख़ुद भी मुक्ती पायें उससे ख़ास और आम सदा
'नानक' उस रब वाले को परनाम सदा परनाम सदा ।।८।।

---

१ स्वीकृत २ पसन्द ३ उचित, शुद्ध ।

सलोकु

पूरा प्रभु आराधिआ
पूरा जा का नाउ ॥
नानक पूरा पाइआ
पूरे के गुन गाउ ॥ १ ॥

'कामिल'[1] रब का नाम है उसको सीस झुकाऊँ
'नानक' 'कामिल' मिल गया 'कामिल' के गुन गाऊँ

असटपदी २४

पूरे गुर का सुनि उपदेसु पारब्रहमु निकटि करि पेखु ।
सासि सासि सिमरहु गोबिंद मन अंतर की उतरै चिंद ।
आस अनित तिआगहु तरंग संत जना की धूरि मन मंग ।
आपु छोडि बेनती करहु साध संगि अगनि सागरु तरहु ।
हरि धन के भरि लेहु भंडार नानक गुर पूरे नमसकार ॥१॥

कामिल गुरु की बात सुनो उपदेश वह तुमसे कहता है
पाक प्रभू परमेश्वर हरदम पास तुम्हारे रहता है
हरदम रब को याद करो हक़ नाम से दिल मसरूर[2] करो
मन की चिन्ता दूर करो यूँ मन की चिन्ता दूर करो
मौजें तेज़ हवस[3] की छोड़ो करती हैं दिलगीर[4] यही
सन्तों के क़दमों की माँगो धूल कि है अकसीर[5] यही
रब से अपनी हाजत[6] माँगो दूर अपना पिन्दार[7] करो
साधों की संगत में तैरो आग का दरया पार करो
ले लेकर रूहानी[8] दौलत माल ख़ज़ाने भरते जाओ
'नानक' कामिल गुरु को तुम परनाम हमेशा करते जाओ ॥१॥

खेम कुसल सहज आनंद साध संगि भजु परमानंद ।
नरक निवारि उधारहु जीउ गुन गोबिंद अंम्रित रसु पीउ ।

---

१ पूर्ण २ प्रफुल्लित ३ लालसा ४ दुखित ५ महौषध ६ कामना
७ अहंकार ८ आत्मिक ।

चिति चितवहु नाराइण एक एक रूप जा के रंग अनेक ।
गोपाल दामोदर दीन दइआल दुख भंजन पूरन किरपाल ।
सिमरि सिमरि नामु बारंबार नानक जीअ का इहै अधार ॥२॥

चैन करो तुम ऐश मनाओ सुख पाओ आनन्द रहो
सन्तों की संगत में रब का नाम जपो ख़ुरसंद[१] रहो
अमरित रस है हम्द[२] ख़ुदा का यह अमरित तुम पीते जाओ
मुक्ती पाये रूह[३] तुम्हारी दोज़ख़ के नज़दीक न जाओ
दिल से उसको याद करो नारायन एक तुम्हारा है
रूप है उसका एक फ़क़त[४] जो रंगारंग पसारा[५] है
उसकी मेहर ग़रीबों पर दामोदर वह गोपाल है वह
सब के दुख वह दूर करे रहमत[६] में ऐन कमाल है वह
सुमरन कर लो सुमरन कर लो नाम जपो हर बार यही
जी का है आधार यह 'नानक' जी का है आधार यही ॥२॥

उतम सलोक साध के बचन अमुलीक लाल एहि रतन ।
सुनत कमावत होत उधार आपि तरै लोकह निसतार ।
सफल जीवनु सफलु ता का संगु जा कै मनि लागा हरि रंगु ।
जै जै सबदु अनाहदु वाजै सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ।
प्रगटे गुपाल महांत कै माथे नानक उधरे तिन कै साथे ॥३॥

पाक श्लोकों जैसे मन्तर तू साधों के बोल समझ
बेशबहा[७] ये हीरे हैं तू लाल उन्हें अनमोल समझ
सुन-सुन कर जो लाये अमल में आख़िर मुक्ती पायेगा
पार वह ख़ुद भी जायेगा औरों को पार लगायेगा
अच्छा उसका जीना है और अच्छी उसकी संगत है
जो यकरंग हो ऐसा जिसके मन पर रब की रंगत है
जै जै की आवाज़ हो ग़ैबी[८] नग़मे[९] सुनता जाये वह
सुन सुन कर ख़ुश हो हो कर उस दाता के गुन गाये वह
ज़ाहिर जिसके माथे रब का नूरानी चमकारा हो
उसका साथी हो जो 'नानक' फिर तेरा छुटकारा हो ॥३॥

---

१ ख़ुश २ स्तुति ३ आत्मा ४ एक मात्र ५ फैलाव ६ दया ७ अमूल्य
८ दिव्य ९ मधुर संगीत ।

सरनि जोगु सुनि सरनी आए करि किरपा प्रभ आप मिलाए ।
मिटि गए बैर भए सभ रेन अंम्रित नामु साध संगि लैन ।
सुप्रसंन भए गुरदेव पूरन होई सेवक की सेव ।
आल जंजाल बिकार ते रहते राम नाम सुनि रसना कहते ।
करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी नानक निबरी खेप हमारी ।।४।।

सुन कर पुश्तीबान[1] ख़ुदा को पुश्तीबान बनाया है
उसने फ़ज़्ल[2] किया है ऐसा अपने साथ मिलाया है
बैर अदावत झूठे सारे खाक में होकर जीता है
संतों की संगत में रहकर नाम का अमरित पीता है
देख के मेरी सेवा को गुरुदेव मेरे ख़ुरसन्द[3] हुए
सेवा मेरी पूरी उतरी सेवक को आनन्द हुए
नाम प्रभू का सुनने से और नाम प्रभू का कहने से
झूठे सब जंजालों से और पाप कपट में रहने से
अपने गुरु की रहमत से यह बख़्शिश ख़ास ज़रूर हुई
'नानक' खेप[4] हमारी सारी पहुँची और मंज़ूर हुई ।।४।।

प्रभ की उसतति करहु संत मीत सावधान एकागर चीत ।
सुखमनी सहज गोबिंद गुन नाम जिसु मनि बसै सु होत निधान ।
सरब इछा ता की पूरन होइ प्रधान पुरखु प्रगटु सभ लोइ ।
सभ ते ऊच पाए असथानु बहुरि न होवै आवन जानु ।
हरि धनु खाटि चलै जनु सोइ नानक जिसहि परापति होइ ।।५।।

आओ प्यारे सन्तों आओ मालिक के गुन गायें हम
एक प्रभू को याद करें और उस पर ध्यान जमायें हम
'सुखमनी' जिसमें धीरज हम्द और नाम ख़ुदा का आया है
जिसके मन में बस जाये गञ्जीना[5] उसने पाया है
जो जो मन की ख़्वाहिश है वह हासिल करता जाता है
बनता है परधान वही और जग में शोहरत[6] पाता है

---

१ आश्रयदाता, सहारा २ कृपा ३ प्रसन्न ४ करनी ५ ख़ज़ाना ६ कीर्ति, प्रसिद्धि ।

सब से आली सब से ऊँचा ऐसा रुतबा पाता है
जिसमें क़ायम रहता है वह आता और न जाता है
'सुखमनी' ऐसा निअ़मत है जो 'नानक' उसको पायेगा
दौलत रब के नाम की लेकर वह दुनिया से जायेगा ।।५।।

खेम सांति रिधि नव निधि बुधि गिआनु सरब तह सिधि ।
बिदिआ तपु जोगु प्रभ धिआनु गिआनु स्रेसट ऊतम इसनानु ।
चारि पदारथ कमल प्रगास सभ कै मधि सगल ते उदास ।
सुंदरु चतुरु तत का बेता समदरसी एक द्रिसटेता ।
इह फल तिसु जन कै मुखि भने गुर नानक नाम बचन मनि सुने ।।६।।

उसको सुख आनन्द मिले नौ गञ्जीने[1] भी दौलत भी
अक़्ल[2] बढ़े और इल्म[3] बढ़े वह पाये ज़ोर करामत[4] भी
ज्ञान मिले और ज़ुहद[5] कमाये योग भी रब का ध्यान भी हो
हासिल हो इरफ़ान भी उसको पाकीज़ा स्नान भी हो
चार मुरादें[6] हासिल हों और नूर से मन भरपूर रहे
सब के अन्दर रह कर भी वह लाग-लपट से दूर रहे
हुस्न मिले चतुराई भी और असल हक़ीक़त जाने वह
सबको एक नज़र से देखे सब को यकसा माने वह
'सुखमनी' दिल से पढ़ने वाला यह सारे फल पायेगा
गुरु 'नानक' से नाम की महिमा सुन कर ध्यान जमायेगा ।।६।।

इहु निधानु जपै मनि कोइ सभ जुग महि ता की गति होइ ।
गुण गोबिंद नाम धुनि बाणी सिम्रिति सासत्र बेद बखाणी ।
सगल मतांत केवल हरिनाम गोबिंद भगत कै मनि बिस्राम ।
कोटि अप्राध साध संगि मिटै संत क्रिपा ते जम ते छुटै ।
जा कै मसतकि करम प्रभि पाए साध सरणि नानक ते आए ।।७।।

'सुखमनी' एक खज़ाना है जो हाथ में उसको लायेगा
जिस जुग में भी जायेगा संसार से मुक्ती पायेगा

---

१ नौ निधि २ बुद्धि ३ ज्ञान ४ चमत्कार ५ संयम, तप ६ अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष ।

उसमें नाम ख़ुदा का है तुम हम्द उसी का गाओगे
शास्त्रों स्मृतियों वेदों सब में नाम यह पाओगे
असल हक़ीक़त नाम है रब का हर मज़हब यह कहता है
सब भक्तों के मन के अन्दर नाम ख़ुदा का रहता है
पाप करोड़ों लाखों हों सब साध की संगत दूर हटाये
सन्तों की जब किरपा होगी मौत से भी छुटकारा पाये
भाग हैं जिनके माथे पर वह ख़ुशक़िस्मत कहलाते हैं
साधों की किरपा से 'नानक' उनके साये में आते हैं ।।७।।

जिसु मनि बसै सुनै लाइ प्रीति तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ।
जनम मरन ता का दूखु निवारै दुलभ देह ततकाल उधारै ।
निरमल सोभा अंम्रित ता की बानी,
एकु नामु मन माहि समानी
दूख रोग बिनसे भै भरम साध नाम निरमल ता के करम ।
सभ ते ऊच ता की सोभा बनी नानक इह गुणि नामु सुखमनी ।।८।।

प्रेम से उसको सुन-सुन कर जो मन उससे आबाद करे
मन में रब को याद करे वह मन में रब को याद करे
मरने का ग़म दूर हो उससे जीने का दुख जायेगा
यह जीवन नायाब[1] है उसका पल में मुक्ती पायेगा
जिनके मन में एक प्रभू का प्यारा नाम समाता है
उसकी बोली अमरित है वह ख़ालिस शोभा पाता है
दुख जाये सब रोग मिटें शक दूर हों ख़ुद बेबाक[2] रहे
उसका साधू नाम पड़े हर काम में साफ़ और पाक रहे
सब से ऊँची शान है उसकी रुतबा उसका आली है
'सुखमनी' उसका नाम है 'नानक' यह ऐसी गुनवाली है ।।८।।

---

१ दुर्लभ, अलभ्य २ निर्भय ।

अरदास

१ ओं वाहिगुरू जी की फ़तह ॥ श्री भगौती जी सहाइ ॥

वार श्री भगौती जी की पातशाही १० । प्रथम भगौती सिमरि कै गुरु नानक लई धिआइ । फिर अंगद गुरु ते अमरदासु रामदासै होईं सहाइ । अरजन हरगोबिंद नो सिमरौ श्री हरिराइ । श्री हरिकिशन धिआईऐ जिस डिठे सभि दुखि जाइ । तेगबहादर सिमरिऐ घर नउ निधि आवै धाइ । सभ थाईं होइ सहाइ । दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिंदसिंह जी महाराज ! सब थाईं होइ सहाइ । दशहों सत्गुरुओं के ज्योतिस्वरूप श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के पाठ व दर्शन का ध्यान धर कर बोलो जी वाहिगुरू ! पाँच प्यारों, चार साहिबज़ादे (गुरुकुमारों), चालीस मुक्तों, हठी-जपी-तपियों, जिन्होंने नाम जपा, बाँट छका, देग चलाई, तेग़ वहाई, देख के अणडीठ किया, उन प्रेमी गुरुमुख (सत्यवादियों) प्यारों की पवित्र कमाई का ध्यान धर के खालसा जी ! बोलो जी वाहिगुरू !

जिन सिंह सिंहनियों ने धर्म पर बलिदान दिये, अंग-अंग कटवाए, खोपरियाँ उतरवाईं, चर्खियों पर चढ़ाए गये, आरियों से तन चिरवाए, धर्म नहीं छोड़ा, सिख धर्म को केशों तथा प्राणों सहित पालन किया, उनकी कृत्य कमाई का ध्यान धर के खालसा जी ! बोलो जी वाहिगुरू !

चारों तखतों, समूह गुरुद्वारों का ध्यान धर के बोलो जी वाहिगुरू !

प्रथमे सर्व खालसा जी की अरदास है, सर्व खालसा जी को वाहिगुरू, वाहिगुरू, वाहिगुरू चित आवै, चित में आने से सर्व सुख हो । जहां-जहां खालसा जी साहिब, तहां-तहां रक्षा रिआयत, देग-तेग़ फ़तह, विरद की लाज, पन्थ की जीत, श्री साहिब जी सहाय, खालसा जी का बोलबाला, बोलो जी वाहिगुरू !!!

सिखों का मन नम्र, मति ऊँची, मति का रक्षक स्वयं वाहिगुरू । हे निःमानों के सम्मान, निःत्राणों के त्राणी, निःओटों की ओट, निराश्रयों के आश्रय, सच्चे पिता वाहिगुरू ! आप की सेवा विखे.................................. की अरदास है ।

अक्षर, लग, मात्र, भूल, चूक क्षमा करनी, सर्व के कारज सिद्ध करने । उन प्रेमियों का मिलाप कराओ जिनके मिलने से चित में तेरा नाम वसे ।

नानक नाम चढ़दी कला । तेरे भाणे सर्वत्त का भला ॥

वाहिगुरू जी का ख़ालसा । श्री वाहिगुरू जी की फ़तह ॥

नोट—यह अरदास पंजाबी भाषा में है । हिन्दी पाठक भी इसका पाठ समझकर अरदास कर सकें, इसलिए भाषा में थोड़ा परिवर्तन करते हुए पंजाबी छाप को भी साथ-साथ क़ायम रखा गया है । —लिप्यन्तरणकार

भुवन वाणी ट्रस्ट,

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८ चौपटियाँ रोड, लखनऊ–३

यह ग्रन्थ सम्पूर्ण हो चुके हैं (सानुवाद देवनागरी लिप्यन्तरण):—

१—(बंगला) कृत्तिवासरामायण-पाँचकांड नागरी लिप्य०, अवधी पद्यानुवाद मूल्य २५·००
२—(बंगला) कृत्तिवास रामायण लंका काण्ड ,, पद्यानुवाद ,, १५·००
३—(मलयाळम) ऍळुत्तच्छन्कृत महाभारत हिन्दी अनु० नागरी लिपि० ,, ६०·००
४—(,,) ,, अध्यात्मरामायण, उत्तररामायण ,, ,, ४०·००
५—(कश्मीरी) रामावतारचरित—प्रकाशराम कुर्यग्रामी कृत ,, ,, २०·००
६—(,,) लल्द्यद—हिन्दी, संस्कृत अनुवाद सहित ,, १०·००
७—बाइबिल सार (सालोमन के नीतिवचन) संस्कृत उद्धरणयुक्त ,, १·००
८—(उर्दू) श्री 'रुस्वा' कृत शरीफ़ज़ाद: (आर्यपुत्र) नागरी लिपि में ,, ८·००
९—(गुरमुखी) श्रीगुरुग्रन्थ साहिब सानुवाद नागरी लिपि में प्रथम सैंची ,, ४०·००
१०—(,,) ,, ,, ,, ,, ,, द्वितीय ,, ,, ५०·००
११—(,,) जपुजी तथा सुखमनी साहब—ख्वाज: दिलमुहम्मद पद्यानु० मूल्य ८·००
१२—(,,) सुखमनी साहिब मूल गुटका ,, ४·००
१३—(फ़ारसी) सिर्रे अक्बर (दाराशिकोह कृत ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तरीय, श्वेताश्वतर) की फ़ारसीव्याख्या हिन्दी में— ,, २०·००
१४—(अरबी) रियाज़ुस्सालिहीन जादे सफ़र (इस्लामी हदीस) प्र० खण्ड ,, १५·००
१५—(तमिळ) तिरुक्कुरळ् नागरी में मूल, हिन्दी गद्य-पद्यानुवाद— ,, २०·००
१६— ,, कम्ब रामायण बालकाण्ड ४०·०० अयोध्या-अरण्य ,, ७०·००
१७—(मराठी) श्रीराम-विजय—श्रीधर कृत, हिन्दी अनुवाद सहित ,, ६०·००
१८—(नेपाली) रामायण भानुभक्त कृत सानुवाद ,, २०·००
१९—(तेलुगु) मोल्ल रामायण सानुवाद लिप्यन्तरण ,, २०·००
२०—(,,) रंगनाथ रामायण ,, ,, ,, ६०·००
२१—(कन्नड) रामचन्द्र चरित पुराणं—जैनसाहित्य (अभिनव पम्प नागचन्द्रकृत) ,, ४०·००
२२—(राजस्थानी) रुक्मिणीमंगल—पदम भगत कृत ,, १५·००
२३—(गुजराती) गिरधर रामायण हिन्दी अनुवाद सहित (नागरी लिपि.) ,, ६०·००
२४—(रामचरितमानस) ओड़िआ लिपि में लिप्यन्तरण एवं ओड़िआ गद्य-पद्यानुवाद ,, ६०·००
२५—(सिंधी) स्वामी, शाह, सचल की त्रिवेणी ,, २०·००
२६—(असमिया) माधवकंदली रामायण ,, ६०·००
२७—(ओड़िआ) वैदेहीशबिळास—उपेन्द्र भञ्ज कृत ,, ६०·००
२८—(वाणी सरोवर)—बहुभाषाई त्रैमासिक पत्र—वार्षिक ,, १०·००

ट्रस्ट के अतिरिक्त, सानुवाद देवनागरी-लिप्यन्तरण के अन्य कार्य, जो अन्यत्र हो चुके हैं:—

२९—(अरबी) क़ुरआन (मूल आयतें अरबी व देवनागरी लिपि में, अनुवाद, टिप्पणी सहित)—इस्लामी धर्माचार्यों द्वारा प्रतिपादित— मूल्य ४६·००
३०—(,,) क़ौरानिक कोश क़ुर्आन के पठनक्रम से शब्दार्थ ,, १०·००

प्रकाशित हो रहे अन्य सानुवाद देवनागरी-लिप्यन्तरण ग्रन्थ (यन्त्रस्थ):—

१—(तमिळ) कम्ब रामायण २—(तेलुगु) पोतन्न भागवतमु
३—(गुरमुखी) श्रीगुरुग्रंथ साहब सैंची ३, ४ ४—(बंगला) कृत्तिवास उत्तरकाण्ड
५—(हिब्रू) बाइबिल ओल्ड टेस्टामेण्ट हिन्दी अनु० सहित हिब्रू तथा अंग्रेज़ी मूल नागरी
६—(ग्रीक) ,, निउ ,, ,, ,, ,, ग्रीक ,, ,, लिपि में
७—(मराठी) श्रीहरि-विजय—श्रीधर कृत ८—(उर्दू) गुज़श्त: लखनऊ—मौ० शरर
९— ,, संत एकनाथ भावार्थ रामायण १०—(गुजराती) प्रेमानन्द रसामृत (ओखा)
११—(कोंकणी) ख्रीस्त पुराण १२—(फ़ारसी) दाराशिकोहकृत ५० उपनिषद (द्वि० खण्ड)
१३—(कम्पोचियन) रेआमकेर (रामायण) १४—(फ़ारसी) मुल्ला मसीही रामायण
१५—(अरबी हदीस)—(जादे सफ़र) द्वि० खण्ड १६—(अरबी) बुख़ारी शरीफ़
१७—रामचरितमानस (तुलसी)—संस्कृत पद्यानुवाद सहित १८— ,, तफ़सीर माजिदी

वाणी प्रेस, लखनऊ–३ में मुद्रित एवं भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ–३ द्वारा प्रकाशित।
—द्वारा नन्दकुमार अवस्थी